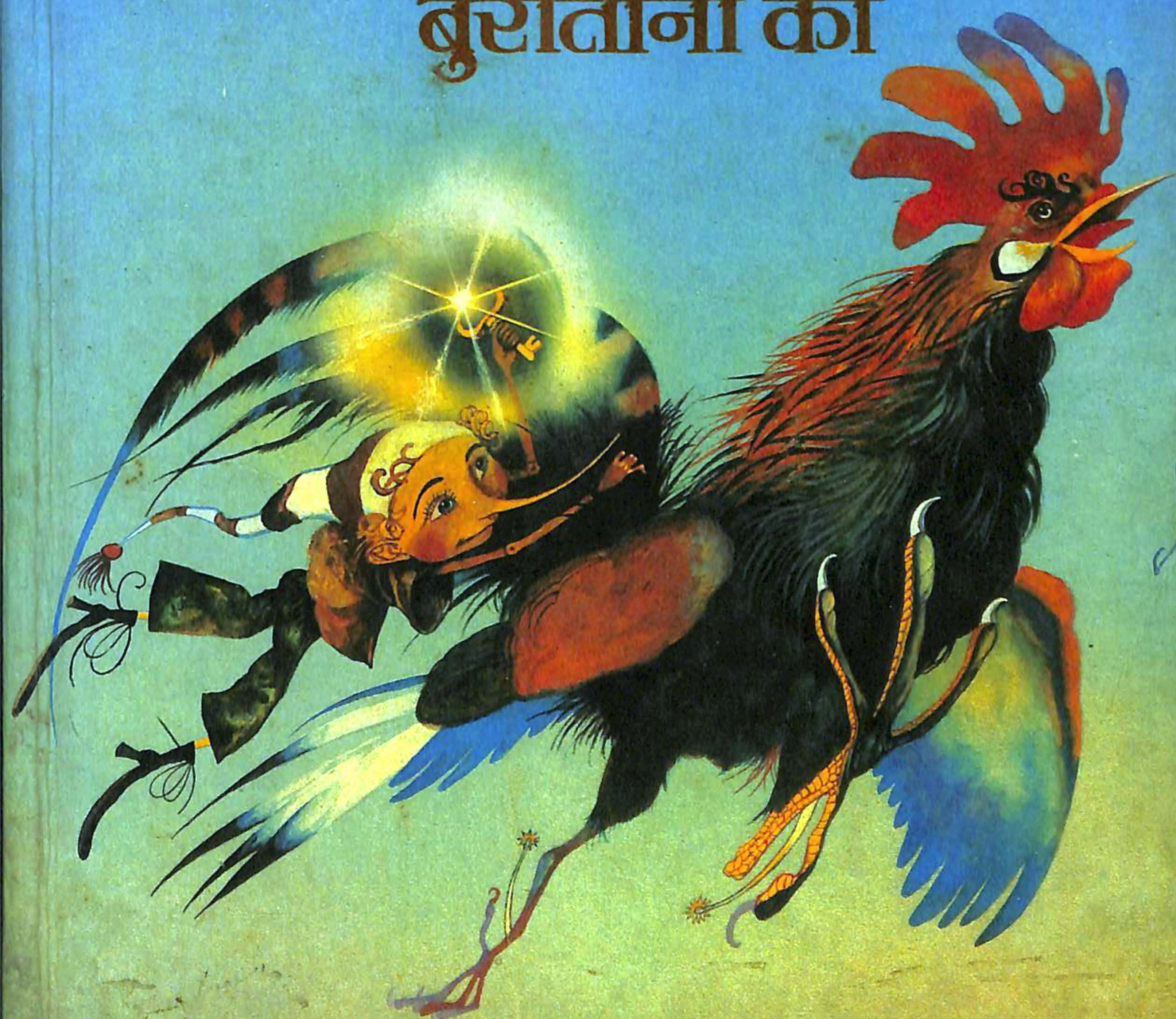
अलेक्सेई तोलस्तोय

सोने की चाबी क़िस्सा बुरातीनो का







अलेक्सेई तोलस्तोय

सोने की चाबी
क़िस्सा बुरातीनो का

चित्रकार : अलेक्सान्द्र कोश्किन



अनुवादक: संगमलाल मालवीय

चित्रकार: आ० कोश्किन

А. Толстой
ЗОЛОТОЙ КЛЮЧИК ИЛИ ПРИКЛЮЧЕНИЯ БУРАТИНО
На хинди

Tolstoy A.
THE GOLDEN KEY OR THE ADVENTURES OF BURATINO
In Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

ISBN 5-05-002111-1

समर्पण – जीवन-संगिनी को

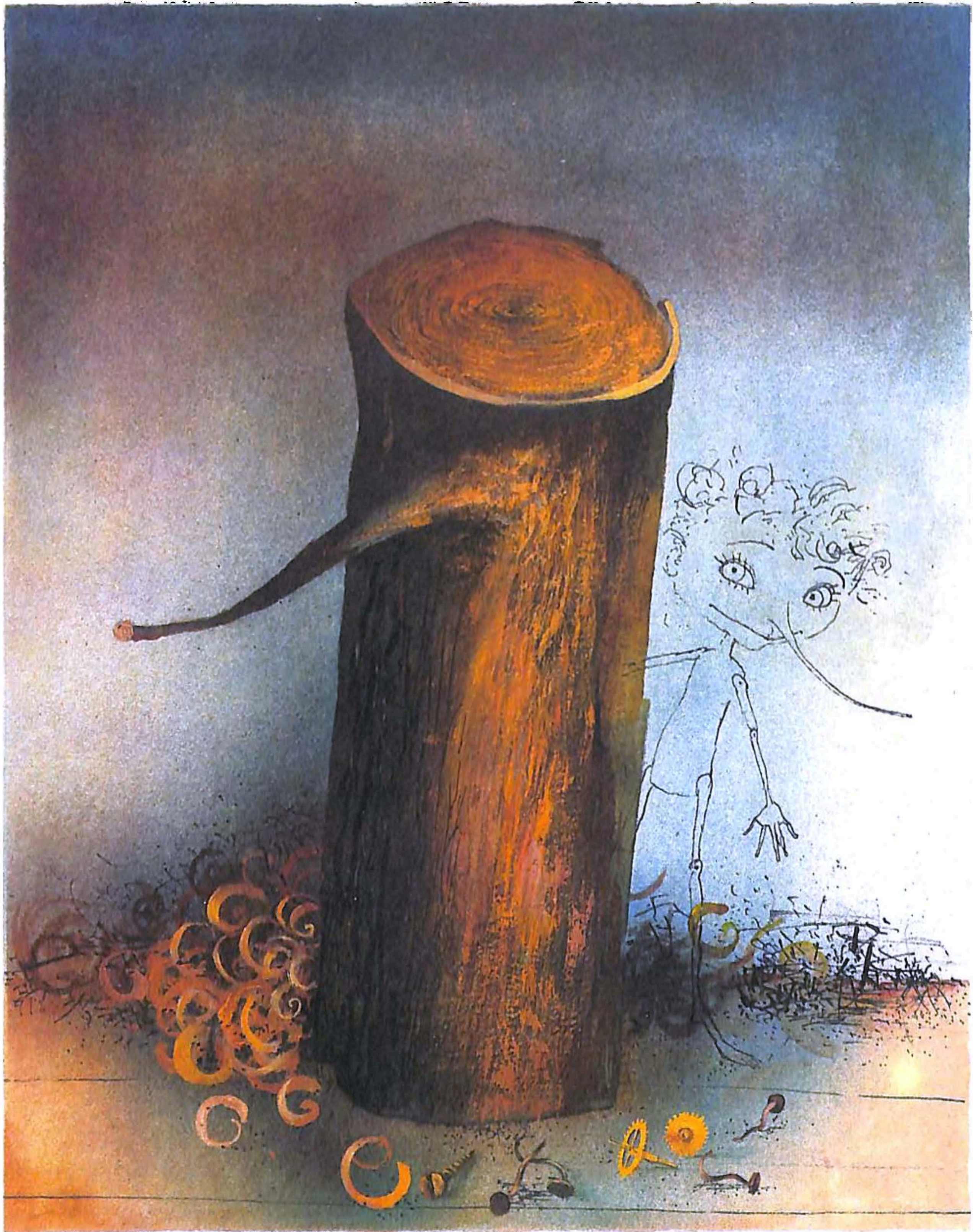
नन्हे पाठकों से

वहुत पहले की वात है, जव मैं छोटा था, मैंने एक किताव पढ़ी थी। उसका नाम था "पिनोक्कियो – एक कठपुतले की कहानी" (इतालवी भाषा में कठपुतले को बुरातीनो कहते हैं)।

मैं अपने मित्रों को बुरातीनो के मज़ेदार कारनामे अक्सर सुनाया करता था। किताब खो गयी थी, इसलिए मैं कहानी सुनाते समय हर वार ऐसे कारनामे भी सुना जाता था, जो किताब में बिलकुल ही नहीं थे।

अब इतने वर्ष बाद मुझे अपने पुराने मित्र बुरातीनो की फिर से याद आ गयी और मैंने इस कठपुतले का असाधारण किस्सा आपको भी सुनाने का निश्चय किया।

अलेक्सेई तोलस्तोय



बढ़ई जूज़ेपे को लकड़ी का एक कुन्दा मिला, जो आदमी की तरह मिनमिनाता था

काफ़ी पहले भूमध्यसागर के तट पर एक नगर में जूज़ेपे नाम का एक बूढ़ा बढ़ई रहा करता था।

एक बार कहीं से उसे लकड़ी का एक कुन्दा मिल गया – एक मामूली-सा कुन्दा था।

"काम की चीज़ है," जूज़ेपे ख़ुद से बोला, "मेज़ के पाये जैसी कोई चीज़ इससे बनायी जा सकती है।"

जूज़ेपे ने आंखों पर धागों से बंधी ऐनक चढ़ायी, क्योंकि ऐनक भी काफ़ी पुरानी थी और कुन्दा पकड़कर उसे कुल्हाड़ी से छीलने लगा।

अभी उसने कुन्दे को छीलना शुरू ही किया था कि किसी के मिनमिनाने की आवाज़ सुनायी दी:

"ज़रा सम्भलके!"

जूज़ेपे ने ऐनक नाक की नोक पर खिसकायी, फिर बढ़ईख़ाने में चारों तरफ़ देखने लगा – कहीं कोई नहीं था...

उसने ठीहे के नीचे नज़र दौड़ायी – वहां कोई नहीं था...

लकड़ी की छीलनवाली टोकरी में देखा – वहां कोई नहीं था...

उसने दरवाज़े से बाहर झांककर देखा – सड़क पर भी कोई नहीं था...

"तो क्या यह कोई जादुई करिश्मा था?" जूज़ेपे ने सोचा, "आख़िर मिनमिनाया कौन था?"

उसने फिर से कुल्हाड़ी उठाकर लकड़ी के कुन्दे पर चलाना शुरू ही किया था कि...

"अरे-अरे, दर्द हो रहा है!" महीन आवाज़ में कोई ज़ोर से चीखा।

इस बार जूज़ेपे सचमुच डर गया, उसकी ऐनक तक धुंधली पड़ गयी। उसने कमरे के सभी कोने छान मारे, अलावघर में भी घुस गया और गर्दन मोड़कर काफ़ी देर तक चिमनी के भीतर झांकता रहा।

कोई नहीं है...

"कहीं कुछ उलटा-सीधा तो नहीं पी लिया, जो कान बजने लगे?" जूज़ेपे ने मन ही मन सोचा...

नहीं, कोई उलटी-सीधी चीज़ उसने आज नहीं पी है... मन को समझाने के बाद जूज़ेपे ने रंदा उठाया, और हथौड़े से ठोककर उसे दुरुस्त किया ताकि रंदे की धार बिलकुल ठीक-



ठीक निकले – न ज़्यादा, न कम। उसने कुन्दे को ठीहे पर जमाया और जैसे ही उसे छीलना शुरू किया...

"हाय-हाय, आप मुझे नोच क्यों रहे हैं?" बड़े ज़ोर से कोई मिनमिनाया...

जूज़ेपे के हाथों से रंदा छूट गया। पीछे खिसकता-खिसकता वह फ़र्श पर बैठ गया। अब वह समझ गया कि महीन आवाज़ कुन्दे के भीतर से आ रही है।



जूज़ेपे ने बोलनेवाला कुन्दा अपने मित्र कार्लो को भेंट किया

ठीक इसी समय जूज़ेपे के घर उसका पुराना मित्र, तमाशेवाज़ कार्लो आया, जो किसी ज़माने में छज्जेदार टोप लगाये, सुन्दर-सा पेटीवाला बाजा गले में लटकाये जगह-जगह घूमता-फिरता, गाता-बजाता अपना गुज़ारा किया करता था।

कार्लो अब बूढ़ा और बीमार था। उसका बाजा भी कब का टूट चुका था।

"नमस्ते, जूज़ेपे," कमरे में प्रवेश करते हुए उसने कहा, "फ़र्श पर बैठे क्या कर रहे हो?"

"अरे, एक छोटा-सा स्क्रू... पता नहीं कहां खो गया... ख़ैर, जाने दो!" जूज़ेपे ने जवाब दिया और कुन्दे को कनखियों से देखा, "तुम्हारा क्या हाल है, दोस्त?"

"बुरा हाल है," कार्लो ने कहा, "एक ही चिन्ता है रोटी का जुगाड़ कैसे किया जाये... तुम ही कुछ मदद कर देते, कोई सलाह ही देते..."



"अरे, यह भी कोई मुश्किल बात है," जूज़ेपे ने खुश होकर कहा और मन में सोचा: "इस मुए कुन्दे से अभी छुटकारा पा लेता हूं।"

"इससे आसान क्या है: देख रहे हो ठीहे पर एक बढ़िया कुन्दा रखा है। यह कुन्दा उठा लो और अपने घर ले जाओ..."

"अरे बाबा," कार्लो ने उदास होकर कहा, "इससे क्या होगा? कुन्दे को तो घर लेता जाऊंगा, पर मेरे यहां कोठरी में अलावघर भी नहीं है।"

"मैं काम की बात कह रहा हूं, कार्लो... चाकू लेकर इस कुन्दे से एक कठपुतला तराश लो, उसे कुछ नाचना-गाना सिखा दो और घर-घर ले जाकर तमाशा दिखाओ। बस, समझो, रोटी-पानी का जुगाड़ हो गया।"

इसी समय बढ़ई के ठीहे से जहां कुन्दा रखा था, खुशी से चहकती महीन आवाज़ सुनायी दी:

"वाह! वाह! क्या बात सोची है!"

जूज़ेपे डर के मारे फिर कांपने लगा और कार्लो आंखें फाड़-फाड़कर चारों तरफ़ देखने लगा – यह आवाज़ किधर से आयी?



"ठीक है, जूज़ेपे, तुम्हारी सलाह के लिए धन्यवाद। लाओ तुम्हारा यह कुन्दा ही शायद कुछ काम बना दे।"

यह सुनते ही जूज़ेपे ने कुन्दा झट से उठाया और अपने दोस्त को थमा दिया। कुन्दा कार्लो के सिर से जा टकराया – या तो जूज़ेपे ने सावधानी से नहीं थमाया था या कुन्दा ख़ुद उछल गया था।

"तो यही है तुम्हारा तोहफ़ा!" कार्लो क्रोध से चीख़ उठा।

"माफ़ करना, दोस्त, मैंने तुम्हें नहीं मारा।"

"तो तुम्हारा मतलब है कि मैंने ख़ुद यह कुंदा अपने सिर पर मार लिया?"

"नहीं, दोस्त, ज़रूर यह कुंदा ही तुम्हारे सिर से जा टकराया होगा।"

"झूठ बोलते हो, तुमने ही मुझे मारा है..."

"नहीं, मैंने नहीं..."

"इतना तो मैं जानता था कि तू पियक्कड़ है, पर तू तो झूठा भी निकला!"

"अच्छा, गालियां देता है!" जूज़ेपे ने चीख़कर कहा, "इधर आ तो!"

"तू आ इधर, ज़रा तेरी नाक नोचूं!"

दोनों बूढ़े मुंह फुलाये आपस में भिड़ गये। कार्लो ने जूज़ेपे की नाक नोच ली। जबकि जूज़ेपे ने कार्लो की कनपटी के पास उगे सफ़ेद बालों को झपट लिया।

वे एक दूसरे को ज़ोर-ज़ोर से मुक्के मारने लगे। उधर ठीहे पर से तीखी आवाज़ में कोई उन्हें जोश दिला रहा था:

"मारो, मारो, और ज़ोर से!"

अन्त में दोनों बूढ़े थक गये, उनका दम फूलने लगा। जूज़ेपे बोला:

"आओ, गुस्सा थूक दें..."

कार्लो ने जवाब दिया:

"चलो, ठीक है..."

बूढ़ों ने एक दूसरे के गाल चूमे। कार्लो ने लकड़ी का कुन्दा उठाया और अपने घर की तरफ़ चल दिया।

कार्लो ने कठपुतला तराशा और नाम रखा बुरातीनो

कार्लो सीढ़ी के नीचे एक कोठरी में रहता था। कोठरी में कुछ न था, बस एक सुन्दर सा अलावघर था – दरवाज़े के सामने दीवार पर।

लेकिन ख़ूबसूरत अलावघर, अलावघर में जलती आग, उस पर रखी खौलते पानी की पतीली – यह सब सचमुच के न थे, इन्हें पुराने कैनवस के एक टुकड़े पर चित्रित किया गया था।

कार्लो अपनी कोठरी में पहुंचा, लंगड़ी मेज़ के पास कुर्सी पर बैठ गया और लकड़ी के कुन्दे को तरह-तरह से घुमा-घुमाकर चाकू से एक कठपुतला तराशने लगा। तराशते हुए वह सोचता जा रहा था:

"इसका नाम क्या रखा जाये? बुरातीनो नाम रख देता हूं इसका। यह नाम मेरे लिए शुभ रहेगा। कभी एक ऐसे परिवार से मैं परिचित था, जिसमें सभी का नाम बुरातीनो था। पिता – बुरातीनो, माता – बुरातीनो, बच्चे भी बुरातीनो... सभी हंसी-ख़ुशी, मौज-मस्ती से रहते थे..."

सबसे पहले उसने नक्काशी करके बाल बनाये, फिर माथा, उसके बाद आंखें...

अचानक आंखें ख़ुद-ब-ख़ुद खुल गई और उसकी तरफ़ एकटक देखने लगीं...

कार्लो ने यह प्रगट नहीं किया कि वह डर गया है, सिर्फ़ दुलार से बोला:

"लकड़ी की आंखो, मुझे इस तरह घूर क्यों रही हो?"

लेकिन कठपुतला ख़ामोश रहा, शायद इसलिये कि उसका मुंह अभी बना न था। कार्लो ने कठपुतले के गाल बनाये, फिर उसकी नाक बनायी, बिलकुल साधारण सी नाक...

अचानक यह नाक अपने आप लम्बी होने लगी और इस हद तक लम्बी और पैनी हो गई कि कार्लो झुंझला पड़ा:

"नहीं, अच्छी नहीं है इतनी लम्बी नाक!"

उसने नाक की नोक को तराशना चाहा। लेकिन यह उसके वश में न था!

नाक कभी चक्कर खाती, कभी सफ़ाई से घूम जाती और अन्त में जैसी कि तैसी रह गयी – बेहद लम्बी और पैनी।

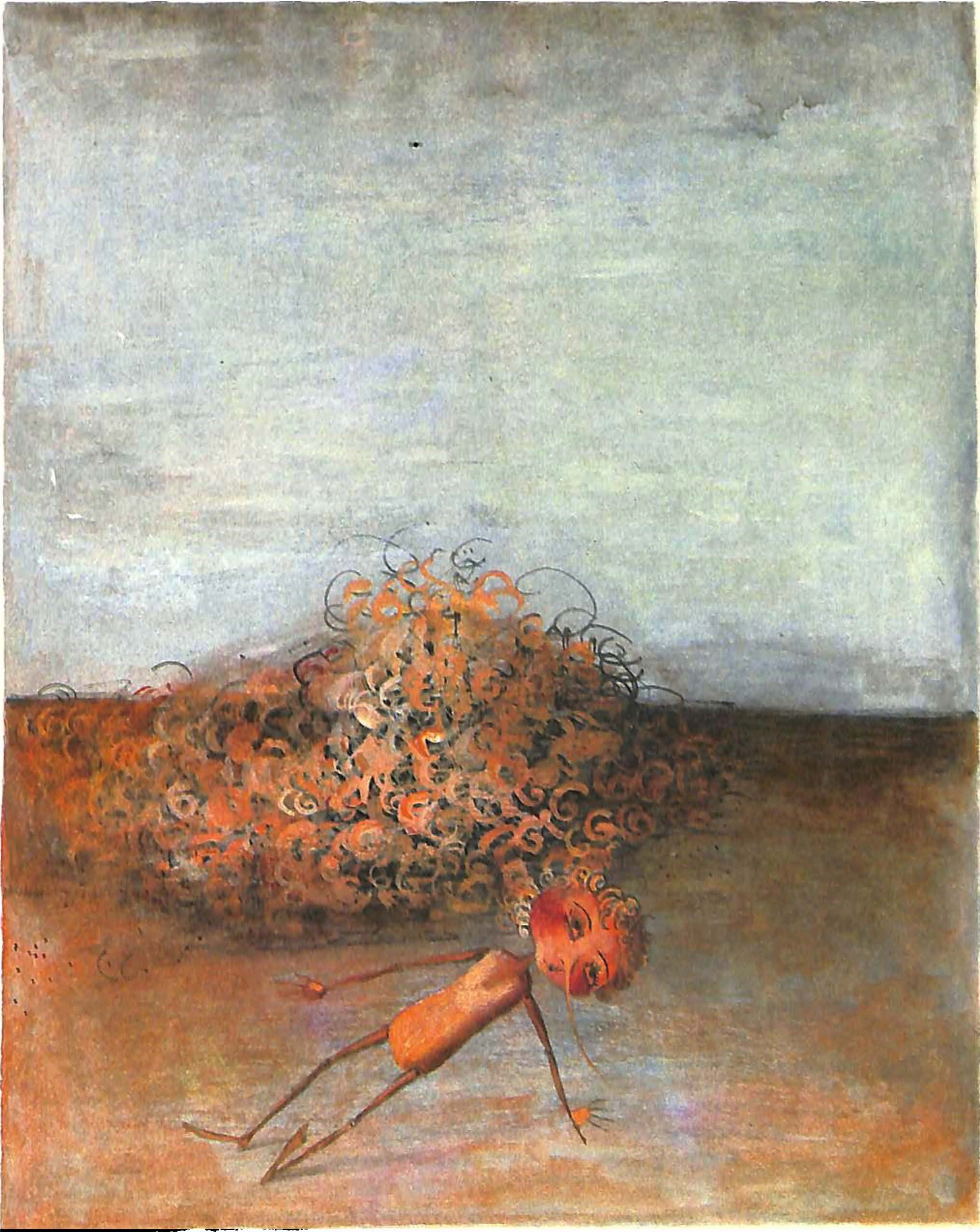
कार्लो ने मुंह बनाना शुरू किया। उसने होंठ तराशे ही थे कि कठपुतले का मुंह एकाएक खुल गया:

"ही-ही-ही, हा-हा-हा!"

और भीतर से छोटी सी लाल-लाल जीभ चिढ़ाते हुए बाहर की तरफ़ लपलपायी।

कार्लो ने इन शरारतों की तरफ़ ध्यान न देते हुए रंदा फेरना, नक्काशी करना और





गढ़ना जारी रखा। कठपुतले की ठुड्डी, गला, कन्धे, धड़ और हाथ बनकर तैयार हो गये।

अभी उसने आख़िरी उंगली को तराशना ख़त्म ही किया था कि बुरातीनो ने कार्लो की गंजी खोपड़ी पर मुक्के मारना, नोचना और गुदगुदाना शुरू कर दिया।

"सुनो," कार्लो ने ज़रा सख़्ती से कहा, "मैंने अभी तुम्हें गढ़ना ख़त्म भी नहीं किया कि तुम शैतानी करने लगे... आगे क्या होगा?"

और उसने सख़्ती से बुरातीनो को देखा। बुरातीनो चूहे की तरह अपनी गोल-गोल आंखों से पापा कार्लो की तरफ़ टुकुर-टुकुर देखने लगा।

कार्लो ने पतली खपच्चियों से उसकी लम्बी-लम्बी टांगें बनायीं और उनमें बड़े-बड़े पैर जोड़ दिये। यह काम ख़त्म करके उसने कठपुतले को ज़मीन पर खड़ा कर दिया ताकि वह चलना-फिरना सीख जाये।

बुरातीनो अपनी पतली-पतली टांगों पर ठुमकता हुआ आगे क़दम रखने लगा। एक क़दम, दो क़दम, फिर सरपट दरवाज़े की ओर बढ़ा, लपककर दहलीज़ पार की – और एकदम सड़क पर आ गया।

कार्लो घबराकर उसका पीछा करने लगा।

"ओ, नन्हे शैतान लौट आ!"

लेकिन वह कहां लौटनेवाला था! बुरातीनो सड़क पर भागने लगा बिलकुल ख़रगोश की तरह। उसके लकड़ी के तलवे पत्थरों पर ठक-ठक, ठक-ठक करते जा रहे थे...

"पकड़ो, पकड़ो इसे!" कार्लो चिल्लाया।

राहगीर भागते हुए बुरातीनो की ओर इशारे करके हंस रहे थे। चौराहे पर तिकोनी टोपी लगाये कड़कदार मूछोंवाला एक भारी-भरकम पुलिसवाला खड़ा था।

भागते कठपुतले को देखकर उसने झट से पैर फैला दिये, जिससे पूरी गली जाम हो गयी। बुरातीनो उसके पैरों के बीच से निकलकर भाग जाना चाहता था, लेकिन पुलिसवाले ने उसकी नाक पकड़ ली और तब तक पकड़े रहा, जब तक कि कार्लो वहां नहीं पहुंच गया।

"ज़रा ठहर तो, अभी तुझे ठीक करता हूं!" हांफते हुए कार्लो ने कहा और बुरातीनो को पकड़कर जैकेट की जेब में डालना चाहा...

बुरातीनो यह क़तई नहीं चाहता था कि ऐसे खुशहाल दिन उसे औंधेमुंह सबके सामने जेब से टांगें निकालकर छटपटाना पड़े। उसने फुर्ती से पलटा खाया, सड़क पर लुढ़क गया और ऐसा बहाना किया जैसे मर गया हो...

"अरे, अरे," पुलिसवाले ने कहा, "लगता है मामला गड़बड़ हो गया!"

भीड़ जमने लगी। लोग ज़मीन पर पड़े हुए बुरातीनो को देखकर सिर हिलाने लगे।

"बेचारा," कुछ ने कहा, "शायद भूख से..."

"कार्लो ने पीट-पीटकर उसकी जान ही ले ली," दूसरों ने कहा। "यह बूढ़ा बाजेवाला

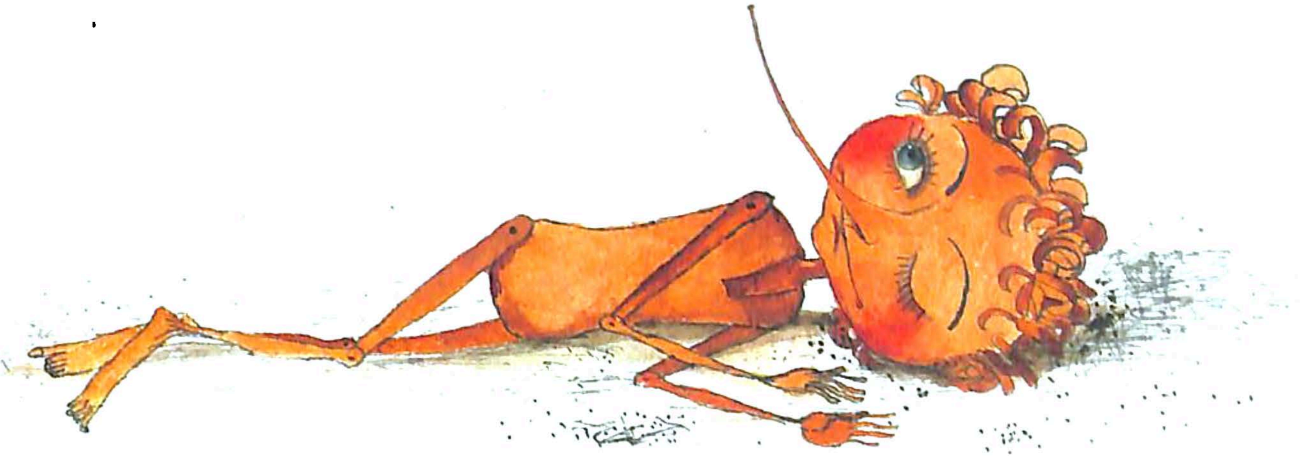
अच्छा इन्सान होने का ढोंग ही करता है, यह धूर्त है, दुष्ट है ..."

यह सुनकर मुच्छड़ पुलिसवाले ने अभागे कार्लो का कालर पकड़ लिया और घसीटते हुए उसे थाने ले गया।

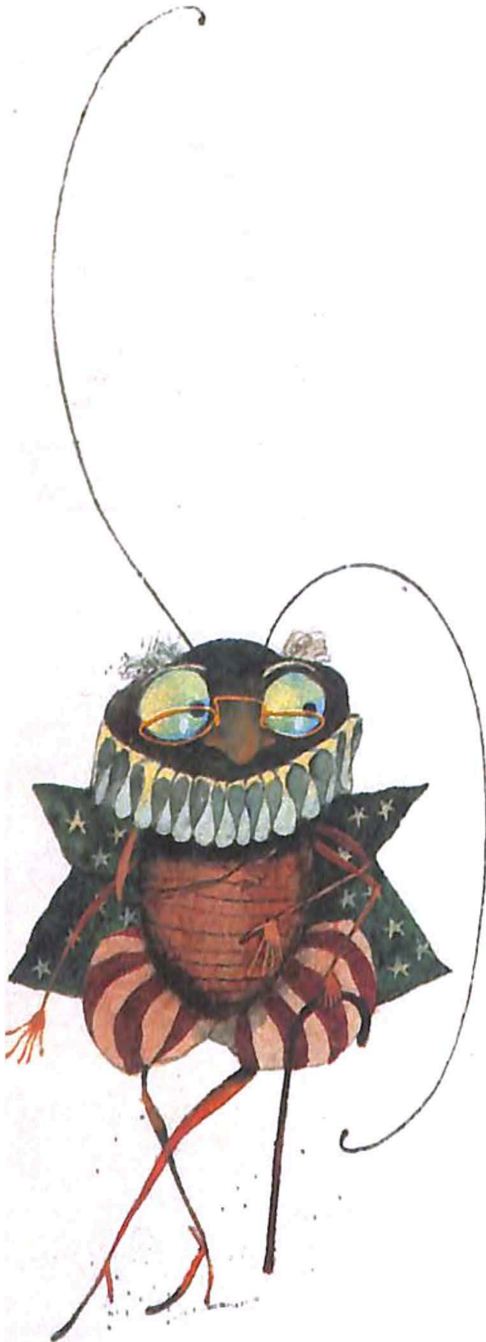
कार्लो गुस्से से पैर पटकता हुआ खुद को कोसने लगा:

"हाय, हाय, मैंने लकड़ी का लड़का बनाकर मुसीबत ही मोल ले ली!"

सड़क सुनसान होते ही बुरातीनो ने लम्बी नाक उठायी, चारों तरफ़ देखा और फुदकते हुए घर की तरफ़ दौड़ गया।



बोलनेवाले झींगुर ने बुरातीनो को बुद्धिमानी की एक सलाह दी



भागते-भागते सीढ़ी के नीचेवाली कोठरी में पहुंचकर बुरातीनो कुर्सी के पाए के पास फ़र्श पर धप्प से बैठ गया।

"अब और क्या शरारत की जाये?"

हां, यह मत भूलो कि बुरातीनो अभी कुल एक दिन का ही था। उसकी नन्ही समझ बिलकुल खोखली थी।

इसी समय आवाज़ आयी:

"झन्न-झन्न, झन्न-झन्न, झन्न-झन्न!"

बुरातीनो ने कोठरी में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाते हुए गर्दन घुमायी:

"ऐ, कौन है यहां?"

"यहां मैं हूं, झन्न-झन्न ..."

बुरातीनो ने एक जीव को देखा, वह तिलचट्टे से मिलता-जुलता था, लेकिन उसकी खोपड़ी टिड्डे जैसी थी। वह अलावघरवाली दीवार पर बैठा था और धीरे-धीरे झनझना रहा था – झन्न-झन्न। वह उभड़ी हुई रंग-बिरंगी आंखों से देख रहा था, मूछें हिला रहा था।

"ऐ, तू कौन है?"

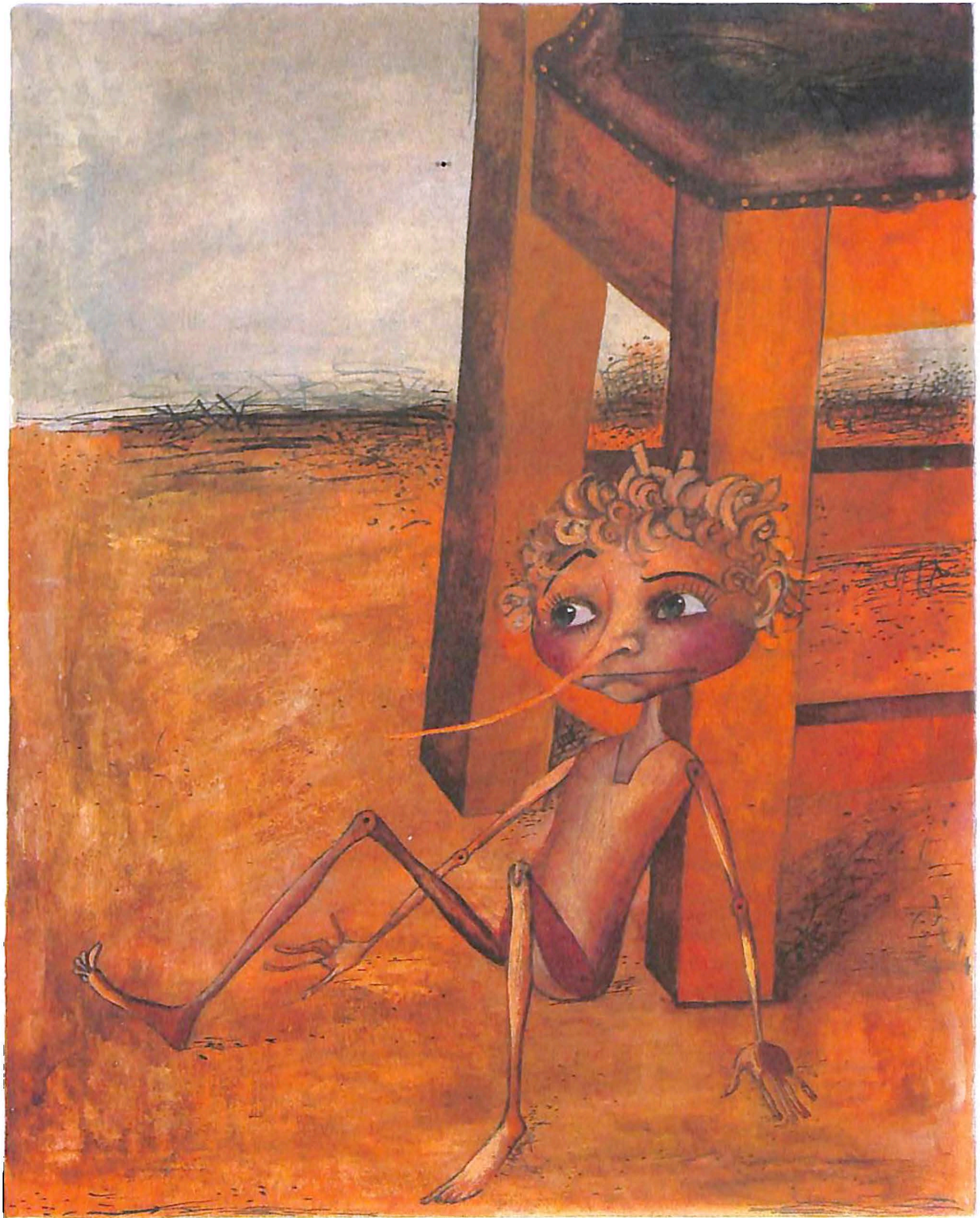
"मैं बोलनेवाला झींगुर हूं," उस जीव ने जवाब दिया, "इस कोठरी में रहते हुए मुझे सौ साल से भी ऊपर हो चुके हैं।"

"पर यहां का मालिक मैं हूं। दफ़ा हो जा यहां से!"

"ठीक है, मैं यहां से चला जाऊंगा, हालांकि मुझे यह कोठरी छोड़ने का दुख है, जहां मैं सौ साल रहा हूं," बोलनेवाले झींगुर ने कहा, "लेकिन जाने से पहले तुम मेरी एक बात ध्यान से सुन लो।"

"बड़-ड़-ड़ी ज़रूरत है मुझे बूढ़े झींगुर से सीख लेने की ..."

"उफ़! बुरातीनो, बुरातीनो," झींगुर बोला, "शैतानी छोड़ो, कार्लो की बात माना करो, घर से बेकार न भागा करो और कल से ही स्कूल जाना शुरू कर दो। यह रही तुम्हारे लिए मेरी सीख। नहीं तो तुम्हें भयंकर खतरों और मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। अभी तुम्हारे जीवन का मोल एक मरी मक्खी भी नहीं है।"



"क्यों?" बुरातीनो ने पूछा।

"तुम ख़ुद समझ जाओगे," बोलनेवाले झींगुर ने उलटकर जवाब दिया।

"अरे तू! खूसट मकोड़े!" बुरातीनो ज़ोर से बोला। "जान-जोखिम उठाते हुए जीना मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है। कल सुबह तड़के ही घर से खिसक लूंगा। बाड़ों पर कूद-फांद मचाऊंगा, चिड़ियों के घोंसलों की ख़बर लूंगा, लड़कों को मुंह चिढ़ाऊंगा, कुत्ते-बिल्लियों की दुम खींचूंगा! देखना और भी क्या-क्या शरारतें सोच लूंगा!"

"मुझे तुझ पर तरस आता है, तरस। देख, तू एक दिन आंसू बहायेगा, आंसू!"

"क्यों?" बुरातीनो ने फिर पूछा।

"इसलिए कि तुम्हारी खोपड़ी में काठ ही काठ भरा है।"

तब बुरातीनो कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, कुर्सी से मेज़ पर उछला, हाथ में हथौड़ी लेकर बोलनेवाले झींगुर के सिर पर चला दी।

बूढ़े अक़्लमन्द झींगुर ने गहरी सांस ली, अपनी मूछें हिलायीं और इस कोठरी को हमेशा के लिए छोड़कर अलावघर के उस पार चल दिया।



बुरातीनो अपने मनचलेपन के कारण मरते-मरते बचा। पापा कार्लो ने उसे रंगीन कागज़ों की पोशाक पहनायी और उसके लिए ककहरा ख़रीदा

बोलनेवाले झींगुर के साथ हुए वाक़ये के बाद सीढ़ी के नीचेवाली कोठरी में उदासी छा गयी। दिन मुश्किल से कट रहा था। बुरातीनो के पेट में भी ख़ासी खलबली मच रही थी।

उसने आंखें मूंद लीं और तुरन्त ही उसे प्लेट में भुनी हुई मुर्गी दिखलायी दी।

आंखें खोलने पर मुर्गी तुरन्त ग़ायब हो गयी।

उसने फिर से आंखें मींच लीं, इस बार आंखों के सामने प्लेट में परोसा दलिया और उसके साथ रसभरी का मुरब्बा दिखलायी दिया।

आंखें खोलने पर दलिया और रसभरी के मुरब्बेवाली प्लेट भी तुरन्त ग़ायब हो गयी।

तब बुरातीनो समझा कि पेट में चूहे कूद रहे हैं।

वह अलावघर की ओर लपका। उसने झट से खौलते पानी के बर्तन में अपनी नाक घुसेड़ दी, लेकिन बुरातीनो की लम्बी नाक उसे आर-पार छेद गयी। तुम जानते ही हो कि अलावघर, जलती हुई आग, धुआं और पानी का बर्तन – यह सब गरीब कार्लो ने पुराने कैनवस के एक टुकड़े पर बनाये थे।

बुरातीनो ने घसीटकर अपनी पैनी नाक बाहर निकाली और छेद में भीतर झांककर देखने लगा। कैनवस के पीछे दीवार में छोटा सा दरवाज़ा बना लगता था, लेकिन मकड़ी का जाल इस तरह फैला हुआ था कि कुछ समझ पाना मुश्किल था।

बुरातीनो ने कोठरी का चप्पा-चप्पा छानना शुरू किया, कहीं कोई रोटी का टुकड़ा या बिल्ली की नोच-खसोट से बची हुई मुर्गी की हड्डी ही मिल जाये।

उफ़, गरीब कार्लो के पास रात के खाने के लिए कुछ भी नहीं बचा था!

अचानक उसकी नज़र एक टोकरी में लकड़ी के छीलन के साथ रखे एक अण्डे पर पड़ी। उसने उसे उठाया, खिड़की पर रखा और नाक की टक्कर मारकर उसे फोड़ डाला।

अण्डे के भीतर से चूं-चूं की आवाज़ आयी:

"धन्यवाद, कठपुतले!"

फूटे हुए अण्डे के भीतर से एक चूज़ा फुदककर बाहर आया जिसकी दुम की जगह अभी मुलायम रोयें ही उगे थे और आंखें उल्लास से चमक रही थीं।

"अच्छा, हम चले। मां काफ़ी देर से बाड़े में इन्तज़ार कर रही है," और चूज़ा खिड़की से फुदककर कूद गया।



"हाय, हाय," बुरातीनो चिल्लाया, "भूख लगी है!"

अन्त में दिन बीत गया। कमरे में धुंधलका छाने लगा।

बुरातीनो अलावघरवाले चित्र के नज़दीक बैठा भूख से बेहाल धीरे-धीरे हिचकियां ले रहा था।

उसे सीढ़ियों तले फ़र्श के नीचे से एक भारी-भरकम सिर नज़र आया। छोटे-छोटे पैरोंवाले एक भूरे जन्तु ने झांका, इधर-उधर सूंघा और बाहर निकल आया।

वह दबे पांव छीलनवाली टोकरी की तरफ़ बढ़ा, उसमें घुसा और सूंघते हुए कुछ ढूंढ़ने लगा। फिर गुस्सा होकर छीलनों में खुरखुराने लगा। शायद वह उस अण्डे की तलाश कर रहा था, जिसे बुरातीनो कभी का तोड़ चुका था।

इसके बाद वह टोकरी से निकला और बुरातीनो की ओर बढ़ा। उसे सूंघा, काली-काली नाक सिकोड़ी, जिसके हर तरफ़ चार-चार लम्बे बाल उगे हुए थे। बुरातीनो के शरीर से खाने की किसी चीज़ की महक नहीं आ रही थी। वह अपनी लम्बी दुम घसीटता हुआ उसके पास से निकल गया।

भला ऐसी दुम पकड़कर खींचे बिना कैसे रहा जा सकता था! बुरातीनो ने दुम पकड़ ली।

यह था बूढ़ा खूसट चूहा – खुटरखुटर।

डर के मारे वह बुरातीनो को घसीटते हुए सीढ़ी की ओर लपका, पर तभी उसने देखा – अरे, यह तो लकड़ी का लड़का है! बस, क्या था, वह तेज़ी से पलटा और गुस्से में पगलाया हुआ बुरातीनो की गर्दन कुतरने के लिए उस पर कूद पड़ा।



अब बुरातीनो डरा। उसने चूहे की दुम छोड़ दी और कुर्सी पर कूद गया। चूहा उसका पीछा करने लगा।

वह कुर्सी से खिड़की पर कूदा। चूहा भी उसके पीछे कूदा।

पूरी कोठरी के पार एक छलांग लगाकर वह मेज़ पर कूद गया। चूहा भी उसके पीछे-पीछे ... मेज़ पर आ धमका, उसने बुरातीनो का गला दबोच लिया, दांतों में उसे दबाये हुए ही फ़र्श पर उतर आया और सीढ़ी के नीचे अपने बिल की ओर घसीटने लगा।

"पापा कार्लो!" बुरातीनो मुश्किल से मिनमिनाया।

"मैं आ गया!" तेज़ आवाज़ में उत्तर मिला।



दरवाज़ा खुला और पापा कार्लो ने भीतर प्रवेश किया। पैर से लकड़ी का जूता उतारा और चूहे पर दे मारा।

खुटरखुटर कठपुतले को छोड़कर दांत पीसता हुआ रफ़ूचक्कर हो गया।

"देख लिया न शरारत का नतीजा!" पापा कार्लो ने बड़बड़ाते हुए बुरातीनो को फ़र्श से उठाया। यह देखकर कि वह ठीक-ठाक है, कार्लो ने उसे गोद में बैठाया, जेब से प्याज़ निकालकर उसे छीला और बुरातीनो को दिया।

"लो बेटे, खा लो!"

भूख से बेहाल बुरातीनो कर्र-कर्र चबाता हुआ समूचा प्याज़ खा गया। इसके बाद पापा कार्लो के रूखे गाल पर सिर रगड़ते हुए उसने कहा:

"पापा कार्लो, मैं अब बुद्धिमान बनूंगा, स्कूल में पढ़ने जाऊंगा – बोलनेवाले झींगुर ने नाम लिखाने को कहा है।"

"शाबाश, मेरे बेटे, सूझ की बात कही है तूने ..."

"पापा कार्लो, देखो न, एक तो मैं नंग-धड़ंग हूं, दूसरे, लकड़ी का बना हूं। स्कूल में मुझे देख-देखकर सब मेरी खिल्ली उड़ायेंगे।"

"हां," कार्लो ने ठुड्डी खुजलाते हुए कहा। "तू ठीक ही कहता है, बेटे!"

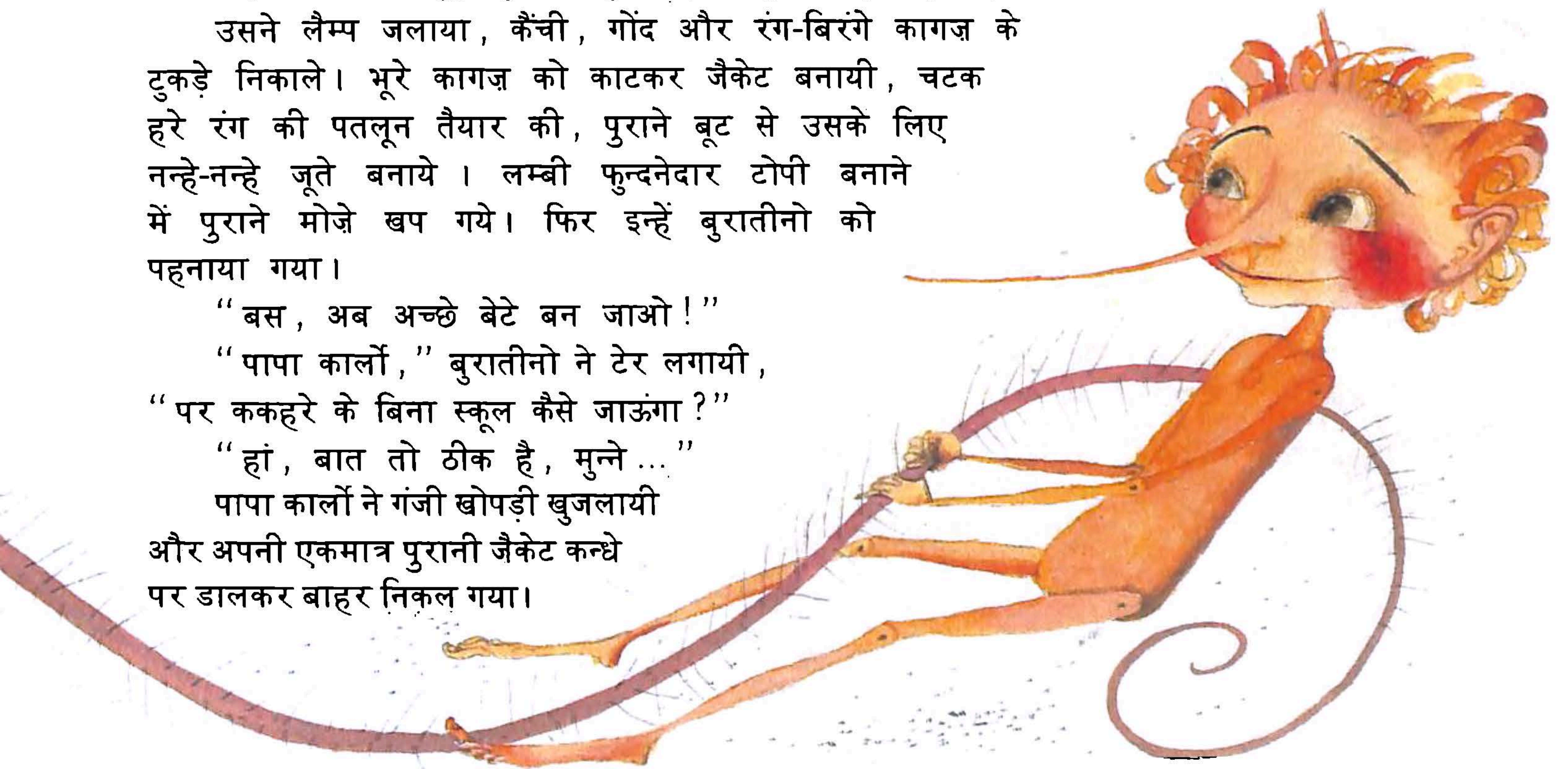
उसने लैम्प जलाया, कैंची, गोंद और रंग-बिरंगे कागज़ के टुकड़े निकाले। भूरे कागज़ को काटकर जैकेट बनायी, चटक हरे रंग की पतलून तैयार की, पुराने बूट से उसके लिए नन्हे-नन्हे जूते बनाये। लम्बी फुन्दनेदार टोपी बनाने में पुराने मोज़े खप गये। फिर इन्हें बुरातीनो को पहनाया गया।

"बस, अब अच्छे बेटे बन जाओ!"

"पापा कार्लो," बुरातीनो ने टेर लगायी, "पर ककहरे के बिना स्कूल कैसे जाऊंगा?"

"हां, बात तो ठीक है, मुन्ने ..."

पापा कार्लो ने गंजी खोपड़ी खुजलायी और अपनी एकमात्र पुरानी जैकेट कन्धे पर डालकर बाहर निकल गया।





वह बाहर निकल गया।

वह जल्द ही लौट आया, लेकिन बिना जैकेट के। वह अपने साथ बड़े-बड़े अक्षरों और आकर्षक चित्रोंवाली किताब ले आया था।

"यह रहा ककहरा। पढ़ो और अच्छे बनो।"

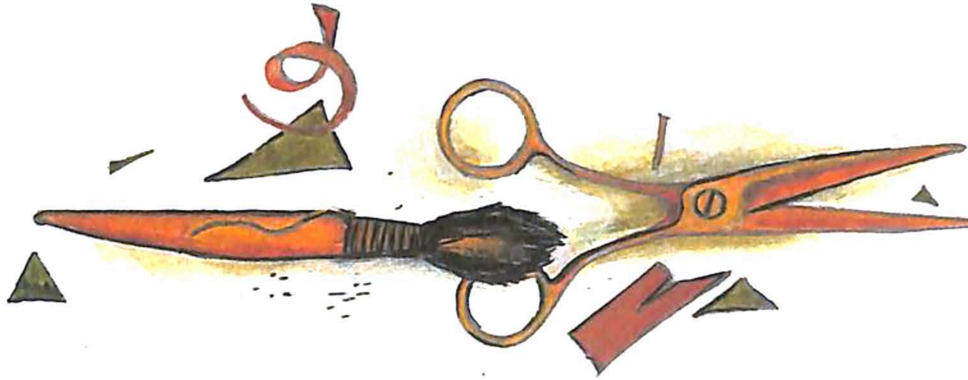
"पापा कार्लो, तुम्हारी जैकेट कहां है?"

"जैकेट तो मैंने बेच डाली है... कोई बात नहीं, ऐसे ही काम चल जायेगा... बस, तू खुश रह!"

बुरातीनो ने पापा कार्लो के दयालु हाथों पर दुलार से अपनी नाक रख दी।

"पढ़-लिखकर जब ख़ूब बड़ा हो जाऊंगा, तो मैं तुम्हारे लिए हज़ारों नयी-नयी जैकेटें ख़रीद लाऊंगा..."

बुरातीनो ने अपने जीवन की पहली शाम बिना शैतानी के बितानी चाही जिस तरह बोलनेवाले झींगुर ने उसे नसीहत दी थी।



बुरातीनो ने ककहरा बेचकर कठपुतलियों के तमाशे का टिकट खरीदा

सुबह तड़के बुरातीनो ने ककहरा बस्ते में रखा और उछलते-कूदते स्कूल की तरफ़ दौड़ चला।

रास्ते में उसने दुकानों पर सजी मिठाइयों पर भी नज़र नहीं डाली – शहदवाले बिस्कुट, मीठे केक, सींकों में लगा मुर्गोंवाला लेमनचूस।

उसने उन लड़कों को भी देखना नहीं चाहा जो पतंग उड़ा रहे थे ...

धारीदार बिल्ला बज़ीलिओ सड़क पार कर रहा था, कम से कम उसकी दुम तो पकड़कर खींची ही जा सकती थी। यहां भी वह खुद पर काबू किये रहा।

ज्यों-ज्यों वह स्कूल के पास पहुंच रहा था, त्यों-त्यों उसे थोड़ी ही दूर पर भूमध्यसागर की ओर से गूंजता कर्णप्रिय संगीत अधिक स्पष्ट सुनायी दे रहा था।

पी-पी-पी – बांसुरी की धुन सुनायी दी।

ला-ला-ला – वायलिन बज रहा था।

झिन्न-झिन्न-झिन्न – कंसताल झनझना उठा।

ढम्म-ढम्म – ढोलक पर थाप पड़ रही थी।

स्कूल के लिए दाहिनी तरफ़ मुड़ना था, संगीत की लहर बायीं ओर से गूंज रही थी। बुरातीनो के क़दम डगमगाने लगे। उसके क़दम खुद-ब-खुद सागर की ओर बढ़ लिये, जहां मधुर संगीत गूंज रहा था:

पी-पी-पी ...

झिन्न-ला-ला, झिन्न-ला-ला ...

ढम्म!

"स्कूल कहीं चला तो नहीं जायेगा," बुरातीनो ज़ोर से बोला, "बस, एक बार इधर झांक लेता हूं, थोड़ा संगीत सुन लूं, दौड़कर स्कूल तो पहुंच ही जाऊंगा।"

मन में आया और वह सागर तट की ओर दौड़ गया। उसने एक तंबू देखा जो रंग-बिरंगी झण्डियों से सजाया गया था। ये झण्डियां समुद्री हवा के झोंकों से फड़फड़ाते हुए फहरा रही थीं।

तंबू के छज्जे पर चार संगीतकार अपने-अपने बाजों को बजाते हुए थिरक रहे थे।

नीचे एक मोटी सी आण्टी मुस्कराते हुए टिकटें बेच रही थी।

तंबू के द्वार पर खासी भीड़ जमा थी। लड़के, लड़कियां, सैनिक, लेमनेड बेचनेवाले, बच्चों को गोद में संभाले धायाएं, दमकलवाले, डाकिये – ये सभी बड़ा सा पोस्टर पढ़ने में जुटे हुए थे:


कठपुतली थियेटर
केवल
एक शो
आइये! आइये! आइये!



बुरातीनो ने एक लड़के की बांह पकड़ी :

"भैय्या, ज़रा बतलाना तो टिकट कितने का है?"

लड़के ने लापरवाही दिखाते हुए धीरे-धीरे कहा :

"चार सोल्दो का, लकड़ी के लड़के।"

"सुनिये, मैं अपना बटुआ घर पर ही भूल आया... आप मुझे चार सोल्दो उधार नहीं दे सकते?"

लड़के ने सीटी बजायी :

"मुझे क्या मूरख समझ लिया है तूने!"

"तमाशा देखने का बड़ा जी कर रहा है!" बुरातीनो की आंखों में आंसू डबडबा आये। "चार सोल्दो में मेरी ख़ूबसूरत जैकेट ले लीजिये..."

"कागज़ की जैकेट के चार सोल्दो कौन देगा? जा, किसी और को बेवकूफ़ बना!"

"तब फिर मेरी अच्छी सी टोपी ही..."

"तेरी टोपी से सिर्फ़ कीड़े-मकोड़े ही पकड़े जा सकते हैं... जा, किसी और को बेवकूफ़ बना!"

बुरातीनो की नाक तक सुन्न हो गयी – इतना उतावला हो उठा था वह तमाशा देखने के लिए।

"भैय्या, तब फिर चार सोल्दो में मेरा ककहरा ही ख़रीद लो..."

"चित्रोंवाला है?"

"बढ़िया चित्रों से भरपूर, बड़े-बड़े अक्षरोंवाला है।"

"चलो, दे दो," लड़के ने किताब हाथ में ली और मन मारकर चार सोल्दो गिनकर दे दिये।

बुरातीनो खिले चेहरेवाली आण्टी के पास आकर मिनमिनाया :

"सुनिये, मुझे कठपुतली थियेटर का एक टिकट दे दीजिये – हां, पहली लाइन का!"



तमाशे के दौरान कठपुतलियों ने बुरातीनो को पहचाना

बुरातीनो पहली लाइन में जाकर बैठ गया और बड़ी उमंग से परदे को देखने लगा।

परदे पर तरह-तरह के रोचक चित्र बने हुए थे – थिरकती मानव आकृतियां, काले नकाबवाली लड़कियां, सितारेदार टोपियां लगाये लम्बी-लम्बी दाढ़ीवाले डरावने चेहरे, गोल-गोल पूए जैसा सूरज, जिसकी नाक और आंखें भी थीं। इसी तरह के और भी मनोरंजक चित्र दिखलाई पड़ रहे थे। तीन बार घण्टी घनघनायी और परदा उठ गया।

छोटे से रंगमंच पर दायीं और बायीं तरफ़ दफ़्ती के पेड़ खड़े थे। उनके ठीक ऊपर चन्द्रमा के आकारवाला कंदील चमक रहा था जिसका प्रतिबिम्ब एक शीशे पर पड़ रहा था, शीशे की सतह पर रूई के बने सुनहरे चोंचवाले राजहंसों का जोड़ा तैर रहा था।

दफ़्ती के पेड़ के पीछे से एक नन्हा सा आदमी निकला। वह लम्बी सफ़ेद कमीज़ पहने हुए था जिसकी बांहें भी लम्बी-लम्बी थीं। उसके चेहरे पर सफ़ेद पाउडर पुता हुआ था।

उसने दर्शकों के सामने आदर से झुकते हुए उदास स्वर में कहा :

"नमस्ते, मेरा नाम है पियेरो... अब आपके सामने हंसी-मज़ाक़ से भरपूर नाटक शुरू होने जा रहा है, जिसका नाम है: 'नीलकेशिनी या तैंतीस झापड़'। मेरी छड़ी से ख़बर ली जायेगी, थप्पड़ों की सौगात दी जायेगी और गर्दन पर चपतें लगायी जायेंगी। यह नाटक हंसी के गोलगप्पों से भरपूर है..."

दफ़्ती के दूसरे पेड़ की तरफ़ से एक और आदमी कूदकर सामने आया। वह ऊपर से नीचे तक चारख़ानेदार पोशाक में दिखलायी पड़ रहा था, जैसे वह आदमी नहीं शतरंज की बिसात हो।

वह दर्शकों के समक्ष सम्मान से झुका और बोला : "नमस्ते, मुझे आर्लेकिन कहते हैं!"

इसके बाद वह पियेरो की तरफ़ घूम गया और उसने इतनी ज़ोर से उसे दो थप्पड़ जड़े कि उसके गालों पर पुता पाउडर तक झड़ गया।

"तू क्यों ठिनक रहा है, मूरख?"

"मैं उदास हूं क्योंकि मैं शादी करना चाहता हूं," पियेरो ने जवाब दिया।

"करना चाहता है तो की क्यों नहीं?"

"इसलिये कि मेरी मंगेतर ही भाग गयी..."

"हा-हा-हा," आर्लेकिन ने ठहाका मारा, "देखा इस मूरख को!"

उसने एक छड़ी उठायी और पियेरो को दो-चार हाथ जड़ दिये।

"तेरी मंगेतर का नाम क्या है?"

"तुम लड़ोगे तो नहीं?"

"क्या कहते हो, अभी तो मैंने शुरुआत ही की है।"

"अगर ऐसी ही बात है तो बताये देता हूं: उसका नाम है मलवीना या नीलकेशिनी।"

"हा-हा-हा!" आर्लेकिन ने फिर से ठहाका लगाया और पियेरो की गर्दन पर तीन चपतें जड़ बैठा। "सुना आपने, आदरणीय सज्जनो? कहीं नीलकेशिनी भी होती है?"

वह दर्शकों की तरफ़ मुड़ा ही था, कि अचानक उसकी नज़र पहली लाइन में बैठे लकड़ी के लड़के पर पड़ी। उसका मुंह कानों तक फैला हुआ था, नाक बेहद लम्बी थी और वह सिर पर फुन्दनेदार टोपी पहने था।

"अरे, देखो-देखो, यह तो बुरातीनो है!" उसकी तरफ़ उंगली दिखाते हुए आर्लेकिन ज़ोर से चिल्लाया।

"सचमुच का बुरातीनो!" पियेरो भी हाथ हिलाता हुआ ज़ोर-ज़ोर से चीख़ने लगा।

दफ़्ती के पेड़ों के पीछे से बहुत सी कठपुतलियां बाहर निकल आयीं। उनमें काले नकाब लगाये लड़कियां, टोपियां लगाये डरावने दढ़ियल, झबरीले कुत्ते, जिनकी आंखों की जगह पर बटन जड़े हुए थे और ककड़ी जैसी नाकवाले कुबड़े भी शामिल थे।

वे सब मंच के सिरे पर लगी रोशनियों के पास दौड़ आये और घूर-घूरकर देखते हुए चिल्लाने लगे:

"यह तो बुरातीनो है! बुरातीनो! ऐ, इधर, हमारे पास आ जा, इधर आ, ख़ुशदिल नन्हे शैतान!"

इस पर बुरातीनो अपनी जगह से कूदकर रंगमंच पर पहुंच गया।

कठपुतलों और कठपुतलियों ने उसे पकड़ लिया। उसे गले लगाने लगे, चूमने लगे, चुटकियां लेने लगे। फिर सबने मिलकर गीत गाना शुरू कर दिया:

चिड़िया नाची रे ता थैया,
उपवन में ख़ूब सबेरे।
कभी चोंच घुमाये बायें,
कभी दुम झटकाये दायें।
कारावास की ताल पे नाचे,
चिड़िया ता ता थैया।

दो गुबरैले ढोल बजायें,
बैण्ड बजाये नन्हकू मेंढक।
कभी चोंच घुमाये बायें,
कभी दुम झटकाये दायें।
कारावास की ताल पे नाचे,
चिड़िया ता ता थैया।

फुदक-फुदककर चिड़िया नाचे,
झूम-झूमकर ख़ुशी मनाये।







कभी चोंच घुमाये बायें,
कभी दुम झटकाये दायें।
कारावास की ताल पे नाचे,
चिड़िया ता ता थैया।

मिलन का यह दृश्य दर्शकों के हृदयों को छू गया। एक धाय तो आंसू बहाने लगी। एक दमकलवाला सुबकियां लेकर रोने लगा।

लेकिन सबसे पीछे की सीटों पर बैठे छोकरे गुस्से से पैर पटक रहे थे:

"बन्द करो यह बचकानी चूमा-चाटी! खेल शुरू करो!"

यह सब हंगामा सुनकर मंच के पीछे से एक आदमी ने सिर बाहर निकाला। इतना ख़ौफ़नाक था वह कि उस पर नज़र पड़ते ही होश-हवास गुम हो जायें।

उसकी बिखरी हुई घनी दाढ़ी ज़मीन तक लहरा रही थी, गोल-गोल आंखें गुस्से से तरेर रही थीं, बड़े से मुंह के भीतर दांत किटकिटा रहे थे, जैसे आदमी नहीं, कोई घड़ियाल हो। उसके हाथ में सांप की लपलपाती जीभों सा सात जीभोंवाला हंटर था, जिसे वह सतमुंहा हंटर कहता था।

यह व्यक्ति कठपुतली थियेटर का मालिक, कठपुतली विज्ञान का डाक्टर – सिनियोर* काराबास बाराबास था।

"हो-हो-हो, हू-हू-हू!" वह बुरातीनो पर गरजा। "तो तुम मेरे इस सुन्दर नाटक में खलल डाल रहे हो?"

उसने बुरातीनो को दबोचा, रंगशाला के गोदाम में ले गया और उसे खूंटी से टांग दिया। उसने वापस लौटकर अपने सतमुंहे हंटर से कठपुतलियों को धमकाया कि वे खेल जारी रखें।

कठपुतलियों ने किसी तरह नाटक ख़त्म किया, पर्दा गिरा, दर्शक अपने-अपने घर चल दिये।

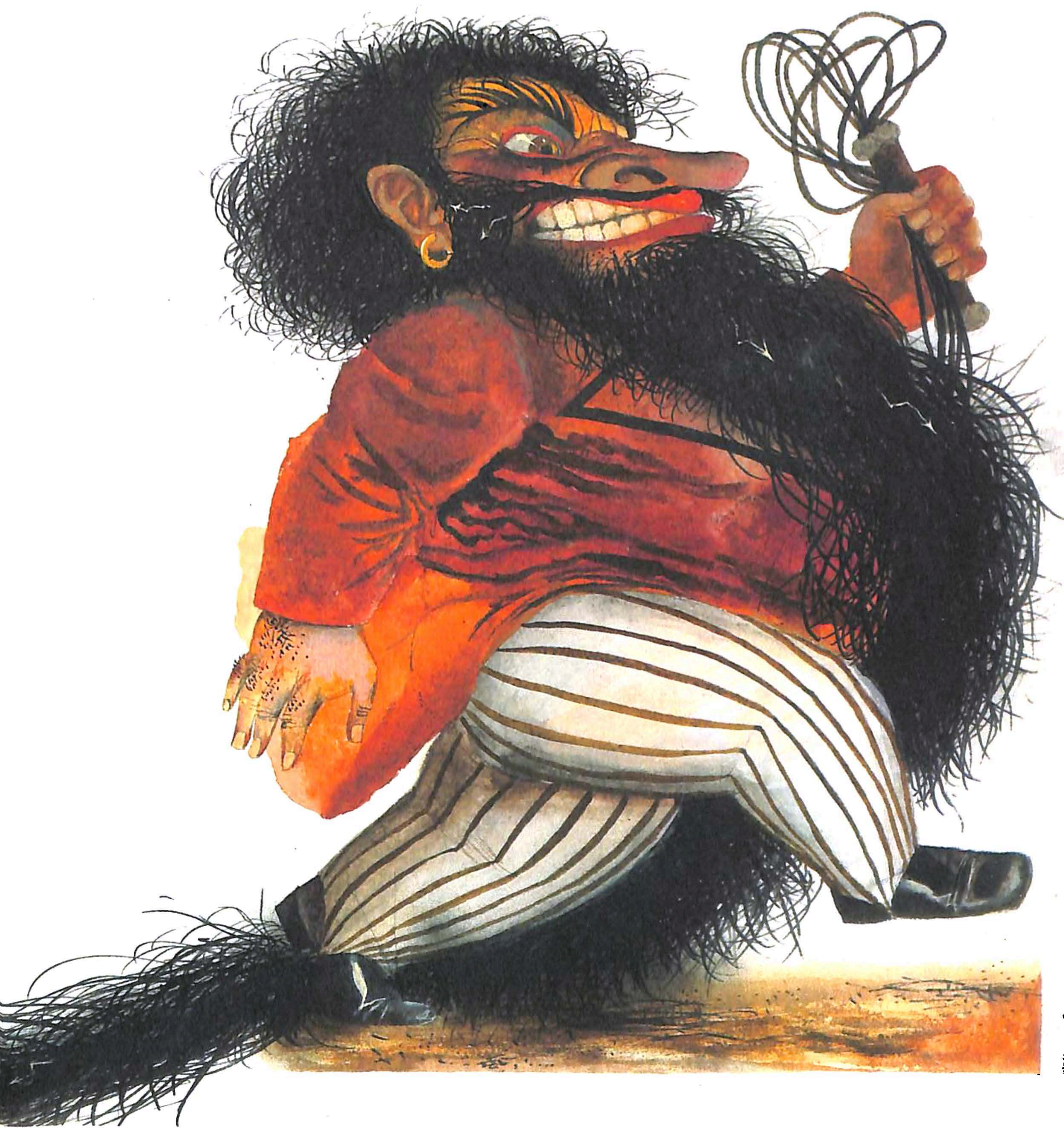
सिनियोर काराबास बाराबास रसोईघर में रात का खाना खाने गया।

दाढ़ी का निचला हिस्सा जेब में खोंसते हुए, ताकि वह अड़चन न डाले, वह अलाव के पास बैठ गया, जिसमें लोहे की सलाख पर एक ख़रगोश और दो चूज़े भुन रहे थे।

उंगलियों को जीभ से तर करके उसने भुनते हुए गोश्त को छूकर देखा, उसे लगा कि अभी पकने में कसर बाक़ी है।

---

* इतालवी भाषा में "सिनियोर" शब्द का अर्थ "श्रीमान" है।



अलाव में लकड़ी कम थी। तब उसने तीन बार ताली बजायी। आर्लेकिन और पियेरो दौड़कर आये।

"ज़रा उस निठल्ले बुरातीनो को मेरे पास लाओ तो," सिनियोर कारावास वाराबास ने कहा। "वह सूखी लकड़ी का बना है, उसे मैं आग में झोंक दूंगा। तब खाना ज़रा कायदे से पक जायेगा।"

आर्लेकिन और पियेरो घुटनों पर गिरकर बुरातीनो के लिए दया की भीख मांगने लगे।

"कहां है मेरा सतमुंहा हंटर?" कारावास वाराबास चीख़ा।

तब दोनों रोते-रोते गोदाम में गये, उन्होंने खूंटी से बुरातीनो को उतारा और उसे रसोईघर में ले आये।



सिनियोर काराबास बाराबास ने बुरातीनो को आग में जलाने के बजाय उसे सोने के पांच सिक्के देकर घर भेजा

दोनों कठपुतले जब बुरातीनो को लेकर रसोईघर में आये तो सिनियोर काराबास बाराबास भयंकर आवाज़ के साथ नाक सुड़सुड़ाता हुआ छड़ से अलाव में कोयला उलट-पलट रहा था।

अचानक उसकी आंखें लाल हो आयीं, नाक और फिर पूरा चेहरा लम्बी-लम्बी झुर्रियों से सिकुड़ गया। शायद कोई चिनगारी उड़कर नथुनों में घुस गयी थी।

"आक... आक... आक..." आंखें तरेरते हुए काराबास बाराबास गुर्रा पड़ा, "आक-छीं!"

और उसने ऐसी छींक मारी कि अलाव से राख का एक गुबार सा उठ गया।

जब कठपुतली विज्ञान का डाक्टर छींकना शुरू करता था, तो फिर रुक नहीं पाता था, कभी-कभी उसे पचास क्या लगातार सौ-सौ छींकें आ जाती थीं।

इन असाधारण छींकों से उसे कमज़ोरी आ जाती थी और वह कुछ दयालु हो उठता था।

पियेरो नज़र बचाकर बुरातीनो के कान में फुसफुसाया:

"छींकों के बीच उससे कुछ बात करने की कोशिश करो।"

"आक-छीं! आक-छीं!" काराबास बाराबास मुंह फाड़कर सांस खींच रहा था और सिर झटक-झटककर पैर पटकते हुए छींकता जा रहा था।

रसोईघर में सब कुछ हिल रहा था, खिड़की के शीशे झनझना रहे थे, खूंटियों पर टंगे कलछुल-छलनी खड़खड़ा रहे थे।

इन छींकों के बीच बुरातीनो ने अपनी महीन आवाज़ में रोना-धोना शुरू किया:

"कितना अभागा हूं मैं, मुझ गरीब पर किसी को भी दया नहीं आती!"

"बन्द कर रोना!" काराबास बाराबास चिल्लाया। "तुम खलल पहुंचा रहे हो... आक-छीं!"

"स्वस्थ रहिये, सिनियोर," बुरातीनो हिचकियां लेता हुआ बोला।

"शुक्रिया... तुम्हारे मां-बाप ज़िन्दा हैं? आक-छीं!"

"मेरी मां तो, सिनियोर, कभी नहीं थी। आह, मैं कितना अभागा हूं!" और बुरातीनो इतनी तीखी आवाज़ में रो पड़ा कि काराबास बाराबास के कान में वह सूई की तरह चुभने लगी।

वह पैर पटकने लगा।



"बन्द कर यह रिरियाना, कहा न मैंने! आक-छीं! और तेरा बाप ज़िन्दा है?"

"मेरे अभागे पिता अभी ज़िन्दा है, सिनियोर।"

"कैसा लगेगा तेरे बाप को, जब उसे पता चलेगा कि तुझे जलाकर मैं ख़रगोश और दो चूज़े भूनकर खा गया... आक-छीं!"

"बेचारे पिताजी तो वैसे ही भूख और ठण्ड से किसी भी दिन चल बसेंगे। मैं ही उनके बुढ़ापे का एकमात्र सहारा हूं। दया कीजिये, मुझे जाने दीजिये, सिनियोर।"

"हज़ार-हज़ार लानत!" काराबास बाराबास गरज उठा। "दया करने का प्रश्न ही नहीं उठता। ख़रगोश और चूज़े भूनने हैं। चलो, अलाव में घुसो!"

"सिनियोर, यह मैं नहीं कर सकता।"

"क्यों?" काराबास बाराबास ने पूछा सिर्फ़ इसलिये कि बुरातीनो बोलता रहे, चिल्ला-चिल्लाकर कान न फाड़ने लगे।

"सिनियोर, एक बार मैंने अलाव में नाक घुसेड़ने की कोशिश की थी, लेकिन उसमें सिर्फ़ छेद ही हुआ, और कुछ नहीं।"

"क्या बकवास है!" काराबास बाराबास को आश्चर्य हुआ। "अलाव में तुम नाक से कैसे छेद कर सकते हो?"

"क्योंकि, सिनियोर, अलाव और उस पर रखा पतीला एक कैनवस के टुकड़े पर बने हुए थे।"

"आक-छीं!" काराबास बाराबास ने इतने ज़ोर से छींका कि पियेरो बायें उड़ा, आर्लेकिन दायें और बुरातीनो बीचोंबीच लट्टू की तरह नाचने लगा।

"कैनवस के टुकड़े पर अलाव और पतीले का चित्र तुमने कहां देखा है?"

"अपने पापा कार्लो की कोठरी में।"

"तुम्हारे पिता का नाम कार्लो है!" काराबास बाराबास कुर्सी से उछल पड़ा, उसके हाथ फैल गये, दाढ़ी फहर गयी। "अच्छा, तो बूढ़े कार्लो की कोठरी में गुप्त..."

कहते-कहते काराबास बारा-





वास ने अपने मुंह में समूची मुट्ठी घुसेड़ ली, कि कहीं यह रहस्य सब के सामने न खुल जाये। कुछ देर तक वह इसी मुद्रा में बैठा रहा, उसकी उभरी आंखें अलाव की बुझती आग पर टिकी रहीं।

"अच्छा," अन्त में उसने कहा, "आज मैं अधपके खरगोश और अधभुने चूज़ों से ही काम चला लेता हूं। मैं तुम्हें जीवनदान देता हूं, बुरातीनो। और इतना ही नहीं ..."

उसने दाढ़ी के नीचे जैकेट की जेब में हाथ डाला, सोने के पांच सिक्के निकाले और बुरातीनो की तरफ़ बढ़ाये:

"और इतना ही नहीं ... ये सोने के सिक्के ले जाओ और कार्लो को दे दो। उसे मेरा सलाम कहना और यह भी कि वह भूख और ठण्ड से किसी भी हालत में न मरे और सबसे बड़ी बात है कि अपनी उस कोठरी से कहीं न जाये, जहां कैनवस के पुराने टुकड़े पर अलावघर बना हुआ है। जाओ, आराम से सो जाओ, फिर सुबह-सुबह घर भाग लेना।"

बुरातीनो ने सोने के पांच सिक्के जेब में रख लिये और अत्यन्त नम्रता से झुककर अभिवादन किया:

"बहुत, बहुत धन्यवाद, सिनियोर। पैसे सौंपने के लिए मुझसे अधिक विश्वस्त पात्र आपको नहीं मिलेगा ..."

आर्लेकिन और पियेरो बुरातीनो को कठपुतलियों के शयन-कक्ष में ले गये। वहां सभी कठपुतलियां एक बार फिर बुरातीनो को खुशी से चूमने और गले लगाने, चिकोटियां काटने लगीं, जो पता नहीं कैसे अलाव में जला दिये जाने से बच निकला था।

वह कठपुतलियों से फुसफुसाकर कह रहा था:

"इसमें ज़रूर कोई रहस्य छिपा हुआ है।"



घर जाते समय बुरातीनो की भिखमंगे बिल्ले बज़ीलिओ और लोमड़ी अलीसा से मुलाक़ात

सुबह तड़के बुरातीनो ने सोने के सिक्के दुबारा गिने। सिक्के उतने ही थे, जितनी कि उसके हाथ की उंगलियां – यानी पांच।

सोने के सिक्के मुट्ठी में दबाकर वह तुरन्त घर की ओर दौड़ चला। वह उछलता-कूदता गुनगुना रहा था:

"पापा कार्लो के लिए नयी जैकेट, शहद के ढेर सारे बिस्कुट और मुर्गेवाला लेमनचूस ख़रीदूंगा!"

कठपुतलियों का थियेटर और फहराती झण्डियां जब आंखों से ओझल हो गयीं तो उसने दो भिखमंगों को देखा जो उदास, बौखलाये हुए धूल-धूसरित रास्ते में टहल रहे थे। ये दोनों थे – तीन टांगोंवाली लंगड़ी लोमड़ी अलीसा और अन्धा बिल्ला बज़ीलिओ।

यह वह बिल्ला नहीं था जिसे बुरातीनो ने कल रास्ते में जाते समय देखा था, बल्कि यह दूसरा था – संयोगवश इसका भी नाम बज़ीलिओ ही था और यह भी धारियोंवाला था।

बुरातीनो उनके पास से गुज़र जाना चाहता था कि लोमड़ी अलीसा ने फुसलाते हुए मीठी-मीठी आवाज़ में कहा:

"नमस्ते, नेकदिल बुरातीनो! कहां भागते चले जा रहे हो?"

"अपने घर जा रहा हूं, पापा कार्लो के पास।"

लोमड़ी ने मीठे लहजे में एक आह ली:

"पता नहीं बेचारा कार्लो तुम्हें ज़िन्दा भी मिले, सर्दी और भूख से तो उसका बहुत बुरा हाल है..."

"यह देखा है तुमने?" बुरातीनो ने मुट्ठी खोलकर सोने के पांच सिक्के दिखला दिये।

सिक्कों पर नज़र पड़ते ही लोमड़ी ने अनायास ही उनकी तरफ़ अपना पंजा बढ़ाया और बिल्ले ने अपनी अन्धी आंखें फाड़कर देखा, वे ऐसे चमचमा उठीं जैसे दो हरी-हरी मशालें।

लेकिन बुरातीनो ने इस बात पर ग़ौर नहीं किया।

"नेकदिल, प्यारे-प्यारे बुरातीनो, इतने सारे पैसों का तुम क्या करोगे?"

"पापा कार्लो के लिए जैकेट खरीदूंगा... अपने लिए नया ककहरा..."

"ककहरा, हाय!" लोमड़ी अलीसा ने सिर हिलाते हुए कहा। "पढ़ने-लिखने से तुम्हारा कोई भला न होगा... पढ़ते-पढ़ते ही देखो अब तीन टांगों पर चलने की नौबत आ गयी।"

“ककहरा!” बिल्ला बज़ीलिओ बड़बड़ाया और गुस्से से फुफकारते हुए बोला: “इस बेकार की पढ़ायी-लिखायी से तो मैं अन्धा हो गया।”

नज़दीक ही पेड़ की सूखी डाल पर एक बूढ़ा कौवा बैठा हुआ था। यह सब सुनकर वह कांव-कांव करने लगा:

“झूठ बोल रहे हैं, झूठ!”

बिल्ला बज़ीलिओ एकदम ऊपर की ओर उछला, पंजा मारकर कौवे को डाल से गिरा दिया और उसकी आधी दुम नोच डाली। मुश्किल से वह उड़कर निकल पाया। और बिल्ला फिर से अन्धा बनकर बैठ गया।

“तुम किसलिये उस पर झपटे, बज़ीलिओ?” बुरातीनो ने आश्चर्य से पूछा।

“आंख से तो अन्धा हूं,” बिल्ला बज़ीलिओ ने उत्तर दिया, “ऐसा लगा कि पेड़ पर कोई पिल्ला है...”

फिर वे तीनों धूल भरे रास्ते पर आगे बढ़ चले। लोमड़ी ने कहा:

“अक़्लमन्द, होशियार बुरातीनो, क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारे सोने के सिक्के दस गुने हो जायें?”



“बेशक, मैं चाहता हूं! लेकिन यह कैसे हो सकता है?”

“बहुत आसान है। चलो, साथ-साथ चलते हैं।”

“कहां?”

“मूरखनगरी।”

बुरातीनो ने थोड़ी देर सोचा।

“नहीं, मुझे अभी घर जाना है।”

“ठीक है तो फिर चले जाओ। हम तुम्हें मजबूर नहीं करेंगे,” लोमड़ी ने कहा, “पर इसमें तुम्हारा ही नुकसान है।”

“हां, तुम्हारा ही नुकसान है,” बिल्ला बुदबुदाया।

“तुम अपना भला ख़ुद नहीं चाहते,” लोमड़ी ने कहा।

“तुम अपना भला ख़ुद नहीं चाहते,” बिल्ले ने हां में हां मिलायी।

“नहीं तो तुम्हारे सोने के पांच सिक्के दौलत के ढेर बन जाते...”



बुरातीनो ठहर गया मुंह फाड़कर...

"झूठ है!"

लोमड़ी अपनी दुम पर टिककर बैठ गयी, होंठों पर जीभ फेरकर बोली:

"मैं तुम्हें अभी सब कुछ समझाये देती हूं। मूरखनगरी में एक जादुई मैदान है। उसे चमत्कारों का मैदान कहते हैं... वहां गड्ढा खोदो, फिर तीन बार बोलो: 'अन्तर, मन्तर, छूमन्तर'। बस, यह कहकर सोने के सिक्कों को गाड़ दो, फिर उन्हें मिट्टी से ढंक दो, ऊपर से नमक डाल दो, अच्छी तरह सींच दो और घर जाकर सो जाओ। सुबह उस गड्ढे में से एक छोटा सा पेड़ निकल आयेगा, उस पर पत्तियों की जगह सोने के सिक्के लटक रहे होंगे। समझ गये न?"

बुरातीनो उछल पड़ा:

"झूठ कहती हो!"

"चलो, चलते हैं, बज़ीलिओ," ग़ुस्से से नाक सिकोड़ते हुए लोमड़ी ने कहा, "हम पर विश्वास नहीं, तो रहने दो..."

"नहीं, नहीं," बुरातीनो चिल्लाया, "मुझे विश्वास है, यक़ीन है! चलो झटपट, मूरखनगरी ही चलते हैं!"



"तीन मछली" ढाबे में दावत

बुरातीनो, लोमड़ी अलीसा और बिल्ला बज़ीलिओ ने पहाड़ी पार की और चलते रहे, चलते रहे। उन्होंने खेत पार किये, अंगूर के बागानों और सनोबर के झुरमुटों से होकर गुज़रे, समुद्र के किनारे पहुंचे, फिर समुद्र तट से वापस मुड़े, फिर से उन्हीं सनोबर के झुरमुटों, और अंगूर के बागानों से गुज़रे ...

पहाड़ी पर फैला नगर और उसके ऊपर सूरज कभी दायें तो कभी बायें दिखाई दे रहे थे ...



लोमड़ी अलीसा आह भरते हुए कह रही थी:

"उफ़, मूरखनगरी तक इतनी आसानी से नहीं पहुंचा जा सकता, सारे पंजे घिस जायेंगे ..."

शाम होते होते उन्होंने सड़क किनारे चौरस छतदार एक पुराना सा घर देखा जिसके दरवाज़े पर लकड़ी की एक तख़्ती लटक रही थी।

ढाबे का मालिक अपने ग्राहकों के स्वागत में लपककर बाहर आया, अपनी गंजी खोपड़ी से टोपी उतारी और शिष्टाचार से झुकते हुए उसने अन्दर चलने का आग्रह किया।



"रोटी का एक टुकड़ा ही खाने को मिल जाता तो क्या बात होती!" लोमड़ी ने कहा।

"अरे, सूखी रोटी का टुकड़ा ही मिल गया होता!" बिल्ला ने स्वर में स्वर मिलाया।

वे ढावे के अन्दर जा पहुंचे, अलाव के नज़दीक ही बैठ गये, जहां तरह-तरह की खाने की चीज़ें भूनी और पकायी जा रही थीं।

लोमड़ी लगातार राल टपकाती, होंठ चाटती जा रही थी, बिल्ले बज़ीलिओ ने अपने पंजे मेज़ पर फैला दिये और मूछोंवाले अपने थूथुन को पंजों पर टिकाकर खाने की वस्तुओं पर ललचायी नज़र गड़ा दी।

"डबलरोटी के तीन टुकड़े इधर भेज दीजिये," बुरातीनो ने ढाबा मालिक से कहा।

ढाबा मालिक हक्का-बक्का रह गया – इतने सम्मानित ग्राहक और सिर्फ़ तीन टुकड़े डबल-रोटी!

"ख़ुशमिज़ाज और दिल्लगीबाज़ बुरातीनो आप से मज़ाक कर रहे हैं," लोमड़ी ने ठहाका लगाया।

"वह तो मज़ाक़ कर रहा है," बिल्ला गुर्राया।

"तीन टुकड़े डबलरोटी और साथ में मेमने का भुना हुआ ज़ायकेदार मांस," लोमड़ी ने कहा, "बत्तख़ के चूज़े और भुने हुए दो कबूतर, हो सके तो भुनी हुई कलेजी भी..."

"आधा दर्जन चर्बीदार जर्द मछलियां," बिल्ले ने आदेश दिया, "और कुछ छोटी-छोटी कच्ची मछलियां भी।"

संक्षेप में यह कि उन्होंने वह सब कुछ मंगवा लिया, जो अलाव पर तैयार था। बुरातीनो के हाथ लगा सिर्फ़ रोटी का एक टुकड़ा।

लोमड़ी अलीसा और बिल्ले बज़ीलिओ ने हड्डी समेत सब खा डाला। उनके पेट फूलकर कुप्पा हो गये और थोबड़े चर्बीदार खाने से चिकना गये।

"थोड़ी आराम करेंगे," लोमड़ी ने कहा, "और ठीक आधी रात को यहां से चल देंगे। देखो, ढाबा मालिक, हमें वक़्त पर जगा देना। कहीं भूल न जाना।"

लोमड़ी और बिल्ला नरम-नरम पलंगों पर लेट गये और खर्राटे भरने लगे। बुरातीनो बगल में कुत्ते के बिछावन पर सो गया।

उसे सपने में सोने की गोल-गोल पत्तियोंवाला पेड़ दिखलायी दिया... उसने हाथ बढ़ाया ही था...

"सुनिये, सिनियोर बुरातीनो, जागने का वक़्त हो चुका है... आधी रात कब की हो चुकी..."

दरवाज़े पर थपथपाहट सुनायी दी। बुरातीनो झटपट उठ बैठा, उसने आंखें मलीं – पलंग पर न तो बिल्ला था, न लोमड़ी। पलंग खाली पड़े थे। ढाबा मालिक ने उसे बताया:

"आपके सम्माननीय मित्र पहले ही जाग गये थे, कचौड़ियां खाकर ताज़ादम हुए और चले गये..."

"मेरे लिए कोई सन्देश छोड़ गये हैं क्या ?"

"ख़ास तौर से कह गये हैं कि आप, सिनियोर बुरातीनो, वक़्त वर्बाद किये बिना जंगल-वाले रास्ते पर तुरन्त दौड़ पड़ें ..."

बुरातीनो दरवाज़े की तरफ़ लपका ही था कि ढाबा मालिक दोनों हाथ कमर पर टिकाये दहलीज़ पर खड़ा हो गया। उसने आंख मिचमिचाते हुए पूछा :

"खाने का पैसा कौन देगा ?"

"ओह," बुरातीनो मिनमिनाया, "कितना ?"

"सोने का एक सिक्का ..."

बुरातीनो को यह ख़याल आया कि वह उसकी टांगों के बीच से तुरन्त निकल भागे, लेकिन मालिक ने हाथ में सलाख पकड़ रखी थी – उसकी कड़ी मूंछें, यहां तक कि कानों के ऊपरवाले बाल तक खड़े हो गये थे।

"पैसा निकाल, बदमाश, नहीं तो भुनगे की तरह तुझे मसल दूंगा !"

सोने के पांच सिक्कों में से एक सिक्का ढाबे में ख़र्च करना पड़ा। दुखी होकर बुरातीनो तेज़ी से निकल भागा। उसने पलटकर उस बेमुरौवत ढाबे पर नज़र तक न डाली।

रात अंधेरी थी, कालिख जैसा घुप्प अंधेरा था। आसपास सभी सो रहे थे। केवल बुरातीनो के सिर पर रात्रिकालीन चिड़िया धीरे-धीरे उड़ रही थी।

अपने मुलायम पंख से बुरातीनो की नाक छूते हुए वह बार-बार चहकती जा रही थी :

"विश्वास मत करना, मत करना, मत करना !"

बुरातीनो खीजकर ठिठक गया :

"तुझे क्या है ?"

"बिल्ले और लोमड़ी पर विश्वास मत करो ..."

"जा, जा ! भाग जा !"

वह आगे दौड़ गया। उसके कान में पीछे से सुनायी दे रहा था :

"इस रास्ते में डाकुओं से सावधान रहना ..."



बुरातीनो पर डाकुओं का हमला

आकाश के छोर पर हरा-हरा सा प्रकाश दिखलायी पड़ने लगा – चांद निकल रहा था। काला जंगल अब दिखने लगा था।

बुरातीनो ने ज़रा जल्दी क़दम बढ़ाये। कोई उसके पीछे-पीछे तेज़ी से चलने लगा।

बुरातीनो जल्दी-जल्दी दौड़ने लगा। कोई चुपचाप उसके पीछे-पीछे भागने लगा।

उसने पीछे मुड़कर देखा।

कोई दो आकृतियां उसका पीछा कर रही थीं, उनके सिर थैलों से ढके हुए थे जिनमें देखने के लिए दो छेद बने हुए थे।

उनमें से ठिंगने क़दवाले के हाथ में चाकू था, कुछ लम्बे क़दवाले के हाथ में पिस्तौल थी जिसकी नली आगे की ओर चौड़ी थी...

"हाय, हाय!" बुरातीनो ख़रगोश की तरह अंधेरे जंगल में दौड़ पड़ा।

"ठहरो, ठहरो!" डाकू चिल्ला रहे थे।

यद्यपि बुरातीनो बेहद डरा हुआ था, पर उसने ख़तरे का अनुमान लगा लिया था – उसने चारों सिक्के मुंह में डाल लिये और रास्ते से मुड़कर ब्लैकबेरी की झाड़ियोंवाले बाड़े की ओर भागा... लेकिन दोनों लुटेरों ने उसे यहीं पर दबोच लिया...

"बोल – तुझे दौलत प्यारी है या जान?"

बुरातीनो यह न समझने का दिखावा कर रहा था कि वे उससे चाहते क्या हैं, बस जल्दी-जल्दी सांस ले रहा था। डाकू उसका गरेबान पकड़कर डरा-धमका रहे थे, एक ने पिस्तौल तान रखी थी, दूसरा जेब की तलाशी ले रहा था।

"बोल, सोने के सिक्के कहां हैं?" लम्बे क़दवाला चीख़ा।

"दौलत निकाल, शैतान!" ठिंगने क़दवाला फुफकारा। "टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा तेरे!"

इस बीच बुरातीनो भय से कुछ इस तरह कांपने लगा कि उसके मुंह में रखी स्वर्ण मुद्राएं खनखनाने लगीं।

"यहां छिपाये हैं सिक्के!" डाकू चीख़ पड़े, "मुंह में..."

एक ने बुरातीनो का सिर पकड़ा, दूसरे ने टांगें। उसे उछालने लगे। लेकिन उसने कसकर दांत भींच रखे थे।

डाकू उसकी टांगें ऊपर करके उसका सिर ज़मीन से ठकठकाने लगे। लेकिन उस पर इसका कोई असर नहीं पड़ा।

ठिंगने क़दवाला डाकू एक चौड़े चाकू से उसके दांतों को खोलने लगा। लगा कि बस अभी दांत खुल जायेंगे, पर तभी मौक़ा पाकर बुरातीनो ने भरपूर ताक़त से अपने दांत उसके हाथ में गड़ा दिये। लेकिन यह हाथ तो नहीं, बल्कि बिल्ले का पंजा था। लुटेरा चीख़ पड़ा।



तब तक बुरातीनो बचकर बाड़े की ओर निकल भागा, ब्लैकबेरी की कंटीली झाड़ी में छिप गया, उसकी पतलून और जैकेट कांटों में उलझकर फट गई। वह उस पार पहुंचा और जंगल की ओर बेतहाशा भागने लगा।

जंगल के छोर पर डाकुओं ने फिर से उसका पीछा किया। वह तेज़ी से उछला, हिलती हुई डाल को पकड़कर पेड़ पर चढ़ गया। डाकू उसके पीछे-पीछे... लेकिन उन्हें चेहरों पर लगे नकाब के कारण परेशानी हो रही थी।

पेड़ की फुनगी पर चढ़कर बुरातीनो उछला और नज़दीक के पेड़ पर छलांग लगा गया। डाकू उसके पीछे-पीछे...

लेकिन दोनों ही मुंह के बल ज़मीन पर आ गिरे।

इधर वे कराह रहे थे, उधर बुरातीनो पेड़ से उतरा और सिर पर पैर रखकर भागने लगा, उसके पैर इतनी तेज़ी से दौड़ रहे थे कि दिखाई तक न देते थे।



चांदनी रात में पेड़ों की लम्बी-लम्बी परछाइयां दिख रही थीं। समूचा जंगल धारीदार लग रहा था।

बुरातीनो कभी छांह से होकर गुज़रता, कभी उसकी सफ़ेद टोपी चांदनी में चमकती दिखलायी पड़ती थी।

वह झील तक जा पहुंचा। शीशे की तरह चमकती झील के ऊपर चांद चमचमा रहा था, हूबहू कठपुतली थियेटर की तरह!

बुरातीनो दाहिनी तरफ़ बढ़ा – वहां दलदल था। बायीं तरफ़ बढ़ा – वहां भी दलदल था। पीछे की तरफ़ फिर से कड़कड़ाहट हुई।





"पकड़ लो, पकड़ लो उसे!"

डाकू दौड़ते आ रहे थे, वे भीगी घास में ऊंची-ऊंची छलांगें मारते हुए चले आ रहे थे ताकि बुरातीनो पर नज़र रखी जा सके।

"यह रहा!"

बस, पानी में छलांग लगाना ही बाक़ी रह गया था। इसी समय बुरातीनो ने एक सफ़ेद राजहंस को देखा जो झील के किनारे अपनी चोंच को परों में समेटे सो रहा था।

बुरातीनो झील की तरफ़ लपका, डुबकी लगायी और राजहंस को पंजों से पकड़ लिया।

"कें-कें," राजहंस नाराज़ होकर बोला। "यह कैसा असभ्य मज़ाक़ है! मेरे पंजों को छोड़ दो!"

राजहंस ने अपने भारी पंख फैलाये और... डाकुओं ने बुरातीनो की टांगों को पकड़ा ही था कि पंख फड़फड़ाता हुआ राजहंस झील के दूसरे किनारे की तरफ़ उड़ चला।

झील के पार पहुंचकर बुरातीनो ने राजहंस के पंजों को छोड़ दिया, धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा, उठकर खड़ा हुआ और काईदार टीले तथा सरकण्डों को पार करता हुआ विशाल आकारवाले चन्द्रमा की तरफ़ दौड़ने लगा जो पहाड़ी के ठीक ऊपर चमक रहा था।



डाकुओं ने बुरातीनो को पेड़ मे लटकाया

थका हुआ बुरातीनो कठिनाई से चल पा रहा था जैसे पतझड़ की कोई मक्खी हो।

अचानक हेज़लनट की झाड़ी के पीछे उसने एक ख़ूबसूरत मैदान देखा, उसके बीचोंबीच छोटा-सा, चार खिड़कियोंवाला घर था, जो चांदनी में चमक रहा था। झिलमिलियों पर सूरज, चांद और सितारों के चित्र बने हुए थे। आसपास बड़े-बड़े आसमानी रंग के फूल खिले थे।

रास्ते पर साफ़-सुथरी रेत बिछी हुई थी। फ़व्वारे से पतली सी जलधार निकल रही थी, उस पर छोटी सी धारीदार गेंद उछल रही थी।

बुरातीनो हाथ-पैर का सहारा लेकर बरामदे में चढ़ गया। उसने दरवाज़ा खटखटाया। घर के भीतर सन्नाटा था। उसने और ज़ोर से खटखटाया – शायद लोग गहरी नींद में सो रहे हैं।

ठीक इसी समय जंगल से वे डाकू फिर झपटे। उन्होंने तैरकर झील को पार किया था, उनके भीगे शरीर से जल धाराएं बह रही थीं। बुरातीनो को देखते ही ठिंगने क़दवाला डाकू दुष्टता से बिल्ली की तरह फुफकारा जबकि लम्बे क़दवाला लोमड़ी की तरह किकियाया।

बुरातीनो दरवाज़े पर हाथ-पैर मारने लगा :

"बचाओ, बचाओ, भले लोगो!"

तब खिड़की से घुंघराले बालोंवाली एक सुन्दर सी लड़की ने बाहर झांका।

उसकी आंखें बन्द थीं।

"दरवाज़ा खोल दो, बहन! डाकू मेरा पीछा कर रहे हैं!"

"हुं, क्या बकवास है!" ख़ूबसूरत सा मुंह खोलकर जंभाई लेते हुए लड़की ने कहा, "मुझे नींद आ रही है, मैं आंखें नहीं खोल सकती..."

उसने हाथों को ऊपर उठाया, नींदभरी अंगड़ाई ली और खिड़की के पीछे गायब हो गई।

हताश होकर बुरातीनो औंधे मुंह रेत पर गिर पड़ा, जैसे कि वह मर गया हो।

डाकुओं ने छलांग लगायी :

"अहा, अब तू बचकर कहां जायेगा!"

उन्होंने भरसक प्रयत्न किया कि बुरातीनो अपना मुंह खोल दे। अगर उन्होंने चाकू और पिस्तौल न खो दिये होते, तो बेचारे बुरातीनो का यहीं काम तमाम हो जाता।

आख़िरकार डाकुओं ने उसे सिर नीचा करके लटकाने का फ़ैसला किया। उन्होंने उसकी टांगों में रस्सी बांधी और बुरातीनो को बलूत वृक्ष की एक डाल पर लटका दिया। वे वृक्ष के नीचे



भीगी दुम फैलाकर बैठ गये और प्रतीक्षा करने लगे कि कब उसके मुंह से सोने के सिक्के नीचे गिरेंगे।

सुबह तड़के हवा चलने लगी, बलूत वृक्ष की पत्तियां खड़खड़ाने लगीं। बुरातीनो हवा में एक तख़्ती की तरह हिल रहा था। भीगी दुमों पर बैठे-बैठे डाकू उकता गये थे।

"शाम तक लटके रहो, बच्चू," उन्होंने कुढ़ते हुए कहा और किसी ढाबे की तलाश में निकल पड़े।



नीलकेशिनी ने बुरातीनो की जान बचायी

वलूत वृक्ष की शाखाओं के पीछे, जहां बुरातीनो लटका हुआ था, भोर का उजाला फैल गया।

मैदान में घास नीलाभ हो गयी, आसमानी रंग के फूलों की पंखुड़ियों पर ओस की बूंदें जम गयीं।

नीले घुंघराले बालोंवाली लड़की ने फिर खिड़की से बाहर झांका, आंखें मलीं और नींद से बोझिल बड़ी-बड़ी लुभावनी आंखों को खोला।

यह लड़की सिनियोर काराबास बाराबास के कठपुतली थियेटर की सबसे ख़ूबसूरत पुतली थी।

मालिक की अशिष्ट हरकतों से तंग आकर उसने थियेटर छोड़ दिया था और नील उपवन के इस एकान्त नन्हे से घर में रहने लगी थी।

पशु, पक्षी और तरह-तरह के कीट-पतंगे उसे बहुत प्यार करते थे। शायद इसलिये कि वह एक शिष्ट, विनम्र लड़की थी।

वन्य जीव उसके लिए जीवनोपयोगी वस्तुएं जुटाया करते थे।

छछूंदर कन्दमूल लाया करता था। चूहे चीनी, पनीर और सासेज के टुकड़े लाते थे।

वफ़ादार कुत्ता आर्तेमोन रोटियां लाता था।

मैगपाई चिड़िया बाज़ार से चमकीली पन्नियों में लिपटी मीठी-मीठी चाकलेट चुराकर लाती थी।

मेंढक अखरोट के छिलकों में लेमनेड ले आते थे।

बाज़ भुना हुआ शिकार जुटाता था।

गुबरैले तरह-तरह की बेरियां लाते थे।

तितलियां पाउडर के लिए पुष्प पराग संचित करती थीं।

सूंड़ियां दन्त मंजन और दरवाज़े की पॉलिश बनाती थीं।

अबाबील पक्षी घर के आस-पास भुनगे और मच्छरों की सफ़ाई करते थे।

नीलकेशिनी ने आंखें खोलीं, और देखा कि बुरातीनो सामने पेड़ पर सिर के बल लटका हुआ है।

गालों पर हाथ रखकर वह चिल्लायी:

"अरे, अरे, अरे!"

खिड़की के नीचे कान फड़फड़ाते हुए वफ़ादार कुत्ता आर्तेमोन हाज़िर था। उसने अभी थोड़ी देर पहले ही तो अपने बालों की करीने से कांट-छांट की थी, यह उसका नित्य कर्म था। उसके धड़वाले अग्रभाग के छल्लेदार बाल करीने से संवरे हुए थे,





दुम के छोर पर काला फ़ीता वन्धा हुआ था और अगले पंजे पर रुपहली घड़ी।

"हाज़िर हूं!"

आर्तेमोन ने नाक घुमायी और ऊपरी होंठ उठाकर सफ़ेद दांत चमकाये।

"आर्तेमोन! किसी को बुलाओ! बेचारे बुरातीनो को पेड़ से उतारकर घर में लाना और डाक्टर को बुलाना चाहिए," लड़की ने कहा।

"मैं चला!"

आर्तेमोन इस तरह तेज़ी से घूमा कि उसके पिछले पंजों से टकराकर भीगी हुई रेत उड़ चली। वह चींटियों की बांबी की तरफ़ दौड़ गया, उसने भूंक-भूंककर उस बस्ती के सभी जीवों को जगा दिया और चार सौ चींटियों को उस रस्सी को काटने भेज दिया था जिस पर अभागा बुरातीनो बंधा हुआ लटक रहा था।

चार सौ कर्मठ चींटियों की फ़ौज ने कतार बनाकर बलूत वृक्ष पर हमला कर दिया और रस्सी को काट डाला।

बुरातीनो के गिरते ही आर्तेमोन ने उसे अगले पंजों पर लपककर पकड़ लिया और घर ले आया। उसे पलंग पर लिटाकर वह बेतहाशा भागता हुआ जंगल में विलीन हो गया और थोड़ी देर में मशहूर डाक्टर घुग्घू, चिकित्सा सहायिका मेंढकी और हकीम टिड्डामल को भी साथ ले आया जो सूखे तिनके की तरह सींक-सलाई था।

डाक्टर घुग्घू ने बुरातीनो के सीने पर कान लगाकर जांच की।

"मरीज़ दम तोड़ रहा है, उसके बचने की आशा नहीं," डाक्टर घुग्घू फुसफुसाया और अपना सिर पीछे की ओर घुमा लिया।

चिकित्सा सहायिका मेंढकी अपने भीगे पंजे बुरातीनो के शरीर पर देर तक फेरती रही। अपने ख़्यालों में खोयी वह उभरी-उभरी आंखों से चारों तरफ़ देखने लगी। मुंह छपछपाते हुए बोली:

"मरीज़ बच जायेगा। ख़तरा टल चुका है..."

हकीम टिड्डामल ने अपने तिनके जैसे सूखे हाथों से बुरातीनो की नब्ज़ टटोल-टटोलकर देखी :

"दो में से एक ही सम्भावना है : मरीज़ या तो ज़िन्दा है या मर चुका है। अगर वह ज़िन्दा है तो बच जायेगा या फिर दम तोड़ देगा। अगर वह मर चुका है तो उसमें प्राण फूंके जा सकते हैं या फिर नहीं फूंके जा सकते।"

"क्या नीमहकीमी झाड़ रहे हो," घुग्घू ने कहा, कोमल पंख फड़फड़ाये और अंधेरी अटारी पर उड़ गया।

मेंढकी ने कुढ़कर मुंह फुला लिया।

"क्या मूरखता है," मेंढकी टरटर्रायी और पेट छपछपाते हुए सीलनदार तहख़ाने में कूद गयी।

हकीम टिड्डामल ने सूखी टहनी होने का दिखावा किया और खिड़की से बाहर कूद गया।

लड़की ने अपने कोमल-कोमल हाथ झटके और बोली :

"अब इसका इलाज कैसे किया जाये?"

"अण्डी के तेल से," मेंढकी तहख़ाने से टर्र-टर्र करते हुए बोली।

"अण्डी के तेल से!" अटारी पर बैठे डाक्टर घुग्घू ने मेंढकी की नकल उतारते हुए ठहाका लगाया।

"अण्डी का तेल दिया भी जा सकता है और नहीं भी," खिड़की के पीछे से टिड्डामल किटकिटाया।

तब अभागे बुरातीनो ने, जिसके सारे शरीर पर खरोंचें आ गयी थीं और नील पड़े हुए थे, दर्द से कराहते हुए कहा :

"अण्डी के तेल की ज़रूरत नहीं, मेरी तबीयत ठीक है!"

नीलकेशिनी ने बुरातीनो को समझाते हुए कहा :

"मान भी जाओ, बुरातीनो, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं : आंखें मूंद लो, नाक बन्द कर लो और पी जाओ इसे झटपट!"

"मुझे नहीं पीना है, नहीं पीना है, नहीं पीना है!"

"मैं तुम्हें चीनी का डला दूंगी..."

तत्काल पलंग पर एक सफ़ेद चूहा हाज़िर हो गया, वह चीनी का एक डला लाया था।

"सुनो, मेरी बात मान जाओगे तो इसे दूंगी," लड़की ने कहा।

"ला... ली... पाप दीजिये..."

"समझते क्यों नहीं – दवा नहीं पिओगे तो मर जाओगे।"

"अण्डी का तेल पीने से मरना भला..."

तब लड़की सख़्ती से बोली :

"नाक दबाओ और छत की ओर देखो... एक, दो, तीन!"





उसने बुरातीनो के मुंह में दवा उंडेल दी और झट से उसके मुंह में चीनी का डला रख दिया। फिर एक हल्का सा चुम्बन उसके गाल पर जड़ दिया।

"बस ..."

वफ़ादार आर्तेमोन ने लक्ष्य की सफलता से खुश होकर अपनी दुम पकड़ी और खिड़की के नीचे बवण्डर की तरह घूमने लगा, मानो उसके सहस्र पंजे, सहस्र कान और सहस्र चमकदार आंखें हों।



नीलकेशिनी ने बुरातीनो को शिष्टाचार सिखाना चाहा

सुबह बुरातीनो की आंख खुली तो वह प्रसन्न और स्वस्थ था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

नीलकेशिनी बगीचे में एक छोटी-सी मेज़ के सामने बैठी उसका इन्तज़ार कर रही थी। मेज़ पर गुड़ियोंवाले छोटे-छोटे बर्तन रखे हुए थे।

उसने अभी-अभी मुंह धोया था। चेहरे पर ताज़गी थी। उसकी छोटी सी नाक और गालों पर पुष्प पराग मला हुआ था।

बुरातीनो की प्रतीक्षा करते हुए वह तितलियों को भगा रही थी जो सिर पर मंडराती हुई उसे तंग कर रही थीं:

"बस भी करो न अब..."

नीलकेशिनी ने घूमकर लकड़ी के लड़के को सिर से पैर तक देखा और भौंहें सिकोड़ लीं। उससे बैठने के लिए कहा और एक छोटे से प्याले में कोको उंडेल दी।

बुरातीनो एक टांग कुर्सी पर रखकर बैठ गया। बादाम की पेस्ट्रियां वह पूरी की पूरी मुंह में ठूंसने और बिना चबाये ही निगलने लगा। मुरब्बे के बर्तन में उसने उंगलियां डाल दीं और फिर मज़े से उंगलियां चाटने लगा।

लड़की जैसे ही एक अधेड़ उम्र गुबरैले की तरफ़ कुछ टुकड़े फेंकने के लिए मुड़ी तो बुरातीनो ने केतली पकड़ी और उसकी टोंटी में मुंह लगाकर उसमें रखा सारा कोको पी गया।

तभी उसे हिचकी आयी और मेज़पोश पर कोको गिरकर फैल गया।

तब लड़की ने सख़्ती से कहा:

"टांग नीचे करिये और ठीक से बैठिये। हाथ से मत खाइये, खाने के लिए चम्मच और छुरी-कांटे हैं।"

उसने क्रोध से पलकें झपकायीं।

"ज़रा यह तो बताइये कि आपको उठने-बैठने के तौर-तरीके कौन सिखाता है?"

"कभी पापा कार्लो और कभी कोई भी नहीं।"

"अब मैं तुम्हें तौर-तरीके सिखलाऊंगी।"

"लो, ऐसे आती है मुसीबत!" बुरातीनो ने सोचा।

घर के चारों तरफ़ घास के मैदान पर कुत्ता आर्तेमोन दौड़ लगाते हुए छोटी-छोटी चिड़ियों को उड़ा रहा था। जब वे उड़कर पेड़ पर बैठ जातीं, तो वह गर्दन पीछे करके उछलता और गुर्राता।

"क्या मज़े से चिड़ियां उड़ा रहा है!" बुरातीनो को उससे जलन हुई।

शिष्टाचार की जकड़ में बैठे-बैठे उसके सारे शरीर में झुनझुनी फैलने लगी।

अन्त में इस दुखदायी नाश्ते का दौर ख़त्म हुआ। लड़की ने बुरातीनो से कहा कि वह नाक





पर लगा कोको पोंछे। ख़ुद अपने कपड़ों की सलवटें और अपने रिबन उसने ठीक किये और बुरातीनो का हाथ पकड़कर घर के अन्दर ले आयी।

ख़ुशमिज़ाज कुत्ता आर्तेमोन घास पर उछल-कूद करता हुआ भौंक रहा था। चिड़ियां उससे बिल्कुल न डरती थीं, वे ख़ुशी से चहक रही थीं। मन्द-मन्द हवा वृक्षों की फुनगियों को छूती हुई वह रही थी।

"अपने ये चिथड़े उतारिये, अभी आपको अच्छी जैकेट और पतलून मिलेंगी," लड़की ने कहा।

एकान्तप्रिय उदास केकड़ा, भूरी कलगीवाला कठफोड़वा, सींगवाला बड़ा गुबरैला और चुहिया – इन चार दर्ज़ियों ने मिलकर लड़की के पुराने कपड़ों से लड़के के लिए ख़ूबसूरत जैकेट और पतलून सिलकर तैयार कीं। केकड़े ने उसकी नाप लेकर कपड़े काटे, कठफोड़वे ने चोंच से छेद करके कपड़े सिले, गुबरैले ने पिछली टांगों से वंटकर धागे बनाये और चुहिया ने उन्हें कुतरने का काम किया।

लड़की के पुराने कपड़े पहनने में बुरातीनो को शर्म लग रही थी, लेकिन कपड़े तो बदलने ही थे। नाक-भौंह चढ़ाते हुए उसने नयी जैकेट की जेब में सोने के चार सिक्के संभालकर रख लिये।

"अब आप बैठ जाइये, अपने हाथों को सामने रखिये। झुककर मत बैठिये," यह कहकर लड़की ने कुछ लिखने के लिए चाक उठायी। "आज हम लोग गणित का अभ्यास करेंगे... आपकी जेब में दो सेब हैं..."

"झूठ, एक भी नहीं है..."

"मैं कहती हूं मान लीजिये कि आपकी जेब में दो सेब हैं। उनमें से एक सेब किसी ने ले लिया तो आपके पास कुल कितने सेब बचे?"

"दो।"

"फिर से अच्छी तरह सोचिये।"

बुरातीनो ने अक्ल पर इतना ज़ोर डाला कि माथे पर सलवटें उभर आयीं और बोला: "दो..."

"लेकिन कैसे?"

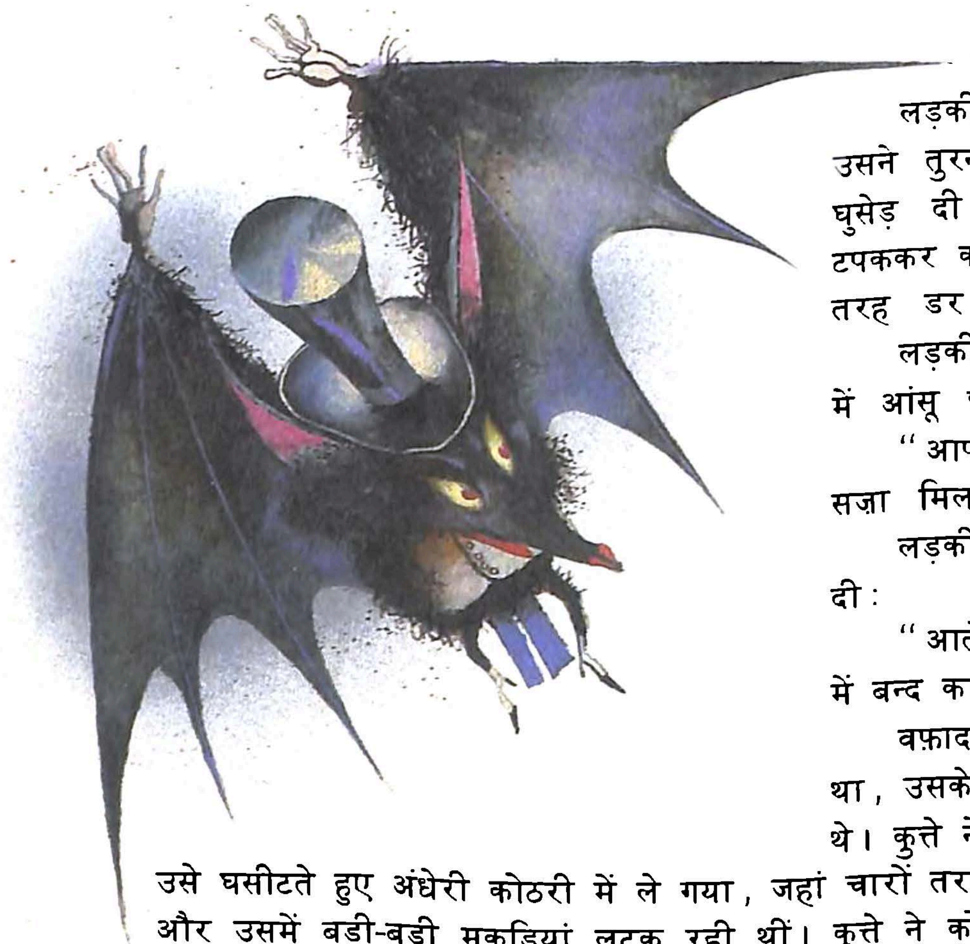
"मैं तो एक भी सेब किसी को नहीं दूंगा। भले ही वह झगड़ा कर ले!"

"गणित तो आपके पल्ले ही नहीं पड़ता। आइये, इमला लिखते हैं," लड़की ने दुखी मन से कहा। उसने अपनी आकर्षक आंखों से ऊपर की तरफ़ देखते हुए कहा:

"हां, तो लिखिये: 'और गुलाब अज़ोर के पंजे पर गिर पड़ा।' लिख लिया? अब इस वाक्य को पढ़िये।"

हम यह जानते हैं कि बुरातीनो ने अपने छोटे से जीवन काल में क़लम-दवात देखी तक नहीं थी।





लड़की ने कहा: "लिखिये," – और उसने तुरन्त अपनी नाक दवात के अन्दर घुसेड़ दी। जब उसकी नाक से स्याही टपककर कागज़ पर फैल गयी तो वह बुरी तरह डर गया।

लड़की ने हाथ झटके, उसकी आंखों में आंसू छलछला आये:

"आप गंदे शरारती बच्चे हैं, आपको सज़ा मिलनी चाहिए!"

लड़की ने खिड़की से झांककर आवाज़ दी:

"आर्तेमोन, बुरातीनो को अंधेरी कोठरी में बन्द कर दो!"

वफ़ादार आर्तेमोन ड्योढ़ी पर हाज़िर था, उसके चमकीले दांत दिखलायी पड़ रहे थे। कुत्ते ने बुरातीनो की जैकेट पकड़ी और उसे घसीटते हुए अंधेरी कोठरी में ले गया, जहां चारों तरफ़ मकड़ी का जाल फैला हुआ था और उसमें बड़ी-बड़ी मकड़ियां लटक रही थीं। कुत्ते ने कोठरी में ताला लगाया, बुरातीनो को डराने के लिये गुर्राया और पुनः चिड़ियों के पीछे दौड़ गया।

लड़की गुड़ियोंवाले निवाड़ के पलंग पर जा गिरी और फूट-फूटकर रोने लगी। वह इस बात पर दुखी थी कि उसे कठबबुए के साथ इतनी सख़्ती से पेश आना पड़ा। लेकिन जब उसे शिक्षित करने और शिष्टाचार सिखाने की उसने ठानी है तो यह काम उसे पूरा करना ही है।

इधर बुरातीनो अंधेरी कोठरी में बड़बड़ा रहा था:

"बेवकूफ़ कहीं की ... बड़ी आयी तमीज़ सिखानेवाली ... इसकी अपनी तो खोपड़ी चीनी मिट्टी की है और शरीर में भूसा ही भूसा भरा हुआ है ..."

कोठरी में चीं-चीं की महीन आवाज़ सुनायी दी जैसे कोई नन्हे-नन्हे दांत पीस रहा हो:

"सुनो, सुनो ..."

बुरातीनो ने स्याही से काली हुई अपनी नाक ऊपर उठायी और छत से नीचे की तरफ़ सिर लटकाये चमगादड़ को देखा।

"क्या बात है?"

"बस, रात होने तक इन्तज़ार करो, बुरातीनो।"

"ख़ामोश, ख़ामोश, हमारे मकड़जाल को मत हिलाओ, हमारी मक्खियों को डराकर मत भगाओ ..." कोनों से मकड़ियों की आवाज़ें सुनायी दीं।



बुरातीनो ने एक टूटे हुए घड़े पर बैठकर गालों पर अपने हाथ टिका लिये। मुसीबतें तो वह इससे कहीं बड़ी देख चुका था, उसे गुस्सा बस अन्याय पर आ रहा था।

"ऐसे भी क्या बच्चों को शिष्टाचार सिखाया जाता है? यह तो यातना है, शिष्टाचार और तौर-तरीका सिखाने जैसी बात नहीं... ऐसे मत बैठो, ऐसे मत खाओ... अभी क ख ग सीखा नहीं, लिखने के लिए दवात पकड़ा दी... कुत्ता तो मज़े से चिड़ियां उड़ा रहा है – उसे क्या..."

चमगादड़ फिर से चिचियाया:

"रात होने तक इन्तज़ार करो, मैं तुम्हें अपने साथ मूरखनगरी में ले चलूंगा, वहां तुम्हारे मित्र – बिल्ला और लोमड़ी, खुशियां और सौभाग्य तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं। बस, रात होने तक प्रतीक्षा करो।"



बुरातीनो मूरखनगरी में पहुंचा

नीलकेशिनी कोठरी के दरवाज़े पर आकर बोली :

"बुरातीनो, मेरे दोस्त, अब तो अपनी ग़लती मान लीजिये।"

वह बहुत नाराज़ था और फिर उसका ख़्याल कुछ और ही था :

"हुं, बड़ी ज़रूरत पड़ी है न!"

"तब तो सुबह तक कोठरी में ही बन्द रहना पड़ेगा..."

लड़की ने दुखी मन से गहरी सांस ली और वहां से चली गयी।

रात हो गयी। कोठरी में उल्लू ने ठहाका लगाया, मेंढकी तहख़ाने से रेंगकर बाहर निकल आयी, ताकि वह डबरों में चांद के प्रतिबिंब पर छपाका लगाने का सुख उठा सके।

लड़की अपने पलंग पर सो गयी और नींद में देर तक दुखभरी हिचकियां लेती रही।

आर्तेमोन अपनी दुम में नाक गड़ाये उसके शयनकक्ष के दरवाज़े पर ही सो रहा था।

घर की दीवारघड़ी ने बारह बजाये। आधी रात हो गयी।

चमगादड़ छत से नीचे उतर आया :

"चलो, चलने का समय हो गया! उधर कोने में चूहों ने तहख़ाने से कोठरी में आने का रास्ता बना रखा है। मैं बाहर तुम्हारा इन्तज़ार करूंगा!"

वह रोशनदान के रास्ते बाहर उड़ गया। मकड़ियों के जालों में उलझता हुआ बुरातीनो कोठरी के कोने की तरफ़ लपका। उसके पीछे मकड़ियां क्रोध से फुफकारने लगीं।

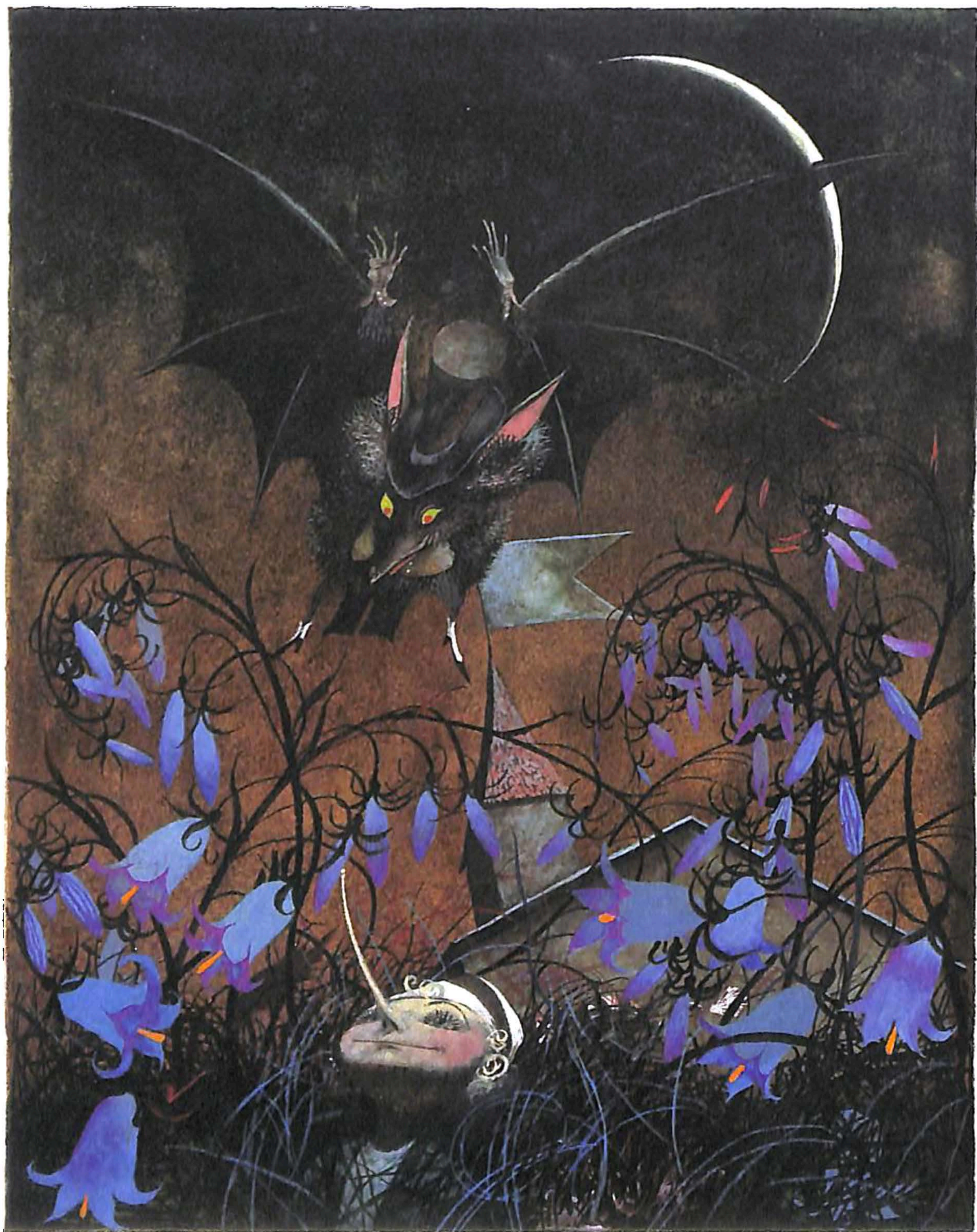
बुरातीनो चूहों के रास्ते से तहख़ाने से निकलने लगा। रास्ता संकरा ही संकरा होता जा रहा था। जैसे-तैसे बुरातीनो आगे बढ़ रहा था... अचानक वह सिर के बल तहख़ाने में जा गिरा।

वहां वह चूहेदानी में फंसते-फंसते बचा, कि अभी-अभी रसोई में दूध पीकर आये एक सांप की दुम पर उसने पैर रख दिया, और आख़िर तहख़ाने में बिल्लियों के आवागमन के रास्ते से बाहर निकल गया।

आसमानी फूलों के ऊपर चमगादड़ धीरे-धीरे उड़ रहा था।

"चलो, बुरातीनो, मेरे पीछे-पीछे मूरखनगरी की ओर बढ़ते चलो!"

चमगादड़ों के दुम नहीं होती, इसलिए ये पक्षियों की तरह सीधा नहीं उड़ पाते, बल्कि अपने झिल्लीदार पंखों की मदद से ये ऊपर-नीचे उड़ते हुए रास्ता तय करते हैं। उनका मुंह



हमेशा खुला रहता है, ताकि उड़ते-उड़ते जो भी मच्छर और पतंगा मुंह में पड़ें उन्हें निगलता जाये।

बुरातीनो उसके पीछे-पीछे कन्धों तक ऊंची घास के मैदान में दौड़ रहा था, भीगी हुई तिपतिया घास उसके गालों से टकरा रही थी।

अचानक चमगादड़ गोल-गोल चांद की ओर सीधा उड़ा और वहां से चिल्लाया :

"ले आया!"

ऐन इसी क्षण बुरातीनो खड़ी चट्टान से कलाबाज़ी खाते हुए तेज़ी से लुढ़का। वह लुढ़कते-लुढ़कते भाड़-भंखाड़ में जा गिरा।

उसके सारे शरीर पर खरोंचें आ गयी थीं, मुंह में धूल भर गयी थी और आंखें फटी-फटी रह गयी थीं।

"बाप रे!" उठते हुए वह बोला और तभी देखता क्या है कि उसके सामने बिल्ला बज़ीलिओ और लोमड़ी अलीसा खड़े हैं।

"बहादुर, जांबाज़ बुरातीनो सीधा आसमान से यहां टपका है," लोमड़ी ने कहा।

"कमाल है, बच कैसे गया," खिन्न होकर बिल्ले ने कहा।

बुरातीनो अपने पुराने परिचितों को देखकर खुश हुआ हालांकि उसे यह अजीब लगा कि बिल्ले के दायें पंजे पर कपड़ा लिपटा हुआ है और लोमड़ी की सारी दुम कीचड़ में सनी हुई है।

"बुराई में भी कुछ न कुछ भलाई होती है – गिरे तो, पर देखो मूरखनगरी में पहुंच गये..." लोमड़ी ने कहा और अपने पंजे से एक छोटी सी सूखी नदिया पर बने टूटे पुल की ओर इशारा किया। नदिया के दूसरे किनारे पर कूड़े के ढेरों के बीच छोटे-छोटे खस्ताहाल मकान और टूटी शाखाओंवाले मुरभाये-मुरभाये पेड़ दिखायी दे रहे थे।

"इस नगरी में तुम्हें अपने पापा कार्लो के लिए ख़रगोश की खाल की बढ़िया जैकेट मिलेगी," होंठों पर जीभ फेरते हुए लोमड़ी कह रही थी। "सुन्दर-सुन्दर चित्रों से भरपूर ककहरे भी यहां पर हैं... अहा, कैसी मीठी-मीठी कचौड़ियां और बढ़िया-बढ़िया लालीपाप बिकते हैं यहां! अरे हां, तू ने सिक्के तो संभालकर रखे हैं न?"

लोमड़ी अलीसा ने उसे खड़े होने में मदद दी, अपने पंजे से उसकी जैकेट भाड़कर साफ़ की और उसे अपने साथ लेकर टूटे-फूटे पुल के उस पार चल दी।

पीछे-पीछे बिल्ला बज़ीलिओ उदास मन से डगमगाता हुआ चल रहा था।

आधी रात हो चुकी थी, लेकिन मूरखनगरी में अब तक सभी जाग रहे थे।

गंदी टेढ़ी-मेढ़ी गली में मरियल कुत्ते दर-दर भटक रहे थे। उनके सारे बदन पर गोखरू उलभे हुए थे और वे भूख से बेहाल होकर जंभाइयां ले रहे थे :

"हा-य-य!"

नुचे हुए बालोंवाली बकरियां फ़ुटपाथ पर धूलसनी घास चर रही थीं और अपनी कटी दुमें हिला रही थीं।





"मैं-एं-म-अ-अ-री!"

हड्डियों का ढांचा बनी गाय सिर भुकाये खड़ी थी।

"आ-आ-ह..." वह रह-रहकर रंभा उठती थी।

नुचे-खुचे पंखोंवाली गौरैयां कूड़े के ढेरों पर बैठी हुई थीं–वे उड़ती ही नहीं थीं, चाहे कोई उन्हें रौंद ही डाले।

भूख से बेहाल नुची दुमवाली मुर्गियां लड़खड़ाती जा रही थीं।

लेकिन चौराहों पर तिकोनी टोपी लगाये बुलडाग-पुलिस तैनात थी। बुलडागों के गले पर विशेष क़िस्म के कांटेदार पट्टे कसे हुए थे।

वे भूखे, रूखे और खुजली से तंग राहगीरों पर भौंक रहे थे:

"आगे बढ़ो, आगे! सीधे चलो! चलते जाओ!"

लोमड़ी बुरातीनो को घसीटती हुई आगे बढ़ चली। चांदनी रात में उन्होंने सुनहरा चश्मा लगाये बिल्लों को देखा, जो बिल्लियों के साथ बांहों में बांहें डालकर चहलक़दमी कर रहे थे।

इस नगरी के गवर्नर लोमड़ साहब शान से नाक ऊंची उठाये टहल रहे थे। बगल में उनके साथ-साथ लोमड़ी साहिबा गर्व से तनकर चल रही थीं, वह अपने हाथ में बनफ़शा पुष्प लिये थीं।

लोमड़ी अलीसा फुसफुसायी:

"देखो, इन सब लोगों ने अपनी दौलत चमत्कारों के मैदान में बोयी थी। आज बोवाई की अन्तिम रात है। सुबह ढेरों दौलत बटोर लेना और फिर मज़े से तरह-तरह की चीज़ें ख़रीदना... आओ, जल्दी-जल्दी चलते हैं..."

लोमड़ी और बिल्ला बुरातीनो को साथ लेकर एक खाली मैदान में पहुंचे, जहां टूटे-फूटे बर्तन, फटे-पुराने जूते और चिथड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे... एक दूसरे की बात काटते हुए वे जल्दी-जल्दी कहने लगे:

"गड्ढा खोदो!"

"सोने के सिक्के गाड़ दो!"

"नमक डाल दो!"

"अच्छी तरह पानी दो!"

"और हां, 'अन्तर, मन्तर, छूमन्तर' ज़रूर कहना, भूलना मत, समझे!"

बुरातीनो ने नाक खुजलायी जो स्याही लगने से मैली हो गयी थी।

"ज़रा हट जाओ तुम दोनों..."

"अरे भाई, हम तुम्हारी दौलत देखने नहीं आये हैं!" लोमड़ी ने कहा।

"तौबा-तौबा!" बिल्ला बोला।

वे दोनों थोड़ी दूर जाकर कूड़े के ढेर के पीछे छिप गये।

बुरातीनो ने गड्ढा खोदा, तीन बार धीरे-धीरे "अन्तर, मन्तर, छूमन्तर" कहा, फिर गड्ढे के अंदर सोने के चार सिक्के रख दिये। जेब से चुटकी भर नमक निकाला और उसे ऊपर से छिड़क दिया। डबरे से पानी लेकर डाल दिया।

और इस प्रतीक्षा में बैठ गया कि कब दौलत का पेड़ उगेगा ...



पुलिस ने बुरातीनो को पकड़ा और अपनी सफ़ाई में कुछ बोलने न दिया

लोमड़ी अलीसा ने सोचा कि बुरातीनो सोने चला जायेगा, लेकिन वह तो आराम से नाक ऊपर उठाये कूड़े के ढेर पर जमकर बैठा हुआ था।

तब अलीसा ने बिल्ले से चौकसी रखने को कहा और ख़ुद पुलिस थाने की ओर दौड़ गयी।

वहां सिगरेट के धुएं से भरे हुए कमरे में स्याही के धब्बों से भरी मेज़ के सामने कुर्सी पर बैठा हवलदार बुलडाग ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहा था।

लोमड़ी ने चापलूसी करते हुए कहा:

"श्रीमान हवलदार साहब, एक आवारा चोर को पकड़ना चाहिए! इस नगरी के सभी सम्मानित नागरिकों के सिर पर भयंकर ख़तरा मंडरा रहा है।"

नींद टूटते ही पुलिस हवलदार साहब इतनी ज़ोर से गुर्राये कि लोमड़ी डर के मारे थरथर कांपने लगी।

"चोर! भौं-भौं!"

लोमड़ी ने बताया कि बुरातीनो नाम का एक ख़तरनाक अपराधी कूड़े के ढेर से बरामद किया जा सकता है।

हवलदार बुलडाग ने गरजते हुए घण्टी बजायी। झट से वहां दो कुत्ते हाज़िर हो गये। ये दोनों डाबरमैन-पिन्चर थे। ये जासूस कुत्ते दिन-रात चौकस रहते, न कभी सोते, न किसी का विश्वास करते और ख़ुद पर भी शक करने में न चूकते।



हवलदार बुलडाग ने आदेश दिया कि वे तुरन्त ख़तरनाक अपराधी को ज़िन्दा या मुर्दा पकड़कर थाने में हाज़िर करें।

जासूस कुत्तों ने छोटा सा उत्तर दिया:

"भौं-भौं!"

और वे अपनी सधी हुई चाल से मैदान की ओर सरपट दौड़ चले।

आख़िरी सौ क़दम वे पेट के बल रेंगकर चले और यक़ायक़ बुरातीनो पर टूट पड़े, उसे पकड़ लिया और घसीटते हुए थाने की ओर चल दिये।





बुरातीनो पैर मारते हुए गिड़गिड़ाकर कह रहा था :

"किसलिए पकड़कर ले जा रहे हैं? आख़िर मेरा कसूर क्या है?"

लेकिन जासूसों ने दो टूक जवाव दिया: "चुपचाप चले चलो, थाने पर ही फ़ैसला किया जायेगा ..."

उधर लोमड़ी और विल्ले ने मौक़ा चूके वग़ैर सोने के चारों सिक्के ज़मीन से खोदकर निकाल लिये। लोमड़ी ने चटपट हिस्सा बांट भी कर दिया। विल्ले के हिस्से में बस एक सिक्का आया और लोमड़ी ने तीन सिक्के हथिया लिये।

बिल्ले ने आव देखा न ताव अपना भरपूर पंजा उसकी थूथनी पर दे मारा।

लोमड़ी ने उसे कसकर अपने पंजे में दबोच लिया। और चांदनी रात में वे दोनों गुत्थम-गुत्था होते रहे, लुढ़कते रहे। लोमड़ी और बिल्ले के बालों के गुच्छे चारों ओर हवा में उड़ते रहे।

फिर उन्होंने सुलह करने के बाद वरावर-बराबर सिक्के बांट लिये और उसी रात मूरखनगरी से कहीं ग़ायब हो गये।

इस बीच बुरातीनो को थाने में हाज़िर किया गया।

हवलदार बुलडाग मेज़ के पीछे से निकलकर उसके पास आया और उसकी जेबों की तलाशी लेने लगा।

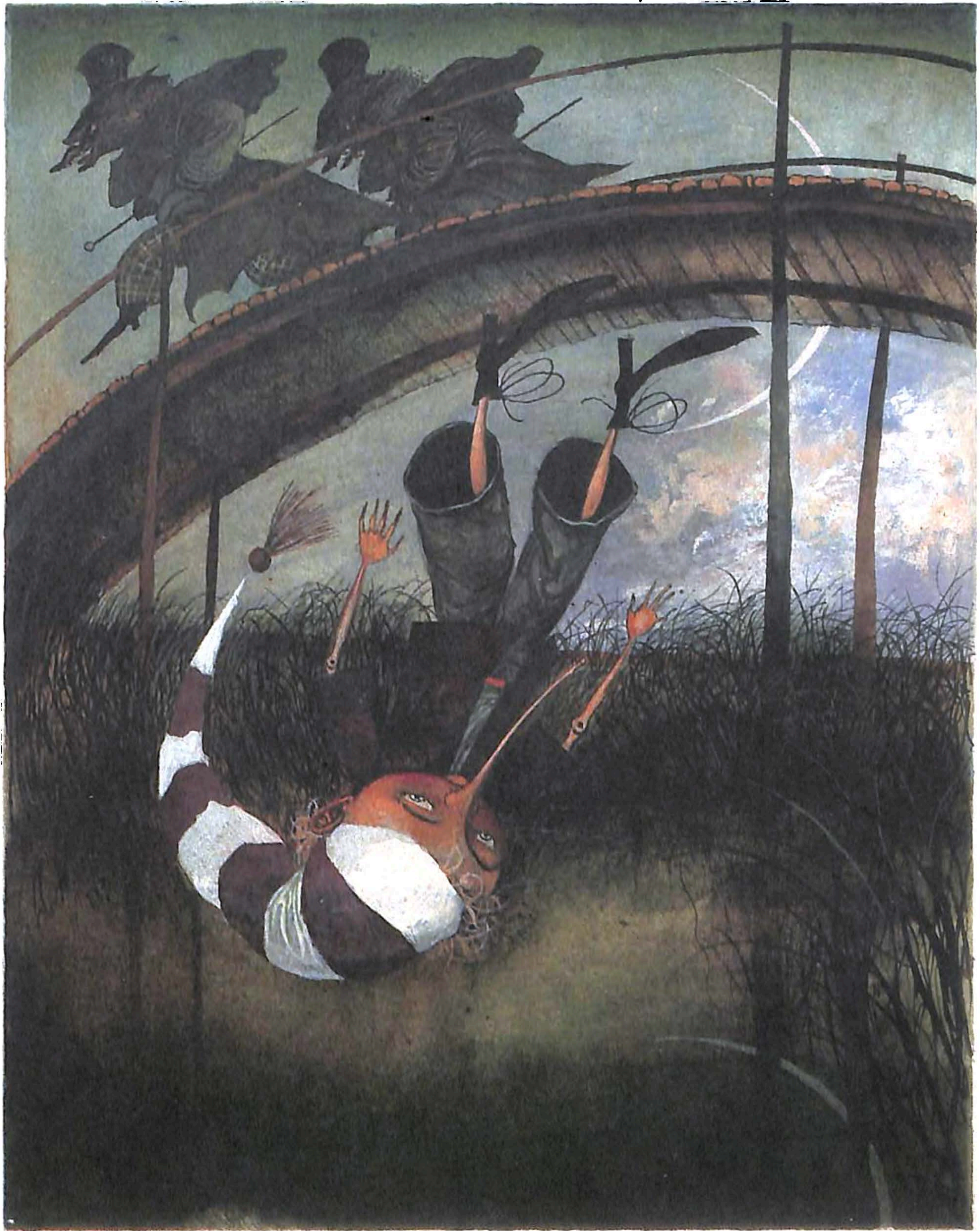
लेकिन उसकी जेब से मीठे-मीठे लालीपाप और बादाम की पेस्ट्री के छोटे-छोटे टुकड़ों के अलावा कुछ भी बरामद न हुआ। खून का प्यासा हवलदार गरजा :

"बदमाश, तूने तीन अपराध किये हैं: एक तो तू आवारा है, दूसरे – तेरा पहचान-पत्र गायब है और तीसरे – तू निठल्ला बेरोज़गार है। इसे नगरी के बाहर ले जाओ और तालाब में डुबो दो।"

जासूस कुत्तों ने उत्तर दिया: "भौं-भौं!"

बुरातीनो पापा कार्लो के बारे में बतलाना चाहता था, अपनी आपबीती सुनाना चाहता था। लेकिन वहां कोई सुने तब न! जासूसों ने उसे पकड़ा और घसीटते हुए नगरी के बाहर जा पहुंचे। फिर देखते ही देखते उन्होंने बुरातीनो को एक गहरे गन्दे तालाब में फेंक दिया जो मेंढकों, जोंकों और तरह-तरह के कीड़े-मकोड़ों तथा कीट डिम्बों से पटा पड़ा था।

बुरातीनो पानी में पड़ा तैरता रहा, तालाब की सतह पर हरी-हरी काई फैल गयी।



बुरातीनो का तालाब के निवासियों से परिचय, सोने के सिक्कों की चोरी का रहस्य खुला, बूढ़े कछुए ने सोने की चाबी दी



यह मत भूलो कि बुरातीनो लकड़ी का बना हुआ था और इस कारण वह डूब नहीं सकता था। वह इतना डर गया कि देर तक पानी में चुपचाप पड़ा रहा, उसका सारा शरीर हरी-हरी काई से लथपथ हो गया था।

उसके चारों तरफ़ तालाब के निवासी इकट्ठे हो गये: मूर्खता के लिए सरनाम काले-काले भारी पेटवाले मेंढकों के बच्चे, चप्पू जैसी पिछली टांगोंवाले जलकीट, जोंकें और तरह-तरह के कीड़े-मकोड़े।

मेंढकों के बच्चे अपने कठोर होंठों से उसे गुदगुदा रहे थे और उसकी टोपी का फुन्दना ख़ुशी से चबाये जा रहे थे। जोंकें उसकी जैकेट की जेब में रेंग-रेंगकर चढ़ी जा रही थीं। एक जलकीट कई बार उसकी नाक पर चढ़ा और वहां से पानी में कूदा।

नन्हे-नन्हे जलकीट रेंगते और जल्दी-जल्दी हाथ-पैर नुमा अपने रोएं कंपकंपाते हुए आगे बढ़ते जाते, वे इस कोशिश में थे कि खाने की कोई चीज़ हाथ लग जाये। पर वे ख़ुद ही बहुसंख्य छोटे-छोटे जलकीटों के लार्वा का शिकार बन जाते।

बुरातीनो आख़िर इस सबसे तंग आ गया और पानी पर अपनी एड़ियां मारने लगा:

"अरे, भागो यहां से! मैं कोई मरी हुई बिल्ली नहीं!"

तालाब के निवासी सकपकाकर तितर-बितर हो गये। बुरातीनो ने करवट बदली और तैरता हुआ आगे बढ़ चला।

जल कुमुदनी की गोलाकार पत्तियों पर बड़े-बड़े मुंहवाले मेंढक बैठे हुए थे, वे अपनी उभरी-उभरी आंखों से बुरातीनो को देख रहे थे।

"देखो, कैसा बेढब जानवर तैरता आ रहा है," एक टर्राया।







"नाक तो बगुले की चोंच जैसी है," दूसरा टर्राया।

"शायद समुद्री मेंढक है," तीसरा टर्राया।

बुरातीनो थोड़ा दम लेने के लिए जल कुमुदनी के एक बड़े से पत्ते पर चढ़ गया, घुटनों को मज़बूती से पकड़कर बैठ गया और दांत किटकिटाते बोला :

"सभी नन्हे-मुन्ने अपने-अपने घरों में दूध पीकर नरम-नरम विस्तर पर सो रहे हैं, अकेला मैं ही इस भीगे हुए पत्ते पर बैठा हूं... मेंढको-मेंढको, खाने को कुछ दे दो!"

मेंढकों की खाल ज़रूर चिकनी होती है, लेकिन यह मत सोचना कि वे बेरहम होते हैं। जब बुरातीनो दांत किटकिटाते हुए अपनी दुखद आपबीती सुनाने लगा तब एक के बाद एक सभी मेंढक उछले और तालाब के तल पर गोता लगा गये।

वहां से वे मृत जलकीट, टिड्डे के पंख, काई के गुच्छे, केकड़े के अण्डे और कुछ सड़ी-गली जड़ें ले आये।

ये सारी खाने की चीज़ें बुरातीनो के सामने रखकर मेंढक फिर से उछले और जल कुमुदनी के पत्तों पर चढ़ गये। मुंह ऊपर उठाये, उभरी-उभरी आंखोंवाले पत्थर के बुत बने बैठ गये।

बुरातीनो ने मेंढकों का यह भोजन सूंघकर देखा, फिर थोड़ा सा चखा।

"मुझे तो मतली आ रही है। छी, कैसी गंदी चीज़ें हैं..."

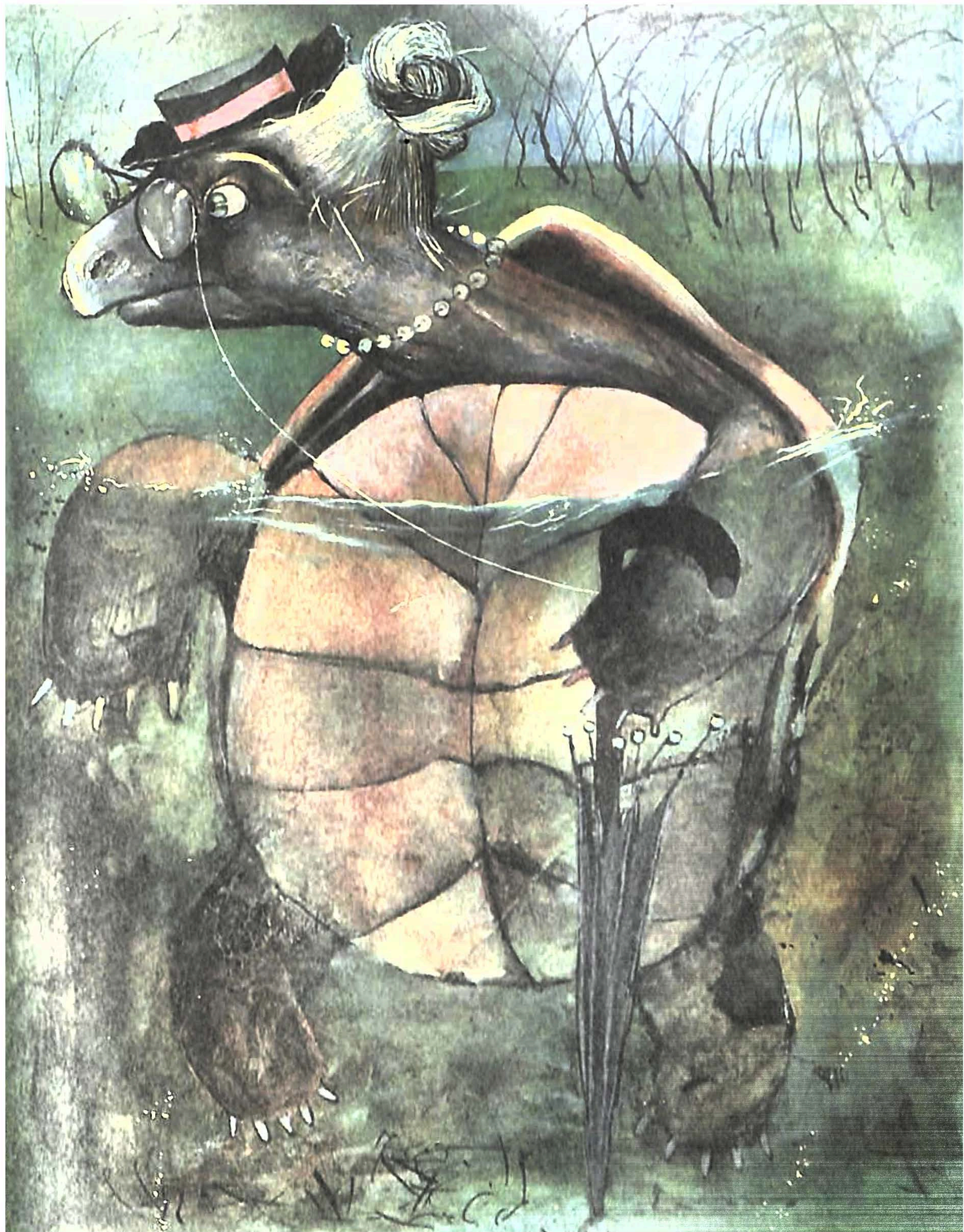
तब फिर वे मेंढक एकसाथ छपाक की आवाज़ करते हुए तालाब में कूद गये।

तालाब की ऊपरी सतह पर फैली हरी-हरी काई हिलने लगी और उसमें से सांप का डरावना सिर ऊपर उठा। वह उस पत्ती की ओर बढ़ा जहां बुरातीनो बैठा हुआ था।

बुरातीनो की तो टोपी के भी रोयें खड़े हो गये। डर के मारे वह पानी में लुढ़कते-लुढ़कते बचा।

लेकिन यह सांप न था। यह एक सीधा-सादा, चुंधी-चुंधी आंखोंवाला कूबर नाम का बूढ़ा कछुआ था।

"अरे मूर्ख, बिना सोचे-समझे दूसरों का विश्वास करनेवाले नासमझ लड़के! तुझे घर पर रहकर पढ़ना-लिखना चाहिये था! लेकिन तू यहां मूरखनगरी में आ फंसा!"



"मैं तो पापा कार्लो के लिए ढेर सारे सोने के सिक्के हासिल करना चाहता था। मैं एक बहुत नेकदिल और अच्छा बच्चा हूं..."

"तेरे सोने के सिक्के लोमड़ी और बिल्ले ने मिलकर चुरा लिये हैं। वे तालाब के पास से होकर भाग रहे थे, ज़रा देर पानी पीने के लिए रुके तो मैंने उन्हें डींगें मारते सुना कि कैसे उन्होंने तेरी दौलत खोदकर निकाल ली और कैसे आपस में लड़े भी थे... अरे मूर्ख, बिना सोचे-समझे दूसरों का विश्वास करनेवाले नासमझ लड़के!"

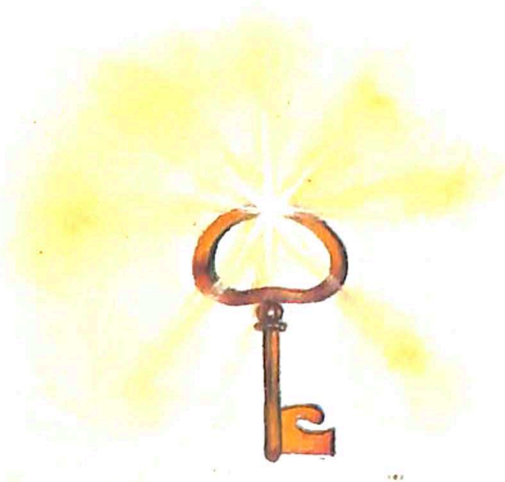
"ऐसे में डांटना-डपटना नहीं, आदमी की मदद करनी चाहिये! हाय, अब मैं क्या करूं? हाय-हाय-हाय! अब मैं पापा कार्लो को क्या मुंह दिखाऊंगा? हाय-हाय!"

मुट्ठी से आंखें मलते हुए वह इतना दुखी होकर ठिनक रहा था कि सारे मेंढकों ने भी एकसाथ आह भरी। वे बुजुर्ग कछुए से बोले:

"कछुए दादा, इस भले आदमी की मदद कर दो न!"

कछुआ कूबर देर तक चांद को निहारता रहा, कुछ याद करता रहा।

"ऐसे ही मैंने एक बार एक आदमी की सहायता की थी और उसने ही मेरे दादा-दादी को पकड़कर उनकी खोपड़ी से कंघियां बना डालीं," कछुआ कूबर बोला। और फिर से देर तक चांद की ओर ताकता रहा। "खैर, तू यहां बैठ, मैं गोता लगाता हूं। शायद एक काम की चीज़ मिल जाये।"



उसने अपनी लम्बी सर्पाकार गर्दन समेटी और आहिस्ता-आहिस्ता पानी में उतरने लगा।

मेंढक आपस में फुसफुसाकर कह रहे थे:

"बूढ़ा कछुआ एक बहुत बड़ा भेद जानता है।"

काफ़ी समय बीत गया।

चांद पहाड़ी की ओर ढलने लगा था...

फिर तालाब की ऊपरी सतह पर फैली हरी-हरी काई कम्पन से हिल उठी, कछुआ कूबर अपने मुंह में एक छोटी-सी सोने की चाबी लिये ऊपर आ पहुंचा। बुरातीनो के पांव पर चाबी रखकर वह बोला:

"ओ मूर्ख, बिना सोचे-समझे दूसरों का विश्वास करनेवाले नासमझ लड़के! लोमड़ी और बिल्ले ने साज़िश करके तेरे सोने के सिक्के चुरा लिये हैं, इसका अफ़सोस मत कर। मैं तुझे यह चाबी दे रहा हूं। लम्बी दाढ़ीवाले एक आदमी से यह चाबी तालाब में गिर गयी थी, वह अपनी बेशुमार लम्बी दाढ़ी को जेब में ठूंसकर रखता था ताकि वह चलने-फिरने में कोई अड़चन न डाले। आह, इस चाबी को ढूंढने के लिए उसने कितनी-कितनी बार मेरी मिन्नतें की थीं!"

कछुआ कूबर गहरी सांस लेकर ख़ामोश हो गया और फिर उसने इस तरह आह भरकर सांस ली कि पानी से बुलबुले उठने लगे।

"लेकिन मैंने उसकी कोई सहायता नहीं की, मुझे आदमज़ाद से ही नफ़रत हो गयी थी। आखिर आदमी ने ही तो मेरे दादा-दादी की हत्या करके उनकी खोपड़ी से कंघियां बना डाली थीं। दाढ़ीवाले उस आदमी ने इस चाबी के बारे में तब बहुत सी बातें बतलायी थीं, लेकिन वह सब मुझे याद नहीं रहा। बस इतना ही याद है कि इस चाबी से किसी दरवाज़े का ताला खोलना चाहिए और तब ख़ुशियां ही ख़ुशियां मिलेंगी।"

बुरातीनो का दिल धक-धक करने लगा, आंखें चमकने लगीं। वह अपने दुख को भूल गया। उसने जैकेट के जेब से जोंकों को झटककर बाहर किया, चाबी को बहुत सहेजकर जेब में रख लिया, फिर उसने सम्मान के साथ बुजुर्ग कछुए कूबर और मेंढकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की, पानी में कूद गया और किनारे की ओर तैरने लगा। जब काली छाया तट पर दिखलायी दी तो मेंढकों ने मद्धिम किन्तु स्पष्ट आवाज़ में पीछे से कहा:

"बुरातीनो, देखो, चाबी को संभालकर रखना!"



बुरातीनो का मूर्खों के देश से निकल भागना और दुख के साथी से मिलना

बूढ़े कछुए ने मूरखनगरी से निकल भागने का रास्ता नहीं बतलाया था।

बुरातीनो की जिधर नज़र गयी वह उधर ही दौड़ चला। काले-काले वृक्षों के पीछे तारे टिमटिमा रहे थे। रास्ते के अगल-बगल चट्टानें उठी हुई थीं। तंग पहाड़ी रास्ते पर धुंधले बादल छाये हुए थे।

अचानक बुरातीनो के आगे एक भूरे पिण्ड सा कुछ उछला। ठीक इसी वक़्त कुत्ते भौंकने लगे।

बुरातीनो एक चट्टान से सट गया। उसके पास से दो पुलिस बुलडाग तेज़ी से गुज़रे।

भूरा पिण्ड तेज़ी से रास्ते को पार कर ढलान की ओर बढ़ गया। बुलडाग उसका पीछा कर रहे थे।

जब कुत्तों की धम-धम और उनके भूंकने की आवाज़ दूर चली गयी, तो बुरातीनो सिर पर पैर रखकर भागा। वह इतनी तेज़ी से दौड़ रहा था कि पेड़ की काली-काली शाखाओं के पीछे तारे तक भागते नज़र आ रहे थे।

फिर उस भूरे पिण्ड ने छलांग लगाकर दुबारा रास्ता पार किया। बुरातीनो ने देखा कि यह एक ख़रगोश है और उसकी पीठ पर उसके दोनों कान पकड़कर पीले चेहरेवाला एक नन्हा आदमी बैठा हुआ है।

ढलानदार रास्ते पर पत्थर लुढ़के – बुलडागों ने ख़रगोश का पीछा करते हुए छलांग लगाकर रास्ता पार किया और फिर से चारों ओर ख़ामोशी छा गयी।

बुरातीनो इस तरह बेतहाशा भाग रहा था कि काली-काली शाखाओं के पीछे वे ही तारे अब भयंकर गति से दौड़ते लग रहे थे।

तीसरी बार भूरे ख़रगोश ने छलांग लगाकर रास्ता पार किया। उस नन्हे आदमी का सिर डाल से टकराया और वह ख़रगोश की पीठ से लुढ़ककर सीधे बुरातीनो के पैरों में आ गिरा।

"भौं-भौं! पकड़ लो उसे!" ख़रगोश का पीछा करते पुलिस बुलडाग भागते आ रहे थे, उनकी गुस्सैल आंखें अंगारे बरसा रही थीं, उन्होंने न तो बुरातीनो को देखा और न पीले आदमी को ही।

"अलविदा, मलवीना! सदा-सदा के लिए अलविदा!" रोनी आवाज़ में वह नन्हा आदमी मिनमिनाया।

बुरातीनो उस पर झुका और उसने हैरानी से देखा कि लम्बी-लम्बी बांहोंवाली सफ़ेद कमीज़ पहने यह कोई और नहीं पियेरो ही था।

वह पहियों से बनी लीक में औंधे मुंह लुढ़क पड़ा था, ख़ुद को मरा हुआ समझ बैठा



था, इसीलिए यह रहस्यपूर्ण वाक्य उसने मिनमिनाया था :

"अलविदा, मलवीना! सदा-सदा के लिए अलविदा!"

बुरातीनो ने उसे झकझोरा, उसकी टांग खींची – लेकिन पियेरो बिना हिले-डुले पड़ा रहा। तब बुरातीनो ने अपनी जेब में पड़ी हुई एक जोंक को ढूंढ़ निकाला और मृतप्राय आदमी की नाक पर उसे चिपका दिया।

जोंक ने तुरन्त ही चिपककर उसकी नाक नोच ली। तब पियेरो झट से उठ बैठा, वह सिर झटकने लगा, जोंक को नाक से छुड़ाया और कराहने लगा :

"आह, लगता है मैं अभी ज़िन्दा हूं..."

बुरातीनो ने उसके खड़िया से पुते सफ़ेद गालों को पकड़कर चूम लिया और पूछने लगा :

"तुम यहां कैसे आ फंसे? भूरे ख़रगोश पर सवार होकर तुम कहां भागे जा रहे थे?"

"बुरातीनो, बुरातीनो!" पियेरो ने चारों तरफ़ नज़र डालते हुए कहा, "मुझे कहीं जल्दी से छिपा लो... ये कुत्ते भूरे ख़रगोश का नहीं, मेरा ही पीछा कर रहे थे, सिनियोर काराबास बाराबास दिन-रात मेरा पीछा कर रहा है। उसने मूरखनगरी में जासूस कुत्ते किराये पर लिये हैं और मुझे ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ने की क़सम खायी है।"

दूर से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आ रही थी। बुरातीनो ने पियेरो की बांह पकड़ी और उसे घसीटकर छुईमुई की सघन झाड़ियों तक ले आया जो पीले-पीले गोलाकार फूलों से ढकी हुई थीं।

धूल-धूसरित पत्तों पर लेटे हुए पियेरो ने फुसफुसाकर बतलाना शुरू किया :

"सुनो, बुरातीनो, रात में एक बार खूब तेज़ आंधी चल रही थी, पानी झमाझम बरस रहा था..."



पियेरो की दास्तान : कैसे वह ख़रगोश की पीठ पर सवार होकर मूरखनगरी आ पहुंचा

"सुनो, बुरातीनो, रात में एक बार ख़ूब तेज़ आंधी चल रही थी, पानी झमाझम बरस रहा था। सिनियोर काराबास बाराबास अलावघर के पास मज़े से बैठा हुआ पाइप पी रहा था। सभी कठपुतलियां सो रही थीं। मैं ही अकेला जाग रहा था। मुझे नीलकेशी लड़की की याद आ रही थी..."

"अरे मूर्ख, तू भी किसकी याद करने लगा था!" बुरातीनो ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "मैं कल शाम को ही उसके यहां से निकल भागा हूं – मकड़ी के जालोंवाले तहख़ाने से..."

"क्या कह रहे हो? तुमने नीलकेशिनी को देखा है? तुमने मेरी मलवीना को देखा है?"

"हुं, कोई हूर है क्या! निरी भोंदू लड़की है और हाथ धोकर पीछे पड़ती है!"

पियेरो हाथ हिलाते हुए उछल पड़ा।

"मुझे उसके पास ले चलो... अगर तुम मलवीना को ढूंढने में मेरी सहायता करोगे तो मैं तुम्हें सोने की चाबी का रहस्य बतलाऊंगा..."

"क्या कहा!" बुरातीनो ख़ुशी से चीख़ पड़ा। "तो तुम सोने की चाबी का रहस्य जानते हो?"

"सब जानता हूं, चाबी कहां पर है, उसे किस प्रकार पाया जा सकता है और यह भी जानता हूं कि उससे एक दरवाज़ा खुलता है... मैंने इस रहस्य के बारे में चुपके-चुपके सुन लिया था, इसीलिये सिनियोर काराबास बाराबास जासूस कुत्तों की मदद से मुझे ढूंढ रहा है।"

बुरातीनो ख़ूब जी भरकर डींग मारना चाह रहा था, यह बतलाना चाह रहा था कि वह रहस्यमय चाबी उसके जेब में ही पड़ी हुई है। जल्दबाज़ी में कहीं वह भेद न खोल बैठे, इसलिए उसने झट से अपनी टोपी उतारी और मुंह में ठूंस ली।

पियेरो मलवीना के पास ले चलने की बार-बार मिन्नतें कर रहा था। बुरातीनो ने उंगली के इशारे से इस मूर्ख को यह समझाया कि अंधेरी सुनसान रात में वहां जाना ख़तरनाक होगा, सुबह होते ही उस लड़की के पास झट से पहुंच जायेंगे।

उसने पुनः पियेरो को छुईमुई की झाड़ी के नीचे छिप जाने के लिए बाध्य किया। बुरातीनो ने अस्पष्ट स्वर में कहा – उसके मुंह में जो टोपी ठुंसी हुई थी :

"आगे फुनाओ, आगे..."

"हां, तो एक बार रात में ख़ूब तेज़ आंधी चल रही थी..."

"यह तुम फुना चुके हो..."

"हां, तो फिर," पियेरो ने बात आगे बढ़ायी, "जानते हो मैं अभी सोया नहीं था कि अचानक किसी ने खिड़की खटखटायी ..."

"सिनियोर काराबास बाराबास बड़बड़ाने लगा:

"'ऐसे खराब मौसम में कौन यहां आ टपका?'

"'जी, मैं हूं – जोंकमार,' खिड़की के पीछे से आवाज़ आयी। 'इलाज के लिए जोंकें बेचनेवाला। मेहरबानी करके मुझे आग के करीब बैठ लेने दीजिये, कपड़े सूख जायेंगे।'

"ये जोंकें बेचनेवाले क्या बला होते हैं, यह देखने के लिए मेरा जी मचल उठा। मैंने धीरे से परदा खिसकाया और कमरे में सिर निकालकर झांकने लगा। देखता क्या हूं:

"सिनियोर काराबास बाराबास कुर्सी से उठा, हमेशा की तरह उसका पैर उसकी लम्बी दाढ़ी पर पड़ा, फिर उसने गुस्से से गालियां देते हुए दरवाज़ा खोला।

"पानी से तर-ब-तर लम्बे क़द का, सूखे कुकुरमुत्ते की तरह झुर्रीदार छोटे-से चेहरेवाला आदमी कमरे के भीतर दाखिल हुआ। वह हरे रंग का पुराना ओवरकोट पहने हुए था। कमर-बन्द से चिमटियां, लोहे की कंटिया और खास तरह की सुइयां लटक रही थीं। हाथ में उसने टीन का एक डिब्बा और जाल थाम रखा था।

"'अगर आपके पेट में दर्द हो,' उसने झुककर अदब से अभिवादन करते हुए कहा, झुककर दोहरा हो गया, मानो पीठ ही बीच से टूट गयी हो, 'अगर भयानक सिर दर्द हो या कान के भीतर धड़-धड़ होती हो तो मैं आधा दर्जन बेहतरीन जोंकों को चिपकाकर आपकी सेवा कर सकता हूं।'

"सिनियोर काराबास बाराबास बड़बड़ाया:

"'जहन्नुम में जाये, कोई जोंक-वोंक नहीं! हां, जितनी देर चाहो आग ताप सकते हो।'

"जोंकमार ने आग की तरफ़ पीठ कर ली।

"तुरन्त ही उसके हरे ओवरकोट से भाप उड़ने लगी और काई की दुर्गन्ध फैलने लगी।

"'आजकल जोंक का धन्धा खराब चल रहा है,' वह बोला। 'थोड़ा खाने-पीने का इन्तज़ाम हो जाये तो मैं अपनी सबसे अच्छी क़िस्म की एक दर्जन जोंकें आपकी सेवा में प्रस्तुत कर सकता हूं, आपकी जांघ में उन्हें चिपका सकता हूं, अगर हड्डियों में टूटन हो रही हो...'



"'जहन्नुम में जायें तुम्हारी जोंकें! जोंक-वोंक नहीं! हां, खाने-पीने को मिल सकता है,' काराबास बाराबास चिल्लाया।

"जोंकमार खाना खाने लगा, उसका चेहरा रबर की तरह सिकुड़ता और फैलता था। खाने-पीने के बाद उसने चुटकी भर तम्बाकू मांगी।

"'सिनियोर, मैंने भरपेट खाना खा लिया है और आग ताप ली है,' वह बोला। 'आपकी ख़ातिरदारी की क़ीमत चुकायी जा सके, इसलिए मैं एक भेद आपके सामने खोल रहा हूं।'

"सिनियोर काराबास बाराबास ने पाइप के कश खींचे और बोला:

" ' दुनिया में बस एक भेद है जो मैं जानना चाहता हूं। इसके अलावा बाक़ी सब पर मैं थूकता और छींकता हूं!'

"'सिनियोर,' जोंकमार ने फिर कहा, 'मैं एक बहुत बड़ा भेद जानता हूं, कछुए कूबर ने मुझे यह भेद बतलाया है।'

"यह सुनते ही काराबास बाराबास आंखें फाड़कर देखने लगा, उठ खड़ा हुआ, अपनी दाढ़ी में ज़रा उलझा, भयभीत जोंकमार पर सीधे कूद पड़ा, उसे अपनी तोंद से चिपकाकर सांड़ की तरह दहाड़ा:

"'दरियादिल जोंकमार, प्यारे जोंकमार, झटपट कहो, तुम्हें कछुए कूबर ने क्या-क्या बतलाया था!'

"तब जोंकमार ने यह कहानी कह सुनायी:

"'मैं मूरखनगरी के पास एक गन्दे तालाब में जोंकें पकड़ रहा था। चार सोल्दो रोज़ की मजूरी देकर मैंने एक ग़रीब आदमी को अपने साथ धन्धे पर लगा रखा था—वह कपड़े उतारकर गले तक पानी में उतर जाता और तालाब में तब तक खड़ा रहता, जब तक कि उसके नंगे शरीर में जोंकें न चिपक जातीं।



"'उसके बाद वह पानी से निकलकर किनारे आ पहुंचता, मैं उसके शरीर में लिपटी एक-एक जोंक को छुड़ा-छुड़ाकर जमा करता और फिर उसे तालाब में वापस भेज देता।

"'इस तरह हमने बहुत सी जोंकें जमा कर लीं, अचानक पानी के भीतर से एक सर्पाकार जीव दिखलायी दिया।

"'सुनो, जोंकमार,' उसने कहा, 'तुम ने हमारे इस रमणीक तालाब के निवासियों का जीना हराम कर रखा है, तुम ने तालाब को घंघोल दिया है, नाश्ते के बाद मुझे चैन से आराम भी नहीं करने देते... यह गड़बड़ी कब ख़त्म होगी?'

"'मैंने देखा कि यह एक मामूली कछुआ है। बिना किसी भय के मैंने उत्तर दिया:

"'जब तक इस गन्दे डबरे की सभी जोंकें नहीं पकड़ लूंगा...'

"'मैं तुम्हें मुआवज़ा दे दूंगा, तुम बस हमारे तालाब की ज़िंदगी में खलल न डालो और फिर कभी इधर लौटकर न आओ।'

"'तब मैं कछुए का मज़ाक़ उड़ाने लगा:

"'अरे मूर्ख, बस, खाली बक्से की तरह तैरनेवाला, तू भला मुझे क्या देगा? बस, अपनी हड्डीली खोपड़ी जिसमें अपना सिर-पैर छिपाये घूमता है... मैंने तो तेरी यह खोपड़ी कंघी बनानेवाले को दे दी होती...' तब कछुआ क्रोध से तमतमाया और बोला:

"'तालाब के तल पर जादुई चाबी पड़ी है... मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूं जो इस चाबी को पाने के लिए ज़मीन-आसमान एक कर सकता है...'

"जोंकमार अभी यह बात कह भी न पाया था कि काराबास बाराबास आवेश में गला फाड़ते हुए चीखने लगा:

"'वह आदमी – मैं हूं! मैं! मैं! भले आदमी, तो तूने कछुए से चाबी क्यों नहीं ले ली?'

"'मुझे क्या पड़ी थी!' जोंकमार ने कहा और अपना झुर्रीदार चेहरा सिकोड़ लिया जैसे कोई सूखा हुआ कुकुरमुत्ता हो। 'यह भी ख़ूब रही! किसी मामूली चाबी से क़ीमती जोंकों की अदला-बदली कैसे की जा सकती है... बस यह समझो, हम उस कछुए से झगड़ लिये और उसने पानी के ऊपर पंजा उठाकर कहा:

"'मैं क़सम खाकर कहता हूं – यह जादुई चाबी न तो तुम्हें मिलेगी, न किसी और को। मैं क़सम खाता हूं – चाबी का हकदार वही होगा जो तालाब के सभी निवासियों का दिल जीत ले और जिसके लिए वे मुझसे प्रार्थना करने लगें...'

"'अपना पंजा ऊपर उठाये कछुआ पानी में उतर गया।

"'मुझे तत्काल मूरखनगरी जाना होगा!' झटपट अपनी लम्बी दाढ़ी का छोर जेब में ठूंसते हुए, टोपी और लालटेन संभालते हुए काराबास बाराबास ने कहा: 'मैं तालाब के किनारे बैठ जाऊंगा। मधुर मुस्कान बिखेरता रहूंगा। मेंढकों, उनके बाल-बच्चों और जलकीटों की खुशामद करूंगा, उन्हें राज़ी करूंगा ताकि वे सब मिलकर मेरे हक़ में कछुए से प्रार्थना

करें... मैं उन्हें पंद्रह लाख मोटी-मोटी चर्बीदार मक्खियों का तोहफ़ा दूंगा... मैं वहां अकेली गाय की तरह रंभा-रंभाकर रोऊंगा, दुखियारी मुर्गी की तरह आहें भरूंगा, घड़ियाल की तरह आंसू बहा-बहाकर रोऊंगा। मैं नन्हे-नन्हे मेंढकों के आगे घुटनों के बल खड़ा रहूंगा... बस, चाबी हर हालत में मिलनी चाहिए! मैं नगर में जाऊंगा, एक घर में प्रवेश करूंगा, सीढ़ी के नीचेवाले कमरे में पहुंचकर... मैं एक छोटे से दरवाज़े को खोज लूंगा, – उसके नज़दीक सभी आते-जाते हैं, पर किसी को इस रहस्य का पता नहीं चल पाता। बस, ताले में चाबी लगाकर...'

"तो जानते हो, बुरातीनो, सब कुछ जान लेने के लिए मेरा जी तड़फड़ा उठा, मैं परदे के पीछे से बाहर निकल आया।" छुईमुई की झाड़ी तले सड़ी पत्तियों पर बैठा हुआ पियेरो यह क़िस्सा सुना रहा था।

"सिनियोर काराबास बाराबास ने मुझे देख लिया।

"'तू चुपके-चुपके सुन रहा था, बदमाश कहीं का!' और वह मुझ पर झपटा, ताकि मुझे पकड़कर आग में झोंक दे, लेकिन उसके पैर तो दाढ़ी में उलझकर रह गये और भयानक दहाड़ के साथ उसने कुर्सी उलट दी, फिर ज़मीन पर भड़भड़ाकर चारों खाने चित्त हो गया।

"मुझे याद नहीं, मैं कैसे खिड़की के बाहर पहुंचा, मैंने कैसे चहारदीवारी पार की। अंधकार में हवा सायं-सायं कर रही थी और पानी भी झमाझम बरस रहा था।

"मेरे सिर के ऊपर बिजली कड़की, रोशनी फैली और दस क़दम की दूरी पर मैंने अपने पीछे काराबास बाराबास और जोंकमार को भागते हुए देखा... मैंने सोचा: मारा गया! मुझे ठोकर लगी, किसी मुलायम और गरम चीज़ पर मैं गिर पड़ा, किसी के कान पकड़ में आ गये...

"यह भूरा ख़रगोश था। उसने भयभीत होकर ऊंची छलांग मारी, लेकिन मैंने उसके कान मज़बूती से पकड़ रखे थे और हम अंधेरे मैदानों, अंगूर के बागानों और खेतों से होकर सरपट भागते रहे।

"जब ख़रगोश थककर बैठ जाता तो मैं उसे प्यार करता:

"बस, थोड़ी कसर है, और ज़रा दौड़ ले, मेरे भूरे दोस्त...

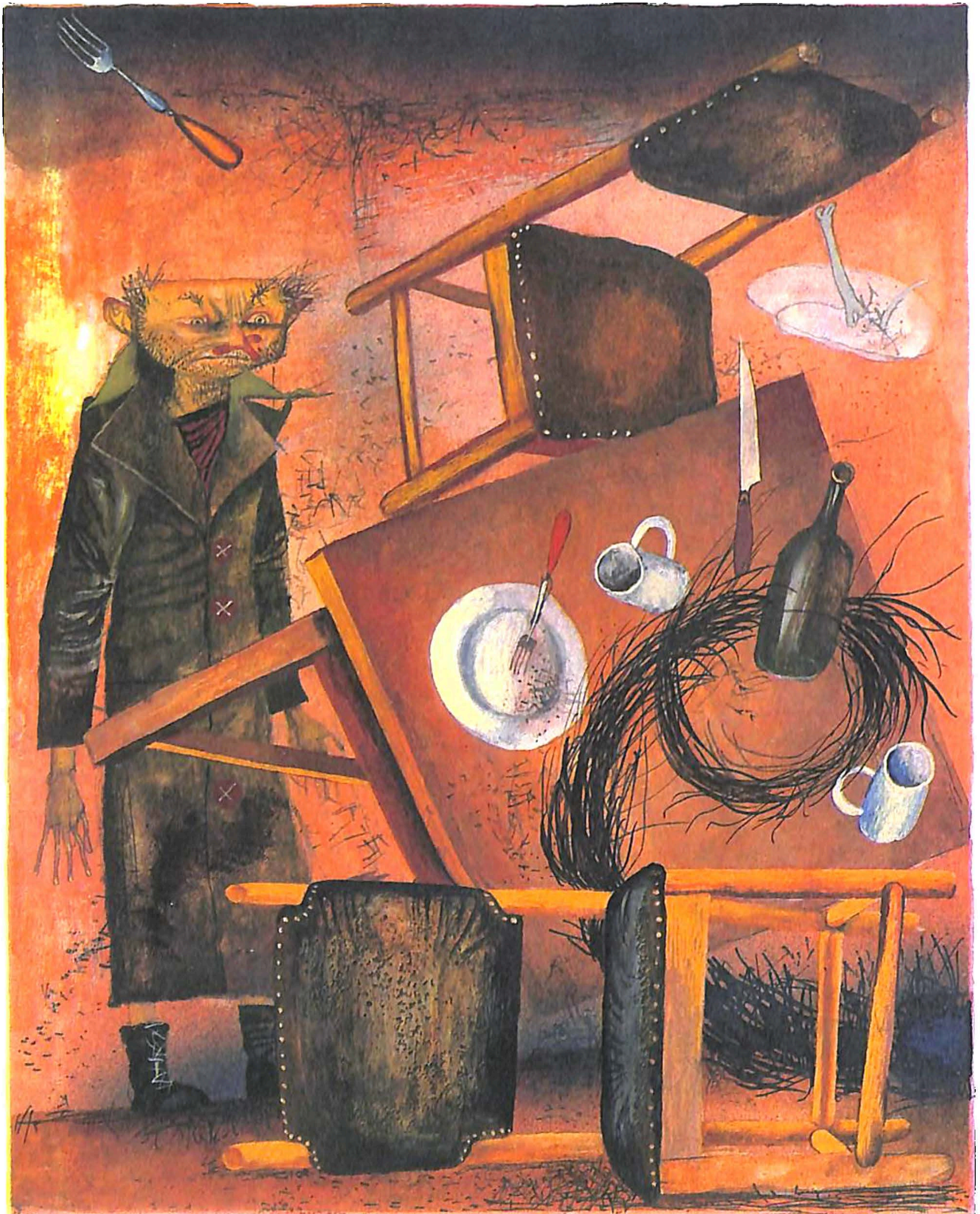
"ख़रगोश ठण्डी सांस लेता और फिर हम लोग न जाने कहां-कहां हवा में उड़ने लगते – कभी दाहिने, तो कभी बायें...

"जब बादल छंट गये और चांद निकल आया, मैंने पहाड़ के नीचे एक छोटी सी नगरी देखी, जहां अधढहे मकान थे।

"सड़क पर नगरी की ओर काराबास बाराबास और जोंकमार दौड़ रहे थे।

"ख़रगोश ने कहा:

"'आह, ऐसा है ख़रगोश का भाग्य! वे लोग मूरखनगरी की ओर जा रहे हैं पुलिस के कुत्ते किराये पर लेने। बस, तबाही सिर पर है!'





"ख़रगोश हिम्मत हार गया। उसने पंजों में नाक गड़ा ली और कान लटका लिये।

"मैंने उसकी मिन्नतें कीं, रोया, यहां तक कि उसके पैरों पर भी गिर पड़ा। ख़रगोश चुप्पी साधे रहा।

"लेकिन जब नगरी से दो नकचिप्पे बुलडाग, जिनके दायें पैरों में काली पट्टी बंधी थी, झपटकर दौड़े, ख़रगोश भय से कांपने लगा, – मैं मुश्किल से उसकी पीठ पर सवार हो पाया और वह जंगल की ओर सरपट दौड़ चला...

"बाक़ी सब कुछ तुमने ख़ुद अपनी आंखों से देखा है, बुरातीनो।"

पियेरो ने अपनी बात ख़त्म की और बुरातीनो ने उससे सावधानी से पूछा:

"और हां, किस घर में, सीढ़ी के नीचेवाले किस कमरे में दरवाज़ा है, जो चाबी से खुलता है?"

"काराबास बाराबास इसके बारे में कुछ न बता पाया... अरे, हमारे लिए सब एक जैसा है, चाबी झील के तल में है... हमारी ऐसी किस्मत कहां..."

"और तुमने इसे नहीं देखा?" बुरातीनो ने उसके कान में चहकते हुए कहा, फिर उसने जेब से चाबी निकाली, उसे पियेरो की नाक के आगे घुमाया, "यही है वह!"



बुरातीनो और पियेरो मलवीना के पास आये, पर तीनों को आर्तेमोन समेत भागना पड़ा

जब सूरज पहाड़ की चट्टानी चोटियों के ठीक ऊपर चढ़ आया, बुरातीनो और पियेरो झाड़ियों के नीचे से निकले और उस मैदान के पार भागे, जहां चमगादड़ कल बुरातीनो को नीलकेशिनी के घर से मूरखनगरी में ले गया था।

पियेरो की हालत देखकर हंसी आती थी कि वह मलवीना को जल्द से जल्द देखने के लिए कितना आतुर है।

"सुनो, बुरातीनो," वह हर पन्द्रह सेकेण्ड पर पूछता था, "मुझे देखकर उसे ख़ुशी होगी या नहीं?"

"मुझे क्या मालूम..."

पन्द्रह सेकेण्ड बाद वह फिर पूछता:

"सुनते हो, बुरातीनो, मुझे देखकर कहीं नाराज़ तो नहीं हो जायेगी?"

"मुझे क्या मालूम..."

आख़िरकार उन्हें सफ़ेद घर नज़र आया, जिसकी झिलमिलियों पर चांद, सूरज और सितारों के चित्र बने थे।

चिमनी से धुआं उठ रहा था। उससे ऊपर बादल तैर रहा था, जिसकी आकृति बिल्ली के सिर जैसी थी।

पूडेल आर्तेमोन बरामदे में बैठा था और बीच-बीच में इस बादल पर गुर्रा रहा था।

बुरातीनो की नीलकेशिनी के पास लौटने की कोई ख़ास इच्छा नहीं थी। लेकिन वह भूखा था और उसे दूर से ही गर्म-गर्म दूध की महक लग चुकी थी।

"यदि यह लड़की फिर से हमें उपदेश देना शुरू करेगी, तो दूध पी लूंगा, पर वहां किसी हालत में नहीं रुकूंगा।"

इसी समय मलवीना घर से बाहर निकली। उसके एक हाथ में कॉफ़ी बनाने के लिए चीनी मिट्टी की एक नन्ही-सी केतली थी और दूसरे हाथ में बिस्कुटों की डोलची।

उसकी आंखें अभी भी रुआंसी थीं, उसे पूरा विश्वास था कि बुरातीनो को तहख़ाने से चूहे खींच ले गये हैं और अब तक उसे हजम कर चुके हैं।

वह रेत बिछी पगडंडी पर गुड़ियों की मेज़ के सामने अभी बैठी ही थी कि आसमानी फूल हिलने लगे, तितलियां उड़-उड़कर पीले-सफ़ेद पत्तों की तरह उन पर मंडराने लगीं और झाड़ी में से बुरातीनो तथा पियेरो निकलकर सामने आ गये।

मलवीना की आंखें हैरानी से इस तरह फट गयीं कि लकड़ी के दोनों ही बच्चे आसानी से उनमें कूद सकते थे।

पियेरो मलवीना को देखते ही बुदबुदाने लगा, उसकी बातें इतनी ऊटपटांग थीं कि यहां उन्हें बताने की ज़रूरत नहीं है।

बुरातीनो ने ऐसे कहा, मानो कुछ हुआ ही न हो:

"मैं इसे बुला लाया हूं, अब शिक्षा देती रहो..."

आख़िर मलवीना ने यह समझ लिया कि यह सपना नहीं है।

"अहा, कितनी ख़ुशी की बात है!" वह फुसफुसायी, लेकिन तुरन्त ही बड़े-बूढ़ों की तरह बोली:

"लड़को, झटपट मुंह-हाथ धो लो, दांत साफ़ करो। आर्तेमोन, ज़रा इन्हें कुएं तक पहुंचा दो।"

"देखा तुमने," बुरातीनो बड़बड़ाया, "एक ही राह है इसकी – मुंह-हाथ धोओ, दांत साफ़ करो! सफ़ाई को लेकर किसी का भी जीना दूभर कर सकती है..."

फिर भी उन्होंने मुंह-हाथ धो लिया। आर्तेमोन ने दुम के छोर पर उगे बालों से उनके कपड़े झाड़कर साफ़ किये।

सब मेज़ पर बैठ गये। बुरातीनो ठूंस-ठूंसकर खा रहा था। उसके दोनों गाल फूले हुए थे। पियेरो ने केक का एक टुकड़ा भी नहीं चखा; वह मलवीना को इस तरह देखे जा रहा था जैसे वह बादाम की मीठी-मीठी पेस्ट्री हो। अन्त में वह तंग आ गयी।

"मेरी शक्ल में आपको क्या दिख रहा है," उसने पियेरो से कहा। "कृपया शान्ति से नाश्ता कीजिये!"

"मलवीना," पियेरो ने उत्तर दिया, "मैंने बहुत पहले खाना-पीना छोड़ दिया है, मैं सिर्फ़ कविताएं लिखता हूं..."

बुरातीनो का हंसी के मारे बुरा हाल हो गया।

मलवीना को आश्चर्य हुआ, उसकी आंखें फिर फट गयीं।

"अगर ऐसी बात है, तो फिर अपनी कविताएं पढ़कर सुनाइये।"

उसने नाजुक-नाजुक हथेली पर अपना गाल टिका दिया और अपनी प्यारी आंखें बिल्ली के सिर की आकृतिवाले बादल की ओर उठा लीं।

पियेरो अपनी कविता ऐसी रुआंसी आवाज़ में पढ़ने लगा, मानो वह गहरे कुएं के भीतर बैठा हो:

"मलवीना चली गयी परदेस,
मलवीना मेरी दुलहन, देख,
रोता हूं कि अब क्या करूं,
क्यों न कठपुतला जीवन छोड़ मरूं?"



पियेरो अभी कविता पढ़ ही रहा था, मलवीना अभी कविता की प्रशंसा भी नहीं कर पायी थी (कविता उसे बड़ी अच्छी लगी थी!) कि रेतीली पगडंडी पर एक मेंढक फुदकता नज़र आया।

वह डरावना तो था ही, आंखें निकालकर और भी डरावना बन गया और बतलाने लगा:

"सनकी कछुए कूबर ने काराबास बाराबास को सुनहरी चाबी के बारे में सब कुछ बता दिया है..."

मलवीना भय से चीख पड़ी, हालांकि उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ा था। पियेरो भुलक्कड़ और खोया-खोया था, जैसे कि कवि लोग होते हैं, हैरानी से वह कुछ ऊटपटांग बातें करने लगा, जिन्हें बतलाने की यहां ज़रूरत नहीं है। लेकिन बुरातीनो तुरन्त उठकर खड़ा हो गया और जेब में बिस्कुट और टाफ़ियां भरने लगा।

"जल्दी से जल्दी भागना चाहिए। कहीं पुलिस के कुत्ते काराबास बाराबास को यहां ले आये, तो समझो कि बेमौत मारे गये।"

मलवीना तितली के पंख की तरह पीली पड़ गयी। पियेरो को लगा कि वह अन्तिम घड़ियां गिन रही है, उसने घबराहट में उस पर कोको उलट दी और मलवीना का बढ़िया फ़्रॉक ख़राब कर दिया।

आर्तेमोन ज़ोर से भौंकता हुआ उछल पड़ा – मलवीना के फ़्रॉक तो उसी को धोने पड़ते थे। उसने पियेरो का कालर पकड़ लिया और उसे झकझोरने लगा। अन्त में पियेरो हिचकियां लेते हुए उसकी मिन्नतें करने लगा:

"बहुत हो गया, माफ़ करो..."

मेंढक आंखें निकाले यह सब हड़बड़ी देखता रहा, फिर बोला:

"काराबास बाराबार पुलिस के कुत्तों के साथ कोई पंद्रह मिनट बाद यहां पहुंच जायेगा..."

मलवीना कपड़े बदलने भागी। पियेरो हताश हाथ मलता रहा, उसने रेतीली पगडंडी पर चारों खाने चित्त गिर पड़ने की कोशिश भी की। आर्तेमोन घरेलू सामान की गठरियां घसीट लाया। दरवाज़े खटाखट खुल रहे थे, बन्द हो रहे थे। झाड़ियों में गौरैयां चीख-पुकार मचा रही थीं। अबाबीलें ज़मीन के बिलकुल पास नीची उड़ानें भरने लगीं। अटारी पर बैठा उल्लू अपने जंगली अट्टहास से ख़ौफ़ बढ़ा रहा था।

अकेला बुरातीनो नहीं घबड़ाया। उसने आवश्यक चीज़ों की दो गठरियां आर्तेमोन पर लाद दीं। गठरियों पर उसने मलवीना को बिठा दिया, जो सुन्दर सफ़री फ़्रॉक पहने हुए थी। पियेरो को उसने कुत्ते की दुम पकड़ने को कहा और ख़ुद सबसे आगे खड़ा हो गया:

"डरने की कोई बात नहीं है! बस, अब हम यहां से भागते हैं!"

सब के सब – यानी कि कुत्ते के आगे-आगे चलता हुआ बहादुर बुरातीनो, गठरियों पर

झटके खा-खाकर उछल रही मलवीना और उसके पीछे-पीछे ठंडे दिमाग से सोचने के बजाय ऊलजलूल कविताएं लिखनेवाला कवि पियेरो – जब सघन घास से निकलकर साफ़ मैदान में पहुंचे, तो जंगल से काराबास बाराबास की छितरी-छितरी दाढ़ी नज़र आयी। वह हथेली से आंखों पर धूप रोकता हुआ चारों तरफ़ नज़र दौड़ा रहा था।



जंगल के किनारे घमासान लड़ाई

सिनियोर कारावास बारावास पुलिस के दोनों कुत्तों के पगहे पकड़े हुए था। समतल मैदान में भगोड़ों को देखकर उसने बड़े-बड़े दांतोंवाला मुंह फाड़ लिया।

"वो रहे!" चिल्लाकर उसने कुत्तों को छोड़ दिया।

ख़ूंखार कुत्ते पहले तो खड़े-खड़े पिछले पंजों से मिट्टी उछालने लगे। वे गुर्रा भी नहीं रहे थे, यहां तक कि वे देख भी दूसरी तरफ़ रहे थे, उन भगोड़ों की तरफ़ बिलकुल नहीं, – इतना घमण्ड था उन्हें अपनी ताक़त पर।

इसके बाद कुत्ते धीरे-धीरे उस जगह की ओर चले, जहां बुरातीनो, आर्तेमोन, पियेरो और मलवीना आतंक से स्तब्ध खड़े थे।

लगा कि बस, सारा खेल ख़त्म हो गया। पुलिस के कुत्तों के पीछे-पीछे ख़ुद कारावास बारावास अपने तिरछे पैर रखता हुआ चला आ रहा था। उसकी दाढ़ी क्षण-क्षण में जेब से निकलकर पैरों से उलझ जाती थी।

आर्तेमोन ने दुम दबा ली, वह गुस्से में गुर्रा रहा था। मलवीना के हाथ कांप रहे थे:

"मुझे डर लग रहा है, मुझे डर लग रहा है!"

पियेरो हिम्मत हार बैठा था, वह मलवीना को देखे जा रहा था। उसे पूरा विश्वास था कि अब खेल ख़त्म हो चुका है।

सबसे पहले बुरातीनो को होश आया।

"पियेरो," वह चिल्लाया, "लड़की का हाथ पकड़ो और झील की तरफ़ भागो, जहां राजहंस रहते हैं! आर्तेमोन, गठरियां फेंको, घड़ी उतारो – लड़ाई लड़ो!"

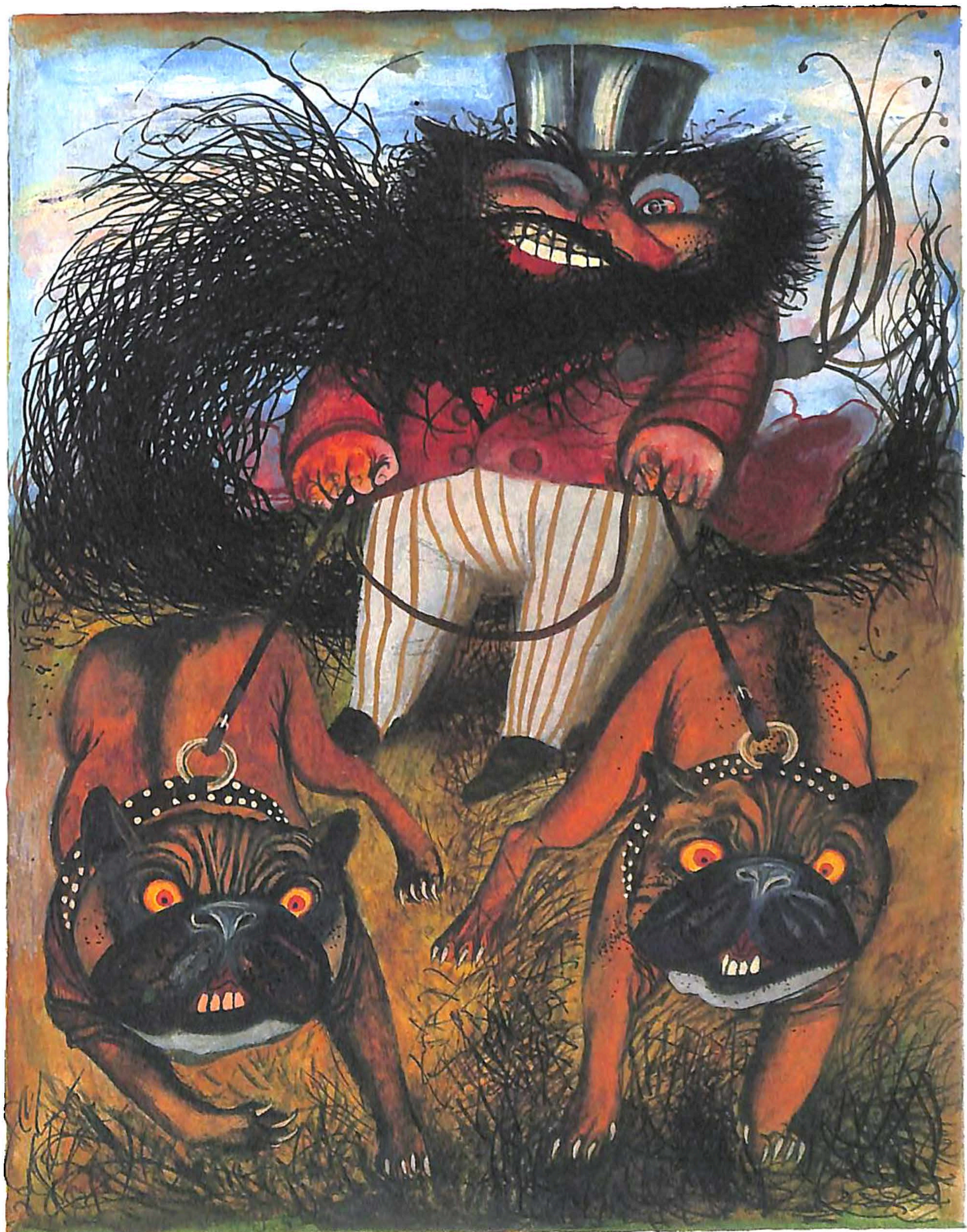
मलवीना ने जैसे ही यह साहस भरा हुक्म सुना, तुरन्त आर्तेमोन की पीठ पर से कूद पड़ी और फ़्रॉक संभाले हुए झील की तरफ़ भागी। पियेरो उसके पीछे-पीछे दौड़ा।

आर्तेमोन ने गठरियां फेंकीं, पैर से घड़ी और पूंछ से काला फ़ीता उतारा, अपने सफ़ेद दांत निकाल लिये और दायें-बायें उछलकर पेशियों को चुस्त बनाया और ख़ुद भी पिछले पैरों से रुक-रुककर मिट्टी फेंकने लगा।

बुरातीनो मैदान में अकेले खड़े इतालवी चीड़ वृक्ष के राल भरे तने पर चढ़ता हुआ उसकी चोटी पर जा पहुंचा और वहां से अपनी पतली आवाज़ में पूरा ज़ोर लगाकर चिल्लाया:

"जानवरो, चिड़ियो, कीड़े-मकोड़ो! हम लोगों को मार रहे हैं! लकड़ी के निर्दोष नन्हे-मुन्नों को बचाओ!"

पुलिस के कुत्तों की नज़र आर्तेमोन पर मानो अभी-अभी पड़ी हो, उन्होंने एकसाथ उस पर हमला बोल दिया। चुस्त आर्तेमोन ने फुर्ती से उनका वार खाली कर दिया, एक कुत्ते की दुम नोच ली और दूसरे की टांग में काट खाया।







बुलडाग अटपटे ढंग से मुड़े और आर्तेमोन पर झपटे। वह ख़ूब ऊंचा उछल गया और वे दोनों उसके नीचे से निकल गये। इस वार भी उसने एक की वग़ल और दूसरे की पीठ की खाल नोच ली।

तीसरी बार बुलडागों ने उस पर हमला किया। तव आर्तेमोन अपनी पूंछ घास पर झुकाकर चक्कर काटने लगा, कभी पुलिस के कुत्तों को निकट आने देता, तो कभी उछलकर उनकी नाक के नीचे से भाग जाता।

नकचिप्पे बुलडाग अब सचमुच चिढ़ गये थे, वे नाक सुड़सुड़ाते हुए आर्तेमोन के पीछे दौड़ने लगे दृढ़संकल्प होकर कि मर जायेंगे, लेकिन इस चुस्त पूडेल का गला फाड़े बिना नहीं रहेंगे।

इस बीच काराबास बाराबास चीड़ वृक्ष के पास पहुंचा और तना पकड़कर उसे झकझोरने लगा :

"उतर, उतर!"

बुरातीनो डाली से कसकर चिपक गया। काराबास बाराबास ने पेड़ को ऐसा झकझोरा कि डालियों पर लगे सभी शंकुफल हिलने लगे।

चीड़ वृक्ष पर शंकुफल कांटेदार और भारी होते हैं, बिलकुल छोटे-छोटे खरबूज़े की तरह। ऐसा फल यदि सिर पर गिरे तो जान ही निकल जाये!

बुरातीनो हिलती डाल पर मुश्किल से टिका हुआ था। उसने देखा कि आर्तेमोन की लाल चिथड़े जैसी जीभ बाहर निकली हुई है और वह अब पहले जैसी चुस्ती से नहीं उछल रहा है।

"चाबी लाओ!" काराबास बाराबास मुंह फाड़कर गरजा।

बुरातीनो डाल पर सरकता हुआ एक बड़े से शंकुफल तक पहुंचा और उसके डंठल को कुतरने लगा। काराबास बारावास ने पेड़ को और कसकर झकझोरा, एक भारी-भरकम शंकुफल नीचे गिर पड़ा – हड़ाप! – सीधा उसके मुंह में!

काराबास बाराबास चोट खाकर बैठ गया।

बुरातीनो ने दूसरा शंकुफल तोड़ा और वह – ठक! – सीधा काराबास बाराबास की खोपड़ी पर गिरा, जैसे नगाड़े पर।

"हम लोगों को मार रहे हैं!" बुरातीनो फिर चिल्लाया। "लकड़ी के निर्दोष नन्हे-मुन्नों को बचाओ!"

सबसे पहले सहायता के लिए नन्ही मार्टलेट चिड़ियां आयीं, वे एकदम ज़मीन के साथ-साथ उड़ती हुई कुत्तों के सामने मंडराने लगीं।

कुत्ते दांत खट-खट करके उन्हें पकड़ने की असफल कोशिश कर रहे थे – मार्टलेट चिड़ियां कोई मक्खी तो हैं नहीं, वे तो भूरी बिजली की तरह सायं-सायं करती कुत्तों की नाक के सामने मे निकल रही थीं।

बिल्ली के सिर जैसे बादल से काली चील उतर आयी। यह वही चील थी, जो मलवीना के लिए चिड़ियां पकड़कर लाया करती थी। उसने पुलिस के एक कुत्ते की पीठ पर अपने पंजे गड़ा दिये और उसे अपने शक्तिशाली डैनों से उठाये हुए ऊपर उड़ चली, फिर उसे नीचे गिरा दिया।

कुत्ता कें-कें करता टांगें ऊपर किये धड़ाम से नीचे गिर पड़ा।

आर्तेमोन बग़ल से दूसरे कुत्ते पर टूट पड़ा, उस पर छाती से चोट की, उसे गिरा दिया, काट खाया और उछलकर अलग हट गया।

आर्तेमोन फिर से मैदान में अकेले खड़े चीड़ वृक्ष का चक्कर लगाने लगा और पुलिस के थके-हारे घायल कुत्ते उसका पीछा करने लगे।

आर्तेमोन की मदद के लिए मेंढक भी दौड़े आये। वे अपने साथ दो सांपें भी पकड़कर लाये थे, जो बुढ़ापे के कारण अंधे हो गये थे। उन्हें तो मरना ही था – चाहे सड़े हुए ठूंठ के नीचे मरते, चाहे सारस के पेट में। मेंढकों ने उन्हें वीरगति पाने के लिए मना लिया था।

वफ़ादार आर्तेमोन ने अब खुल्लमखुल्ला युद्ध करने की ठान ली थी।

अपनी पूंछ पर बैठकर उसने दांत निकाल लिये।

बुलडाग उस पर टूट पड़े, और वे तीनों गुत्थमगुत्था होकर लुढ़कने लगे।

आर्तेमोन दांतों से काट रहा था, पंजों से नोच रहा था।

बुलडाग उसके काटने और नोचने की परवाह किये बग़ैर सिर्फ़ एक बात का इन्तज़ार कर रहे थे कि कब आर्तेमोन का गला दबोचा जाये – ऐसे कि फिर छूटे नहीं। सारे युद्ध के मैदान में चीख़-पुकार मची हुई थी।

आर्तेमोन की मदद के लिए साहियों का परिवार भी आ गया: खुद साही, साही की पत्नी, साही की सास, साही की दो कुंवारी फूफियां और नन्हे-नन्हे साही-शावक।

मोटे-मोटे, काले-मखमली भौंरे भी सुनहरे लबादों में उड़ते आ रहे थे, भनभना रहे थे। ततैये, बर्रे तथा भनभनाने और काटनेवाले लम्बी-लम्बी मूंछोंवाले और भी कई कीड़े-मकोड़े उड़ते-रेंगते आ रहे थे।

सभी जानवर, परिन्दे और कीड़े-मकोड़े अपनी जान की परवाह किये बिना पुलिस के बदमाश कुत्तों से लोहा ले रहे थे।

साही, साही की पत्नी, साही की सास, साही की दो कुंवारी फूफियां और नन्हे-नन्हे साही-शावक गोले की तरह दुबक गये और क्रिकेट की गेंद की तरह तेज़ी से बुलडागों के थोबड़ों पर अपने कांटों से चोटें करने लगे।

बर्रे, भौंरे, ततैये उड़-उड़कर उन्हें ज़हरीले डंक मारते जा रहे थे। गम्भीर चींटे इत्मीनान से नथुनों में घुसकर अपना ज़हरीला थूक छोड़ रहे थे।





दूसरे कीड़े-मकोड़े भी उन कुत्तों के पेट में डंक मार रहे थे।

चील कभी एक कुत्ते के, तो कभी दूसरे कुत्ते के सिर पर लगातार अपनी टेढ़ी चोंच से चोटें करती जा रही थी।

तितलियां और मक्खियां झुण्ड बना-बनाकर उनकी आंखों के सामने छा जाती थीं ताकि उन्हें कुछ दिखे ही नहीं।

मेंढक वीरगति पाने को तत्पर दोनों सांपों को पकड़े हुए मौक़े की ताक में बैठे थे।

जैसे ही एक बुलडाग ने चींटे का थूक निकाल छींकने के लिए मुंह खोला, बूढ़ा अंधा सांप तुरन्त उसके गले में कूदा और पेट में घुस गया।

दूसरे बुलडाग के साथ भी यही बात हुई: उसके मुंह में दूसरा अंधा सांप छलांग लगा गया।

दोनों कुत्ते मार-काट, नोच-खसोट और डंकों की मार से पस्त थे ही, अब उनका दम भी घुटने लगा था; वे ज़मीन पर लोटने-पोटने और तड़फड़ाने लगे।

वफ़ादार आर्तेमोन युद्ध में विजयी हुआ।

अब तक काराबास बाराबास अपने मुंह से कंटीला शंकुफल निकाल चुका था।

खोपड़ी पर चोट लगने से उसकी आंखें निकल आयी थीं। लड़खड़ाते हुए उसने चीड़ वृक्ष का तना पकड़ लिया। उसकी दाढ़ी हवा में फहरा रही थी।

पेड़ की चोटी पर बैठे हुए बुरातीनो ने देखा कि काराबास बाराबास की दाढ़ी का छोर हवा में ऊपर लहराया और रालसिक्त तने से चिपक गया है।

बुरातीनो एक डाल से लटक गया और पतली आवाज़ में उसे चिढ़ाने लगा:

"चचाजान, पकड़ो तो जानें, चचाजान, पकड़ो तो जानें!"

वह ज़मीन पर कूद गया और चीड़ वृक्ष के चारों ओर दौड़ने लगा। काराबास बाराबास लड़के को पकड़ने के लिए हाथ फैलाये हुए उसके पीछे-पीछे लड़खड़ाते क़दमों से वृक्ष का चक्कर लगाने लगा।

एक बार चक्कर लगाया, दो बार चक्कर लगाया, लगा कि अपनी टेढ़ी-बुक़ची उंगलियों से अब पकड़ लेगा, तब पकड़ लेगा। उसने तीसरा चक्कर भी लगाया...

उसकी लहरदार लम्बी दाढ़ी तने पर लिपटती और राल से चिपकती जा रही थी।

जब दाढ़ी ख़त्म हो गयी, तो तने से उसकी नाक टकरा गयी। बुरातीनो ने उसे अपनी लम्बी जीभ दिखायी और राजहंसोंवाली झील की ओर भागा – मलवीना और पियेरो को ढूंढने के लिए।

बेहाल आर्तेमोन भी तीन पैरों पर लंगड़ाते-लंगड़ाते उसके पीछे चल पड़ा।

मैदान में पुलिस के दो कुत्ते पड़े हुए थे, जिनके जीवन की क़ीमत एक मरी हुई मक्खी

भी नहीं हो सकती थी, और कठपुतली विज्ञान का हताश डाक्टर सिनियोर काराबास बाराबास अभी जीवित बच गया था, हां, उसकी लम्बी दाढ़ी चीड़ वृक्ष के तने से कसकर चिपक गयी थी।



सभी दोस्त एक गुफा में पहुंचे

मलवीना और पियेरो एक ढूह पर सरकण्डों के झुरमुट के बीच बैठे हुए थे। उनके ऊपर मकड़ियों का जाल फैला हुआ था, जिसमें टिड्डों के पंख और बेजान मच्छर उलझे हुए थे।

सरकण्डों पर फुदकती, चहकती नन्ही-नन्ही नीली चिड़ियां फूट-फूटकर रोती हुई लड़की को आश्चर्य से देख रही थीं।

कहीं दूर से चीख-पुकार सुनायी पड़ रही थी – ये आर्तेमोन और बुरातीनो थे, जो जान हथेली पर रखकर जूझ रहे थे।

"मुझे डर लग रहा है!" मलवीना बार-बार कह रही थी और मायूसी से अपना भीगा हुआ चेहरा बर्डाक के चौड़े पत्ते से ढक रही थी।

पियेरो कविता सुनाकर उसका जी बहला रहा था:

ढूह पर बैठे हैं,
फूल जहां खिलते हैं,
लाल, पीले, नीले, हरे,
दिल कहता है यहीं रहें!
सारी गर्मी यहीं रहेंगे,
ढूह पर हम मौज करेंगे,
प्यारा-प्यारा साथ रहेगा,
दुनिया का मन देख जलेगा।

कविता सुनकर मलवीना पैर पटकते हुए बोली:

"तुम्हारी कविता से जी भर गया है! जाओ, बर्डाक का एक पत्ता तोड़कर ले आओ – देख रहे हो – यह पत्ता सारा का सारा भीग गया है और उसमें छेद भी हो गये हैं।"

अचानक दूर से आती हुई चीख़-पुकार शान्त हो गयी। मलवीना के मुंह से एक आह निकली और वह बोली:

"हाय, आर्तेमोन और बुरातीनो मारे गये..."

और वह औंधे मुंह गिर पड़ी।

पियेरो उसके आसपास बदहवास-सा चक्कर काटने लगा। हवा सरकण्डों से टकरा-टकराकर सायं-सायं कर रही थी।

अन्त में किसी के पैरों की आहट सुनायी दी। बेशक काराबास बाराबास ही होगा, पियेरो और मलवीना को पकड़कर अपने अतल जेब के हवाले करने आ रहा होगा। सरकण्डे की झुरमुट में हलचल हुई और लो, बुरातीनो वहां आ पहुंचा। उसकी नाक ऊपर उठी हुई

थी, मुंह कानों तक फैला हुआ था। उसके पीछे-पीछे वफ़ादार आर्तेमोन दो गठरियां अपनी पीठ पर लादे हुए लंगड़ा रहा था।

"हुं, देखो तो, मुझसे लड़ने चले थे!" बुरातीनो ने मलवीना और पियेरो की ख़ुशी को अनदेखा करते हुए कहा। "कहीं बिल्ला, कहीं लोमड़ी, कहीं पुलिस के ख़ूंखार कुत्ते! और तो और, ख़ुद काराबास बाराबास तक मेरे पीछे पड़ा है। थूकता हूं उन पर! ऐ, लड़की, तुम कुत्ते की पीठ पर बैठ जाओ। ऐ, लड़के, तुम दुम पकड़ो। बस, चलो।"

और वह अपनी कोहनियों से सरकण्डों के बीच रास्ता बनाता बहादुरी से आगे-आगे चलने लगा – झील का चक्कर लगाकर दूसरे किनारे की ओर बढ़ने लगा।

मलवीना और पियेरो इतना तक पूछने का साहस न कर पाये कि पुलिस के कुत्तों के साथ हुए घमासान युद्ध का अन्त क्या हुआ और काराबास बाराबास अब तक उनका पीछा क्यों नहीं कर रहा है?

जब वे लोग झील के उस पार पहुंचे, वफ़ादार आर्तेमोन रोने लगा, उसकी चारों टांगें लंगड़ा रही थीं। वह बड़ी मुश्किल से घिसट-घिसटकर चल पा रहा था। अब पड़ाव डालना ज़रूरी था, ताकि घायल कुत्ते की मरहम पट्टी की जा सके। पहाड़ी टीले पर सनोबर वृक्ष के नीचे एक गुफा दिखलायी दी। वहां पर वे गठरियां घसीटकर ले गये और उनके पीछे-पीछे ज़ख़्मी आर्तेमोन भी घिसटते हुए पहुंच गया।

कुत्ता पहले अपने पंजे के घावों को जीभ से चाटकर साफ़ करता, फिर उसे मरहम पट्टी के लिए मलवीना की ओर बढ़ा देता। बुरातीनो मलवीना की पुरानी फ़्रॉक फाड़कर पट्टियां बना रहा था, पियेरो उन्हें संभाल रहा था। मलवीना मरहम पट्टी कर रही थी।

मारहम पट्टी हो गयी तो आर्तेमोन को थर्मामीटर लगाया गया और फिर वह चैन से सो गया।

बुरातीनो ने कहा:

"पियेरो, ज़रा दौड़कर झील से पानी भर लाओ।"

पियेरो आज्ञाकारी बालक की तरह धीरे-धीरे चल दिया। वह कविता की पंक्तियां गुनगुनाता और ठोकरें खाता जा रहा था। रास्ते में कहीं केतली का ढक्कन ही खो बैठा। किसी तरह थोड़ा सा पानी ले आया।

बुरातीनो ने कहा:

"मलवीना, जाओ, जल्दी से अलाव के लिए कुछ लकड़ियां तो बटोर लाओ।"

मलवीना ने बुरातीनो पर उलाहने भरी नज़र डाली, कन्धे बिचकाये और थोड़ी सी सूखी टहनियां बीन लायी।

बुरातीनो बोला:

"उफ़, ये तमीज़दार भी क्या मुसीबत हैं, कुछ करना ही नहीं जानते।"

वह ख़ुद जाकर पानी भर लाया, ख़ुद ही सूखी लकड़ियां और चीड़ के शंकुफल बटोर





लाया और खुद ही उसने गुफा के पास अलाव जलाया। चट-चट करती लकड़ियां इतनी ज़ोर से जल उठीं कि चीड़ वृक्ष की शाखायें तक सिहरने लगीं ... फिर उसने खुद ही कोको तैयार किया।

"झटपट बैठो, नाश्ता तैयार है ..."

मलवीना होंठ भींचे खामोश बैठी थी। अब वह अपना बड़प्पन दिखलाते हुए ज़रा सख़्ती से बोली:

"यह मत समझ लेना, बुरातीनो, कि अगर तुम खूंखार कुत्तों से जूझे और बहादुरी से जीत गये हो, अगर तुमने काराबास बाराबास से हमारी रक्षा की है और उसके बाद भी हिम्मत से काम लिया है, तो तुम्हें खाने से पहले मुंह-हाथ धोने, दांत साफ़ करने से छूट मिल गयी है।"

बुरातीनो दंग रह गया: "लो, करो बात!" इस अटल स्वभाव की लड़की को वह आंखें फाड़-फाड़कर देख रहा था।

मलवीना गुफा से निकलकर बाहर आयी। उसने ताली बजायी:

"तितलियो, सूंड़ियो, गुबरैलो, मेंढको ..."

पलक झपकते ही बड़े-बड़े पंखवाली तितलियां पुष्प पराग लेकर उतर आयीं। सूंड़ियां और गुबरैले रेंगते हुए चले आये। मेंढक कूदते आये।

तितलियां रंग-बिरंगे पंख कंपकंपाती गुफा की दीवारों पर सज-संवरकर बैठ गयीं, ताकि गुफा खूबसूरत लगने लगे और धूलकण खाने-पीने की वस्तुओं पर न गिरें।

गुबरैलों ने सारी गुफा में झाड़ू लगाया, कूड़ा-करकट उठाकर बाहर फेंक दिया।

मोटी सफ़ेद सूंड़ी बुरातीनो के सिर पर जा बैठी और उसकी लम्बी नाक पर लटक कर थोड़ा सा पेस्ट उसके दांतों पर मल दिया। विवश होकर उसे दांत साफ़ करने ही पड़े।

दूसरी सूंड़ी ने पियेरो के दांत साफ़ करने में उसे मदद दी।

नींद से आंख झपकाता, उनींदा बिज्जू आ पहुंचा जो झबरे बालवाले शूकर-शावक जैसा था ... भूरी सूंड़ियां लेकर उसने उनसे भूरी पालिश निकाली और अपनी दुम से रगड़कर जूता पालिश की, तीन जोड़ी जूते चमकाये। ये जूते मलवीना, बुरातीनो और पियेरो के ही थे।

जूता पालिश करने के बाद उसने जंभायी ली और नन्हे-नन्हे पंजों पर डगमगाता हुआ चला गया।

चितकबरी, चुलबुली और खुशमिज़ाज लाल कलगीवाली कठफोड़वा चिड़िया उड़कर आ पहुंची।

"किसके बाल संवारने हैं?"

"इधर आ जाओ। ये देखो, मेरे बाल खुले हुए हैं, कंघी करके चोटी गूंथ दो ..."

"लेकिन रानी जी, यह तो बतलाइये कि आइना कहां है?"

तब वहां बैठे हुए उभरी-उभरी आंखोंवाले मेंढकों ने कहा:

"अभी ले आते हैं..."

दस मेंढकों ने झील में एकसाथ छलांग लगा दी। आइने की जगह पर वे शीशे की तरह चमचमानेवाली कार्प मछली को पकड़ लाये, यह इतनी मोटी और निद्रालु थी कि उसे कुछ पता ही न चला, कहां उसे ले जाया जा रहा है।

मलवीना के सामने कार्प मछली को दुम के सहारे खड़ा कर दिया गया। उसका दम न घुटे इसलिए उसके मुंह में थोड़ा-थोड़ा पानी डाला जा रहा था।

इस तरह चुलबुली चिड़िया ने मलवीना के बाल संवारे। उसने धीरे से एक तितली पकड़ी और लड़की की नाक पर थोड़ा-सा पुष्प पराग मल दिया।

"अहा, वेहद सुन्दर लग रही हो, रानी!" और चितकबरी गेंद की तरह कलाबाज़ी खाती हुई कठफोड़वा चिड़िया फुर्र से गुफा से बाहर निकल गयी।

चमचमाती कार्प मछली को फिर से झील में छोड़ दिया गया। बुरातीनो और पियेरो को मजबूर होकर हाथ-मुंह धोना ही पड़ा। तब मलवीना ने नाश्ता करने की अनुमति दी।

नाश्ते के बाद घुटने से चूरा झाड़ते हुए उसने कहा:

"बुरातीनो, मेरे दोस्त, पिछली बार मैंने तुम्हें इमला बोला था। हां, तो फिर आगे पढ़ायी भी शुरू करनी चाहिये न..."

बुरातीनो जान छुड़ाकर वहां से भाग जाना चाहता था। लेकिन अपने दोस्तों और घायल कुत्ते को इस असहाय हालत में छोड़ना खतरे से खाली न था।

वह बड़बड़ाया:

"लेकिन बस्ता तो लाये नहीं हैं..."

"झूठ!" घायल आर्तेमोन ने कराहते हुए कहा। वह रेंगता हुआ गठरी तक गया, उसे दांतों से खोलकर उसने कलम, दवात, कापी और नन्हा-सा ग्लोब भी निकाला।

"ज़रा कलम ठीक से पकड़ो, तुम्हारी उंगलियां निब के बहुत करीब हैं। स्याही से हाथ न मैले कर बैठना," मलवीना ने समझाया। उसने गुफा की छत पर बैठी तितलियों को लुभावनी नज़रों से देखा और...

इसी समय टहनियों की चरचराहट और फटी-फटी आवाज़ें सुनायी दीं, गुफा के पास से ही जोंकमार और काराबास बाराबास गुज़र रहे थे।

कठपुतली थियेटर के मालिक के माथे पर बड़ा सा लाल-लाल गुमटा निकल आया था, नाक सूजकर कुप्पा हो गयी थी, उसकी नुची-खुची दाढ़ी में राल चिपकी हुई थी।

वह कराहते और नफ़रत से थूकते हुए कह रहा था:

"वे लोग दूर नहीं जा सकते। कहीं आसपास ही छिपे होंगे।"



बुरातीनो ने अपनी जान जोख़िम में डालकर कारावास बारावास से सोने की चाबी का रहस्य जान-लेने का निश्चय किया

कारावास बारावास और जोंकमार धीरे-धीरे गुफा के पास से गुज़र गये।

लड़ाई के दौरान जोंकमार झाड़ी के पीछे छिपकर बैठा रहा। जब सब कुछ शान्त हो गया, उसके बाद भी उसने थोड़ा और इन्तज़ार कर लेना उचित समझा, जब तक कि बुरातीनो और आर्तेमोन घनी घास में ओझल नहीं हो गये। इसके बाद वह बाहर निकला, बड़ी मुश्किल से चीड़ के तने से कारावास बारावास की चिपकी हुई दाढ़ी छुड़ा पाया।

"अच्छी गत बना दी इस छोकरे ने!" जोंकमार ने कहा। "आपकी गुद्दी पर उम्दा क़िस्म की दो दर्जन जोंकें लगानी पड़ेंगी..."

कारावास बारावास गरज उठा:

"सत्यानाश हो! फटाफट पीछा करना चाहिए इन बदमाशों का!"

कारावास बारावास और जोंकमार भगोड़ों की खोज में चल पड़े। वे घास हटा-हटाकर हर झाड़ी के अन्दर झांक रहे थे, हर ढूह की छानबीन कर रहे थे।

उन्होंने एक पुराने चीड़ की जड़ों के पास से अलाव का धुआं उठते हुए देखा, पर उनके दिमाग में यह नहीं आया कि लकड़ी के पुतले इसी गुफा में छिपकर बैठे हुए हैं और उन्होंने अलाव भी जला रखा है।

"इस बदमाश बुरातीनो के मैं टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा!" कारावास बारावास बड़बड़ा रहा था।

भगोड़े गुफा में दुबककर बैठे रहे।

अब क्या किया जाये? निकल भागा जाये? लेकिन आर्तेमोन गाढ़ी नींद में सोया हुआ था; उसके सारे शरीर पर पट्टियां बंधी हुई थीं। घाव भरने के लिये उसे कम से कम चौबीस घण्टे का आराम चाहिये था।

क्या इतने वफ़ादार कुत्ते को गुफा में अकेले छोड़ जाना उचित होगा?

नहीं, नहीं, साथ निभाना ही होगा। जियेंगे तो साथ-साथ, मरेंगे तो साथ-साथ।

बुरातीनो, पियेरो और मलवीना गुफा में काफ़ी अन्दर जाकर मुंह से मुंह सटाये देर तक सलाह-मशविरा करते रहे। अन्त में वे इस नतीजे पर पहुंचे: सुबह तक वहीं रुक लिया जाये, गुफा के मुहाने को टहनियों से छिपा दिया जाये और आर्तेमोन की बेहतर देखभाल की जाये।

बुरातीनो बोला:

"चाहे जो भी हो, मैं कारावास बारावास से यह भेद जान ही लेना चाहता हूं कि वह दरवाज़ा

कहां है जो सोने की चाबी से खुलता है। दरवाज़े के उस पार ज़रूर कोई आश्चर्यजनक चीज़ छिपी है... और वह हमें ज़रूर सुखी बनायेगी।"

"आपके बिना मुझे डर लगता है, जी धक-धक करने लगता है," मलवीना ने ठण्डी आहें भरीं।

"और यह पियेरो यहां किसलिये है?"

"अरे, वह तो बस कवितायें सुनाता रहता है..."

"मैं मलवीना की रक्षा करूंगा शेर की तरह," पियेरो अपनी आवाज़ भारी करते हुए बोला। "आप लोग मुझे अभी जानते ही कहां हैं..."

"शाबाश पियेरो, ऐसा तो तुम्हें होना ही चाहिये था!"

बुरातीनो काराबास बाराबास और जोंकमार का पीछा करते हुए उसी रास्ते से चल पड़ा, जिधर से वे अभी-अभी गुज़रे थे।

वे शीघ्र ही दिख गये। कठपुतली थियेटर का मालिक एक सोते के किनारे बैठा हुआ था। जोंकमार उसके गुमटे पर जंगली जड़ी-बूटियों का लेप लगा रहा था। काराबास बाराबास के खाली पेट से गुड़गुड़ और जोंकमार के पेट में कूदते चूहों की चीं-चीं दूर से ही सुनायी पड़ रही थी।

"सिनियोर, हमें कुछ खाने का इन्तज़ाम करना पड़ेगा," जोंकमार कह रहा था, "इन बदमाशों के चक्कर में तो रात गुज़र जायेगी।"

"मैं तो अभी पूरा बकरा हज़म कर जाऊं, और ऊपर से दो बतख भी," काराबास बाराबास ने उदास होकर कहा।

दोनों दोस्त 'तीन मछली' ढाबे की ओर चल पड़े; उसका साइनबोर्ड दूर से ही दिख रहा था। लेकिन काराबास बाराबास और जोंकमार के पहुंचने से पहले बुरातीनो वहां पहुंच गया। वह घास में झुक-झुककर चल रहा था ताकि वे उसे देख न लें।

ढाबे के पास बुरातीनो दबे पांव मुर्गे की ओर बढ़ा। यह मुर्गा वहीं पर चहलक़दमी कर रहा था। जब उसे अनाज का कोई दाना मिल जाता था, वह गर्व के साथ अपनी लाल कलगी पीछे की ओर झटक देता था, पंजों से ज़मीन खुरचने लगता था और ख़ुशी से मुर्गियों को दावत देने लगता था:

"कुकड़ूं-कूं!"

बुरातीनो ने बादाम की पेस्ट्री का चूरा हथेली पर रखकर उसकी ओर बढ़ाया:

"ज़ायका लीजिये, सेनापति जी!"

मुर्गे ने लकड़ी के बच्चे को ज़रा कड़ी निगाह से देखा, फिर खुद को रोक न सका और चोंच मार ही दी उसकी हथेली पर।

"कुकड़ूं-कूं!"

"सेनापति जी, मुझे ढाबे में जाना है, लेकिन मुझे कोई देख न सके। बस, चुपके-



चुपके ! मैं आपकी ख़ूबसूरत रंग-बिरंगी दुम के पीछे छिप जाता हूं और आप मुझे अलावघर तक पहुंचा ही देंगे। ठीक है न ?"

"कुकड़ूं-कूं !" मुर्गे ने ज़रा और भी गर्व से कहा।

वह कुछ समझा नहीं था, लेकिन यह दिखाने के लिये कि उसने सब कुछ समझ लिया है, वह शान से ढाबे के खुले हुए दरवाज़े की ओर बढ़ गया। बुरातीनो ने उसे डैनों के नीचे से पकड़ लिया और उसकी दुम तले छिप गया। बड़े घमंड से चलता हुआ वह अलावघर के पास पहुंच गया। वहां ढाबे का गंजा मालिक बर्तन खनखनाता हुआ अपने काम में मगन था।

"चल भाग यहां से, कवाव में हड्डी !" मालिक मुर्गे पर चिल्लाया और उसे ऐसा पैर मारा कि बेचारा मुर्गा – "कुक-कुड़क-कुक !" – करता हुआ बाहर सड़क पर सहमी हुई मुर्गियों के पास जा पहुंचा।

बुरातीनो चुपके से मालिक के पांव के पास से निकलकर मिट्टी के एक बड़े से घड़े के पीछे छिप गया। ढाबा मालिक ने उसे देखा भी नहीं।

इसी समय काराबास बाराबास और जोंकमार की आवाज़ सुनायी दी।

ढाबे का मालिक अदब से नीचे झुकता हुआ उनके स्वागत में निकलकर बाहर आया।

तब तक बुरातीनो मिट्टी के घड़े में घुसकर बैठ गया।



सोने की चाबी का रहस्य खुला

कारावास बाराबास और जोंकमार खाने-पीने में जुटे हुए थे। ढाबा मालिक उनके गिलासों में शराब उंडेल रहा था।

कारावास बाराबास हड्डी चिचोड़ते हुए ढाबा मालिक से कह रहा था :

"यह शराब बिलकुल बेकार है, चलो, उस घड़े से ढालो!" और उसने उस घड़े की ओर इशारा किया जिसमें बुरातीनो छिपकर बैठा हुआ था।

"सिनियोर, यह घड़ा तो खाली है," ढाबा मालिक ने कहा।

"झूठ बोलता है, दिखा तो ज़रा।"

तब ढाबा मालिक ने घड़ा उठाकर उलट दिया। बुरातीनो ने पूरा ज़ोर लगाकर हाथ-पैर घड़े की दीवारों से अड़ा लिये, ताकि लुढ़ककर गिरे नहीं।

"उसमें कुछ काला-काला दिख रहा है," कारावास बाराबास ने घरघराती हुई आवाज़ में कहा।

"उसमें कुछ सफ़ेद-सफ़ेद दिख रहा है," जोंकमार ने हां में हां मिलाते हुए कहा।

"महाशयो, मेरी जीभ में कीड़े पड़ जायें, मेरी कमर टूट जाये, यह घड़ा बिल्कुल खाली है!"

"अच्छा, तब उसे मेज़ पर रख दो, हम उसमें हड्डियां फेंकेंगे।"

घड़े को कठपुतली थियेटर के मालिक और जोंकमार के बीच में रख दिया गया। बुरातीनो के सिर पर चिचोड़ी हुई हड्डियां तड़ातड़ बरसने लगीं।

कारावास बाराबास ने नशे में धुत्त होकर अपनी दाढ़ी अलाव के सामने फैला दी, ताकि उसमें चिपकी हुई राल पिघलकर बह जाये।

"बुरातीनो को एक हथेली पर रखूंगा," उसने शेखी बघारते हुए कहा, "और दूसरी हथेली से मच्छर की तरह उसे मसल दूंगा, चटनी बना दूंगा।"

"इस बदमाश के साथ यही करना चाहिये," जोंकमार ने हां में हां मिलायी, "लेकिन पहले उसकी देह में जोंकें लगा देनी चाहिए, ताकि वे उसका सारा ख़ून चूस लें..."

"नहीं!" कारावास बाराबास ने मेज़ पर मुक्का मारते हुए कहा, "पहले मैं उससे सोने की चाबी छीन लूंगा..."

बातचीत में ढाबा मालिक भी पीछे न रहा, अब तक वह कठपुतलों के भागने की ख़बर सुन चुका था।

"सिनियोर, आप लोगों को उसकी तलाश में भटकने की ज़रूरत नहीं। आप यहीं आराम से शराब पियें, मैं अपने दो चुस्त वफ़ादारों को भेजता हूं, वे देखते-देखते सारा जंगल छान मारेंगे और बुरातीनो को उठाकर यहां ले आयेंगे।"

"ठीक है, भेज दो उन्हें," कारावास बारावास ने अपने जूते के मोटे तले सुखाने के लिये उन्हें आग की तरफ़ बढ़ाते हुए कहा। वह नशे में चूर हो चुका था, सो गला फाड़-फाड़कर गाने लगा:

"मेरे लोग अजब हैं,
मूर्ख और कठमग़ज़ हैं।
कठपुतलियों का मालिक हूं मैं,
अब जानो तुम कौन हूं मैं...
ख़ौफ़नाक कारावास,
तानाशाह बारावास...
पुतले मुझसे डरते हैं,
मेरे सामने झुकते हैं।
चाहे तू नन्ही-मुन्नी पुतली है,
मेरे हाथों की ही कठपुतली है।
चाहे तू बदमाश घोड़ा है,
हाथों में मेरे कोड़ा है।
कोड़ा मेरा सातमुंहा,
कोड़ा मेरा सातमुंहा।
दिखलाऊंगा कोड़े की मार,
डांट और छोटी सी फटकार –
पुतले सब गायेंगे,
पैसे सब बरसायेंगे
झोली में मेरी झमझम,
झोली में मेरी झमझम..."

तभी बुरातीनो घड़े के भीतर से गूंजती आवाज़ में बोलने लगा:

"भेद खोल, अभागे, भेद खोल!"

एकाएक इस आवाज़ से काराबास बाराबास के होश उड़ गये, वह जोंकमार की ओर आंखें फाड़-फाड़कर देखने लगा।

"यह तुम बोल रहे थे?"

"नहीं तो..."

"तो फिर किसने भेद खोलने को कहा?"

जोंकमार अन्धविश्वासी आदमी था, इसके अलावा वह भी नशे में धुत्त था। डर के मारे उसका चेहरा स्याह पड़कर मुरझा गया।

उसे देखकर काराबास बाराबास के भी रोंगटे खड़े हो गये।

"भेद खोल," घड़े के अन्दर से फिर वही आवाज़ गूंजने लगी, "भेद बता, नहीं तो इस जगह से ज़िन्दा नहीं उठेगा!"

कारावास बारावास ने उछलकर खड़े होने की कोशिश की, लेकिन वह उठ नहीं सका।

"क-क-कौन सा भ-भ-भेद?" उसने हकलाते हुए पूछा।

आवाज़ ने जवाब दिया:

"बूढ़े कछुए वाला भेद!"

डर के मारे जोंकमार मेज़ के नीचे खिसक गया। काराबास बाराबास का मुंह खुला का खुला रह गया।

"दरवाज़ा कहां है, दरवाज़ा कहां है?" आवाज़ फिर से रहस्यमय आकाशवाणी की तरह गूंजने लगी...

"अभी बतलाता हूं, अभी बतलाता हूं, चुप हो जाओ!" काराबास बाराबास फुसफुसाया। "दरवाज़ा बूढ़े कार्लो के कमरे में, अलावघर की तस्वीर के पीछे है..."

उसने इतनी बात कही ही थी कि ढाबा मालिक आ धमका।

"ये हैं हमारे विश्वसनीय मददगार! इन्हें पैसे दें, तो ये शैतान को भी पकड़कर हाज़िर कर देंगे, सिनियोर..."

और उसने दहलीज़ पर खड़ी लोमड़ी अलीसा और बिल्ले बज़ीलिओ की ओर इशारा किया। लोमड़ी ने अपना पुराना हैट उतारते हुए अभिवादन किया।

"सिनियोर काराबास बाराबास, हम गरीबों को सोने के दस सिक्के दान कर दें और हम बदमाश बुरातीनो को यहीं, इसी क्षण हाज़िर किये देते हैं।"

काराबास बाराबास ने दाढ़ी के नीचे जेब में हाथ डाला और सोने के दस सिक्के निकालकर दे दिये।

"ये रहे पैसे, बुरातीनो कहां है?"

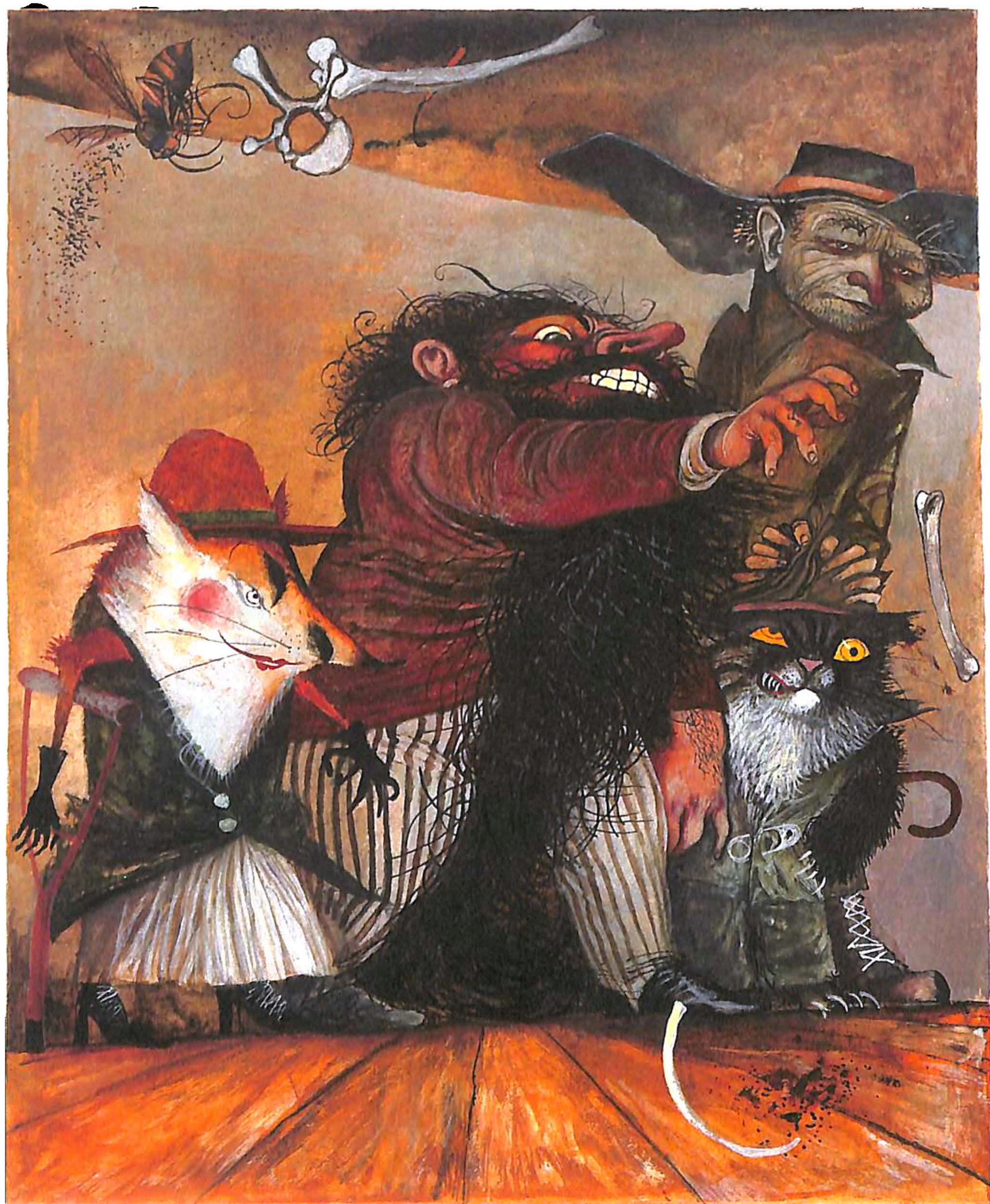
लोमड़ी ने कई बार सिक्के गिने फिर ठण्डी आह भरकर आधे सिक्के बिल्ले को दे दिये और पंजे से इशारा किया:

"वह इस घड़े में छिपा है, सिनियोर, ठीक आपके सामने..."

काराबास बाराबास ने मेज़ पर से घड़ा उठाया और उसे गुस्से में फ़र्श पर पटक दिया। घड़े के टुकड़ों और चिचोड़ी हुई हड्डियों के ढेर से बुरातीनो उछलकर खड़ा हो गया। सभी भौचक थे, इसी बीच वह तीर की तरह ढाबे से बाहर निकल भागा – सीधा मुर्गे की ओर, जो बड़े गर्व के साथ मरे हुए केंचुए का, कभी एक आंख से, तो कभी दूसरी आंख से निरीक्षण कर रहा था।

"यह तूने मेरे साथ ग़द्दारी की है, खूसट बूढ़े!" बुरातीनो ने गुस्से में नाक तरेरते हुए कहा। "चल, अब सिर पर पांव रखकर भाग ले यहां से..."

और उसने सेनापति की रंग-बिरंगी दुम कसकर पकड़ ली। मुर्गा कुछ समझा-बूझा तो





नहीं, लेकिन उसने अपने पंख फैला दिये और अपनी ऊंची-ऊंची टांगों से दौड़ पड़ा। बुरातीनो जैसे बवंडर में फंस गया हो, उसके पीछे-पीछे ढलान पर उतरा, रास्ते के पार पहुंचा, फिर मैदान से गुज़रता हुआ जंगल की ओर छलांगें लगाता चला गया।

कारावास बारावास, जोंकमार और ढाबा मालिक को आख़िर होश आया और वे बुरातीनो का पीछा करने के लिए दौड़ पड़े। लेकिन आसपास बहुत खोज-बीन करने पर भी बुरातीनो उन्हें नहीं दिखा, सिर्फ़ दूर मैदान में अकेला मुर्गा भागता जा रहा था। लेकिन सबको पता था कि वह सनकी मुर्गा है, किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।



बुरातीनो पहली बार हतोत्साह हुआ, लेकिन जल्द ही सब ठीक हो गया

सनकी मुर्गा बिलकुल थक चुका था, वह चोंच बाये मुश्किल से दौड़ पा रहा था। अन्त में बुरातीनो ने उसकी दुम छोड़ दी।

"जाओ, सेनापति जी, अब अपनी मुर्गियों के पास लौट जाओ..."

और अब वह राजहंसोंवाली झील की ओर अकेला ही चल पड़ा, जो टहनियों के बीच से चमक रही थी।

वह रहा पथरीले टीलेवाला चीड़ वृक्ष, और वह रही गुफा। चारों तरफ़ टूटी हुई टहनियां बिखरी पड़ी थीं। घास किसी बग्घी के पहियों से कुचली हुई थी।

बुरातीनो का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। वह टीले से उछलकर पेड़ की उलझी हुई जड़ों में झांकने लगा...

गुफा खाली थी!!!

वहां न मलवीना थी, न पियेरो, न आर्तेमोन।

सिर्फ़ दो चिथड़े पड़े हुए थे। उसने उन्हें उठाया; ये पियेरो की कमीज़ की आस्तीनें थीं।

दोस्तों का किसी ने अपहरण कर लिया है। उनकी मौत हो चुकी है! बुरातीनो मारे दुख के औंधे मुंह गिर पड़ा। उसकी लम्बी नाक ज़मीन में धंस गयी।

अब उसे समझ में आया कि मित्र उसे कितने प्यारे थे। भले ही मलवीना उपदेश दिया करे और पियेरो हज़ारों बार अपनी कवितायें सुनाता रहे, उन्हें सुना-सुनाकर बोर करता रहे, लेकिन दोस्त तो दोस्त ही होते हैं। बुरातीनो फिर से उन्हें पाने के लिए, बस एक झलक देखने भर के लिये सोने की चाबी तक किसी को दे सकता है।

उसके सिर के पास धीरे से भुरभुरी मिट्टी का गुबार



सा उठा और उसके नीचे से मखमली छछूंदर निकल आया ; उसकी हथेलियां गुलाबी थीं, उसने तीन बार छींका और फिर बोला:

"मैं तो अन्धा हूं, लेकिन सुनता बहुत अच्छी तरह हूं। यहां मेढ़ों से जुती एक बग्घी आयी थी। उसमें मूरखनगरी का गवर्नर लोमड़ और उसके अंगरक्षक जासूस बैठे हुए थे। गवर्नर ने आज्ञा दी:

"'पकड़ लो इन बदमाशों को, इन्होंने ड्यूटी पर तैनात मेरे बहादुर सिपाहियों की पिटायी की है! पकड़ो!'

"अंगरक्षक जासूसों ने जवाब दिया:

"'भौं-भौं!'

"सभी गुफा में घुस पड़े, वहां ख़ूब हाथापायी हुई। तुम्हारे मित्रों को सामान समेत बांधकर ले गये हैं। बस, बग्घी पर लादा और चले गये।"

अब नाक ज़मीन में धंसाकर लेटने से क्या फ़ायदा? बुरातीनो फुर्ती से उठा और पहिये के निशानों को टोहता हुआ दौड़ने लगा। झील का आधा चक्कर लगाकर वह घनी घासवाले मैदान में पहुंचा।

वह चलता रहा, चलता रहा... दिमाग़ में कोई योजना नहीं थी। बस, मित्रों को बचाना था।

वह खड़ी चट्टान के क़रीब आया जहां से वह परसों रात झाड़ियों में लुढ़ककर गिर गया था। नीचे उसने गन्दा तालाब देखा, जिसमें बूढ़ा कछुआ रहता था। तालाब की ओर जानेवाले रास्ते पर ही बग्घी जा रही थी; उसे दो मरियल मेढ़े खींच रहे थे – वे हड्डियों का ढांचा मात्र थे।

बग्घी को एक मुस्टंडा बिल्ला हांक रहा था, उसके गाल गोलगप्पे की तरह फूले हुए थे, आंखों पर सोने के फ़्रेमवाला चश्मा लगा हुआ था। उसका काम था गवर्नर लोमड़ के कान भरना। उसके ठीक पीछे गवर्नर लोमड़ महाराज विराजमान थे... गठरियों पर मलवीना, पियेरो और ज़ख़्मी आर्तेमोन बंधे पड़े थें। आर्तेमोन की ख़ूबसूरत पूंछ हमेशा कंघी की हुई होती थी, लेकिन अब वह धूल में घिसट रही थी।

बग्घी के पीछे-पीछे दो अंगरक्षक जासूस डाबरमैन-पिंचर चल रहे थे।

अचानक जासूसों ने अपने थोबड़े ऊपर उठाये। उन्हें खड़ी चट्टान पर बुरातीनो की सफ़ेद टोपी दिख गयी।

दोनों कुत्ते लम्बी छलांगें लगाते हुए चट्टान पर चढ़ने लगे। लेकिन जब तक वे ऊपर पहुंचते, इसके पहले ही बुरातीनो ने सिर के ऊपर हाथ बांधकर हरी काई से ढंके गन्दे तालाब में छलांग लगा दी। उसके सामने कोई दूसरा चारा न था।

वह हवा में तिरछा उड़ता हुआ तालाब में बूढ़े कछुए कूबर की शरण में पहुंच गया होता, लेकिन तेज़ हवा का रुख दूसरी दिशा की ओर था।

तेज़ हवा ने लकड़ी के हल्के-फुल्के बुरातीनो को अपनी चपेट में ले लिया और उसे नचाते हुए बग्घी पर बैठे गवर्नर लोमड़ के सिर पर ला पटका।

सोने के फ़्रेमवाला चश्मा लगाये मुस्टंडा बिल्ला इस आकस्मिक घटना से घबराकर बग्घी से गिर पड़ा और चूंकि वह कमीना और कायर था, इसलिए उसने बेहोश होने का ढोंग रच लिया।

गवर्नर लोमड़ भी बहुत डरपोक था, इसलिए किकियाता हुआ ढलान पर चढ़ने लगा, रास्ते में बिज्जू की मांद दिखी, बस उसी में घुस गया। वहां भी उसे चैन नहीं पड़ा – बिज्जू ऐसे मेहमानों को सज़ा देने से बाज़ नहीं आते।

बग्घी से जुते मेढ़े भाग खड़े हुए, बग्घी उलट गयी। मलवीना, पियेरो और आर्तेमोन गठरियों समेत लुढ़कते-पुढ़कते बर्डाक की घनी झाड़ियों में पहुंच गये।



यह सब इतनी जल्दी हुआ था कि मेरे नन्हे-मुन्ने प्रिय पाठको, तुम इतने कम समय में अपने हाथ की उंगलियां भी न गिन पाये होते।

दोनों जासूस कुत्ते लम्बी छलांगें लगाते हुए नीचे उतरने लगे। उलटी हुई बग्घी के पास आकर उन्होंने देखा कि मोटा बिल्ला बेहोश पड़ा है। बर्डाक की झाड़ियों में उन्होंने लकड़ी के नन्हे इनसानों और पट्टियों से बंधे कुत्ते आर्तेमोन को भी देखा।

पर गवर्नर लोमड़ कहीं नदारद था।

वह जैसे धरती में समा गया हो। अंगरक्षकों को जिसकी हिफ़ाज़त करनी चाहिए थी, वही गायब हो गया।

उसका एक अंगरक्षक थोबड़ा उठाकर निराशा और घबराहट से किकियाया।

दूसरे अंगरक्षक ने भी यही किया।

वे लपककर गवर्नर की खोज में जुट गये। उन्होंने उस पथरीली ढलान का चप्पा-चप्पा छान मारा और फिर वे ज़ोर से बिलख





पड़े क्योंकि अब उन्हें कोड़े और जेल के सीखचे दिखलायी पड़ने लगे थे।

निराश होकर वे दुम हिलाते हुए मूरखनगरी की ओर भागे–पुलिस थाने पर झूठी रिपोर्ट लिखाने कि गवर्नर साहब सशरीर स्वर्ग बुला लिये गये हैं। रास्ते में वे अपने बचाव के लिए यही सब अनाप-शनाप बातें सोचते जा रहे थे।

बुरातीनो ने अपना दुबला-पतला शरीर टटोलकर देखा – हाथ-पैर सही सलामत थे। वह रेंगता हुआ बर्डाक की झाड़ियों में गया और उसने मलवीना तथा पियेरो की रस्सियां खोलकर उन्हें आज़ाद कर दिया।

मलवीना ने चुपचाप उसे गले लगाया ; सिर्फ़ उसे चूम नहीं सकी – बुरातीनो की लम्बी नाक जो बाधक हो रही थी।

पियेरो की आस्तीनें गायब थीं, गालों पर लगा सफ़ेद पाउडर कभी का झड़ चुका था। पता चला कि कविताओं के शौक के बावजूद उसके गाल सब के जैसे ही थे।

"मैंने जमकर मुक़ाबला किया था," उसने भारी आवाज़ में कहा। "यदि मुझे लंगड़ी नहीं मारी होती, तो मुझे कभी भी पकड़ नहीं सकते थे।"

मलवीना ने उसकी बात का समर्थन किया :

"हां, यह बिलकुल शेर की तरह लड़ा था।"

उसने पियेरो को गले लगाकर उसके दोनों गालों को चूम लिया।

"बहुत हो गया, ख़त्म भी करो यह चूमना-चाटना," बुरातीनो बड़बड़ाया। "अब यहां से तुरन्त भागना चाहिए। आर्तेमोन को दुम घसीटते हुए ले जायेंगे।"

तीनों ने मिलकर बेचारे कुत्ते की दुम पकड़ ली और चढ़ाई पर ऊपर की ओर खींचने लगे।

"यह तो घोर अपमान है। मुझे छोड़ दो, मैं ख़ुद ही चल लूंगा," घायल आर्तेमोन ने कराहते हुए कहा।

"नहीं, नहीं, तुम अभी बहुत कमज़ोर हो।"

लेकिन वे अभी आधी ऊंचाई ही तय कर पाये थे कि ऊपर काराबास बाराबास और जोंकमार नज़र आये। लोमड़ी अलीसा उनकी ओर पंजों से इशारे कर रही थी और बिल्ला बज़ीलिओ मूंछ फुलाये ग़ुस्से से फुफकारे जा रहा था।

"हा-हा-हा, क्या ख़ूब रही!" काराबास बाराबास ने ठहाका लगाया, "सोने की चाबी ख़ुद चली आ रही है!"

बुरातीनो पलक झपकते ही यह सोचने लगा कि अब इस नयी मुसीबत से कैसे पीछा छुड़ाया जाये। पियेरो ने मलवीना को अपने सीने से लगा लिया। वह अपनी जान की बाज़ी लगाने को तैयार था। लेकिन इस बार बच निकलने की कोई आशा न थी।

जोंकमार ढलान पर खड़ा ही-ही-ही कर रहा था :

"बीमार कुत्ता, सिनियोर काराबास बाराबास, मुझे दे दीजियेगा, मैं उसे तालाब में जोंकों के हवाले कर दूंगा, ताकि वे ज़रा और मोटी-तगड़ी हो जायें..."



थुलथुल शरीरवाले कारावास बारावास को नीचे उतरने में आलस लग रहा था, इसलिये वह भगोड़ों को पुचकारता और मोटी उंगली से इशारा करता हुआ ऊपर बुला रहा था:

"आओ, इधर आ जाओ, मेरे नटखट बच्चो..."

"सब अपनी जगह पर खड़े रहो!" बुरातीनो ने हुक्म दिया। "जान भी देंगे, तो हंसते-हंसते! पियेरो, तुम अपनी सबसे घिनौनी कविता सुनाओ और तुम, मलवीना, ठहाका मार-कर हंसती जाओ..."

मलवीना अपनी कमियों के बावजूद एक अच्छी दोस्त थी। उसने झटपट आंसू पोंछ डाले और ज़ोर-ज़ोर से ठहाके लगाने लगी, ऐसे कि ऊपर खड़े लोग चिढ़ जायें।

पियेरो कविता बना-बनाकर भद्दी सी आवाज़ में गाकर सुनाने लगा:

"लोमड़ी अलीसा का देखो बुरा हाल,
पीठ पर बजते डण्डों का कमाल!
भिखमंगा बज़ीलिओ वाहियात भुक्खड़,
चोर जमाने का बीन रहा टुक्कड़!
जोंकमार दुर-दुर तू दूर भाग,
लात और घूंसे फूटे तेरे भाग।
कारावास बारावास पहलवानी करता,
बुरातीनो उससे अब नहीं डरता!"

बुरातीनो तरह-तरह का मुंह बनाकर उन्हें चिढ़ाता जा रहा था:

"ओ, कठपुतली थियेटर के मालिक, धम-धूसर तोन्दूमल, ज़रा इधर आ, तेरी छितरी दाढ़ी पर थूक दूं!"

यह सुनते ही काराबास बाराबास दहाड़ने लगा। जोंकमार ने अपने दुबले-पतले हाथ आकाश की ओर उठा लिये।

लोमड़ी अलीसा ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा:

"हुक्म दीजिये, मैं इन बेशर्मों की गरदनें मरोड़ दूं!"

बस, एक मिनट में सारा खेल ख़त्म हो जाता कि... तभी ढेर सारी अबाबीलों का झुण्ड सायं-सायं करता हुआ मंडराने लगा:

"यहां, यहां, यहां!"

काराबास बाराबास के ठीक सिर पर उड़ता हुआ एक कौवा अपनी कर्कश आवाज़ में बोल उठा:

"जल्दी, जल्दी, जल्दी!"

ढलान के ऊपर बूढ़ा पापा कार्लो नज़र आया। उसकी आस्तीनें चढ़ी थीं, भौंहें तनी थीं और हाथ में एक मोटा सा सोटा था...

पापा कार्लो ने कन्धे से काराबास बाराबास को एक ओर धकेला, कोहनी से जोंकमार को

दूसरी ओर, सोटे से लोमड़ी अलीसा की पीठ बजा दी और एक ठोकर मारकर बिल्ले की भी ख़बर ले ली...

इसके बाद उसने झुककर नीचे की ओर देखा, जहां लकड़ी के नन्हे-मुन्ने खड़े थे। वह ख़ुशी से भरकर चहक उठा। फिर बोला:

"मेरे बेटे, बुरातीनो, शैतान कहीं का, तू जीता-जागता मिल ही गया! आ, मेरे पास आ, जल्दी से!"



पापा कार्लो, मलवीना,
पियेरो और आर्तेमोन को लेकर बुरातीनो घर लौटा

पापा कार्लो के सोटे और क्रोध से तमतमाये चेहरे को देखकर सभी बदमाश थरथर कांपने लगे।

लोमड़ी अलीसा धीरे से घनी घास में दुबक गयी और वहां से तुरन्त रफ़ूचक्कर हो गयी, सिर्फ़ कभी-कभी चोट सहलाने के लिए रुक जाती थी।

बिल्ला बज़ीलिओ जूते की ठोकर से दस क़दम दूर जा गिरा, वहां से वह गुस्से से फुफकार रहा था, जैसे किसी ने साइकिल के टायर में सुई चुभो दी हो।

जोंकमार अपने हरे ओवरकोट को संभालते हुए तेज़ी से नीचे की ओर भागा, वह बार-बार यही बोलता जा रहा था:

"मैंने कुछ नहीं किया, मैंने कुछ नहीं किया..."

लेकिन ढलान पर एक खड़ी चट्टान से पैर फिसलते ही वह लुढ़कता हुआ बजबजाते तालाब में भयंकर शोर-शराबे के साथ जा गिरा।

काराबास बाराबास वहीं का वहीं बुत बना खड़ा रहा, उसने कंधों के बीच गर्दन धंसा लिया; उसकी लम्बी दाढ़ी गीले चिथड़े की तरह झूल रही थी।

बुरातीनो, पियेरो और मलवीना चट्टान के ऊपर चढ़ गये। पापा कार्लो एक-एक को संभालता, हाथ में उठाता और उंगली से धमकाकर यह कहता:

"ठहर, शैतान, ठहर!"

और उन्हें अपनी कमर में खोंस लेता था।

इसके बाद वह ढलान पर कुछ क़दम नीचे उतरा और दुखी आर्तेमोन के पास बैठकर उसे देखने लगा। वफ़ादार आर्तेमोन ने थोबड़ा उठाया और कार्लो की नाक चाट ली। बुरातीनो इसी क्षण कमरबन्द से झांकता हुआ बोला:

"पापा कार्लो, हम कुत्ते के बिना घर नहीं जायेंगे।"

"ओह, बच्चो," कार्लो ने कहा, "यह तो भारी पड़ेगा। ख़ैर, तुम्हारे कुत्ते को भी किसी तरह लाद लूंगा।"

उसने आर्तेमोन को कन्धे पर उठाया और बोझ से हांफते हुए ऊपर चढ़ने लगा, जहां काराबास बाराबास पहले की तरह अभी भी कंधों के बीच गर्दन धंसाये आंखें तरेर रहा था।

"कठपुतले मेरे हैं..." वह बड़बड़ाया।

पापा कार्लो ने उसे डांटते हुए कहा:

"अरे, तू! बुढ़ापे में चोर-उचक्कों से दोस्ती कर बैठा। लोमड़ी और बिल्ले के खोटे

कारनामों को कौन नहीं जानता? और ऊपर से जोंकमार तुम्हारा दोस्त बन गया। तुम लोग मिलकर नन्हे-मुन्नों को सताते हो! तुम्हें शर्म आनी चाहिए, डाक्टर!"

और फिर कार्लो शहर की ओर चैल पड़ा।

काराबास बाराबास अपनी गर्दन सिकोड़े पीछे-पीछे चलने लगा:

"कठपुतले मेरे हैं, मुझे वापस कर दो!"

"बिलकुल मत देना!" बुरातीनो ने कमरबन्द से उचकते हुए चिल्लाकर कहा।

बस, वे इसी तरह चलते रहे। 'तीन मछली' ढाबा पीछे छूट गया, जहां दरवाज़े पर खड़ा गंजा मालिक झुक-झुककर अभिवादन कर रहा था और दोनों हाथों से चूल्हे पर छनछनाते तवे की ओर इशारा करता जा रहा था। ढाबे के पास नुची हुई दुमवाला मुर्गा गुस्से में आगे-पीछे चहलक़दमी करता हुआ यह बता रहा था कि बुरातीनो ने उसके साथ क्या-क्या शैतानियां की हैं। मुर्गियां सहानुभूति जताते हुए हां में हां मिलाकर कह रही थीं:

"आह, वह कितना शैतान है! उफ़, बदनसीब मुर्गा!"

कार्लो एक पहाड़ी टीले पर चढ़ा जहां से समुद्र दिख रहा था। हवा बहने से उसकी सतह पर जगह-जगह धुंधली धारियां पैदा हो जाती थीं। तेज़ धूप में समुद्र के किनारे बालू के रंग का पुराना शहर तथा कठपुतली थियेटर दिखलाई पड़ रहे थे।

काराबास बाराबास कार्लो से तीन क़दम पीछे खड़ा होकर बड़बड़ा रहा था:

"मैं तुम्हें इन पुतलों के बदले में सोने के सौ सिक्के दूंगा। बेच दो इन्हें।"

बुरातीनो, मलवीना और पियेरो की तो सांस ही रुक गयी – आख़िर कार्लो क्या जवाब देता है।

उसने कहा:

"नहीं! यदि तुम थियेटर के दयालु और भले मालिक होते, तो मैं तुम्हें इन नन्हे-मुन्नों को यूं ही सौंप देता। लेकिन तुम तो घड़ियाल से भी गये गुज़रे हो। तुम्हें न तो इन्हें दूंगा, न बेचूंगा, भाग जाओ यहां से।"

कार्लो टीले के उस पार नीचे उतरा और काराबास बाराबास पर फिर कोई ध्यान दिये बिना शहर में पहुंच गया।

वहां सुनसान चौराहे पर एक पुलिसवाला बुत की तरह खड़ा था।

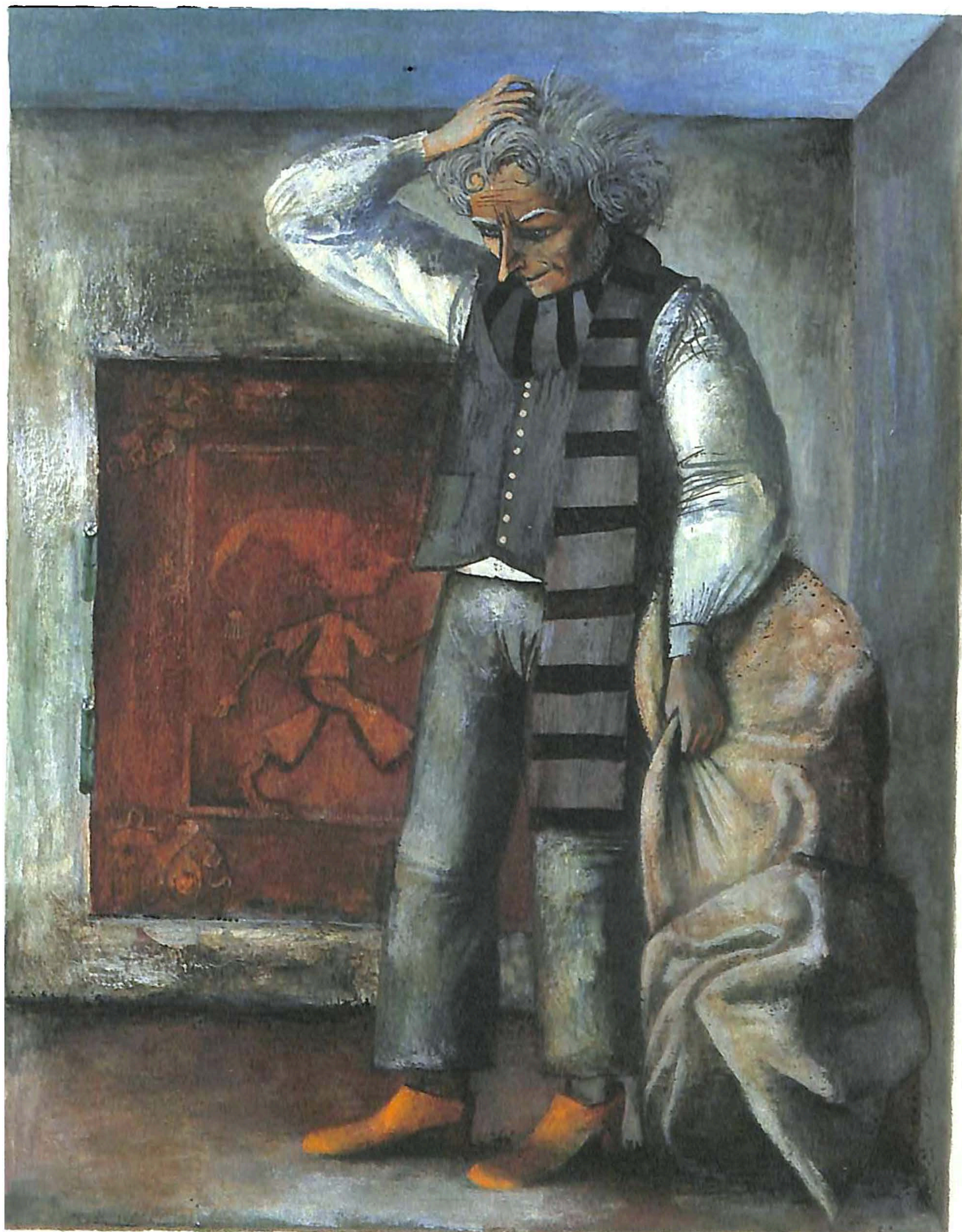
गर्मी और नीरसता के मारे उसकी मूंछें झुक गयी थीं, पलकें मुंदी जा रही थीं तथा तिकोनी टोपी पर मक्खियां भिनभिना रही थीं।

अचानक काराबास बाराबास ने अपनी दाढ़ी जेब में घुसेड़ ली, उसने पीछे से कार्लो की कमीज़ पकड़ ली और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा:

"चोर, चोर, पकड़ो, पकड़ो! यह मेरे कठपुतले चुराकर भाग रहा है!"

लेकिन पुलिसवाला, जो गर्मी और ऊबन से परेशान खड़ा था, अपनी जगह से हिला भी





नहीं। कारावास बारावास लपककर उसके पास गया और उससे कार्लो को गिरफ़्तार करने के लिए कहा।

"तू कौन है?" पुलिसवाले ने अलसाये स्वर में पूछा।

"मैं कठपुतली विज्ञान का डाक्टर हूं, विख्यात कठपुतली थियेटर का निदेशक। मुझे वड़े-बड़े खिताब मिले हैं। मैं ताबड़तोड़ राजा का निकटतम मित्र, सिनियोर कारावास बारा-बास हूं ..."

"चिल्लाओ मत यहां," पुलिसवाले ने कहा।

जब तक कारावास बारावास पुलिसवाले से बहस करता रहा, पापा कार्लो पथरीली सड़क पर लाठी खटखटाता हुआ जल्दी से घर पहुंच गया। उसने सीढ़ी के नीचेवाली अन्धेरी कोठरी का दरवाज़ा खोला, आर्तेमोन को कन्धे से उतारकर खाट पर लेटाया, कमरबन्द से बुरातीनो, मलवीना और पियेरो को निकालकर मेज़ पर पास-पास बैठाया।

मलवीना तुरन्त कहने लगी:

"पापा कार्लो, आप पहले बीमार आर्तेमोन की देखभाल करें। और तुम लोग झटपट मुंह-हाथ धो डालो ..."

अचानक हाथ पर हाथ मारते हुए वह दुखी होकर बोली:

"हाय, मेरे कपड़े! मेरे नये-नये जूते, मेरे अच्छे-अच्छे फ़ीते – सब झाड़ियों में ही रह गये!"

"कोई बात नहीं, दुखी मत हो," कार्लो ने कहा, "शाम को वहां जाकर तुम्हारी गठरियां ले आऊंगा।"

उसने बड़े प्यार से आर्तेमोन की पट्टियां खोलीं। घाव भर चुके थे। आर्तेमोन हिल-डुल नहीं सकता था, क्योंकि भूख से बेहाल था।

"काश, एक प्लेट जई की दलिया और मज़ेदार हड्डी मिल जाती," आर्तेमोन ने कराहते हुए कहा, "फिर तो मैं शहर भर के कुत्तों से लड़ लेता।"

"हाय, हाय," कार्लो ने अफ़सोस जताया, "मेरे घर में रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं है, जेब भी बिलकुल खाली है ..."

मलवीना दुखी होकर सिसकने लगी। पियेरो सोच में पड़ा माथे पर मुट्ठियां रगड़ने लगा।

"मैं अभी सड़क पर अपनी कवितायें सुनाऊंगा, राहगीरों से ढेर सारे पैसे इकट्ठे हो जायेंगे।"

"तो फिर बेटे, तुम आवारागर्दी के अपराध में हवालात की हवा खाओगे।"

बुरातीनो को छोड़कर सभी उदास हो गये। वह चालाकी से मुस्करा रहा था और इस तरह से उछल-कूद मचा रहा था जैसे वह मेज़ पर नहीं, सुई की नोक पर बैठा हो।

"भाइयो, बहुत हो चुका, अब रोना-धोना बन्द करो!" उसने फ़र्श पर कूदकर जेब मे कोई चीज़ निकाली।

"पापा कार्लो, आप ज़रा हथौड़ी लेकर दीवार से यह फटा-पुराना कैनवस उखाड़ दें।"

और उसने अपनी नुकीली लम्बी नाक तानकर अलावघर और उस पर चढ़े बर्तन तथा धुएं को दिखलाया, जो पुराने कैनवस पर चित्रित थे।

कार्लो को आश्चर्य हुआ:

"वेटा, तुम दीवार से इतने प्यारे चित्र को उखाड़ने के लिये क्यों कह रहे हो? जाड़ों में मैं जब उसे देखता हूं, तो बस कल्पना करने लगता हूं कि यह असली आग है, देगची में मसालेदार गोश्त उबल रहा है; फिर तो मुझे ख़ुद-ब-ख़ुद गर्माहट आने लगती है।"

"पापा कार्लो, मैं अपने इस कठपुतले जीवन की क़सम खाकर कहता हूं – अपने चूल्हे में अब असली आग होगी, सचमुच की देगची होगी और उसमें गर्म-गर्म खाना पक रहा होगा। बस, कैनवस उखाड़ो!"

बुरातीनो ने यह सव इतने विश्वास से कहा कि पापा कार्लो ने माथा खुजलाया, थोड़ा हिचकिचाकर संड़सी तथा हथौड़ी उठा ली और कैनवस उखाड़ने में जुट गया। इसके पीछे, जैसा कि हम जानते हैं, सब कुछ मकड़ी के जालों से ढंका हुआ था, जिसमें मरी हुई मकड़ियां लटक रही थीं।

कार्लो ने जाले साफ़ किये। तब दीवार पर एक नन्हा सा काला-काला दरवाज़ा नज़र आने लगा। उसके चारों कोनों पर हंसते-खिलखिलाते चेहरे बने हुए थे और बीच में नाचते-थिरकते एक लम्बी नाकवाले नन्हे लड़के का चित्र बना था।

जब उस पर से धूल झाड़ी गयी, तो मलवीना, पियेरो, पापा कार्लो और यहां तक कि भूख का मारा हुआ आर्तेमोन भी चीख़ पड़ा:

"अरे, यह तो बुरातीनो का चित्र है!"

"मुझे पता था यही होगा," बुरातीनो ने कहा, हालांकि उसे कुछ भी पता नहीं था, उसे ख़ुद आश्चर्य हो रहा था। "और यह रही इस ताले की चाबी। पापा कार्लो, आप इसे खोल दें..."

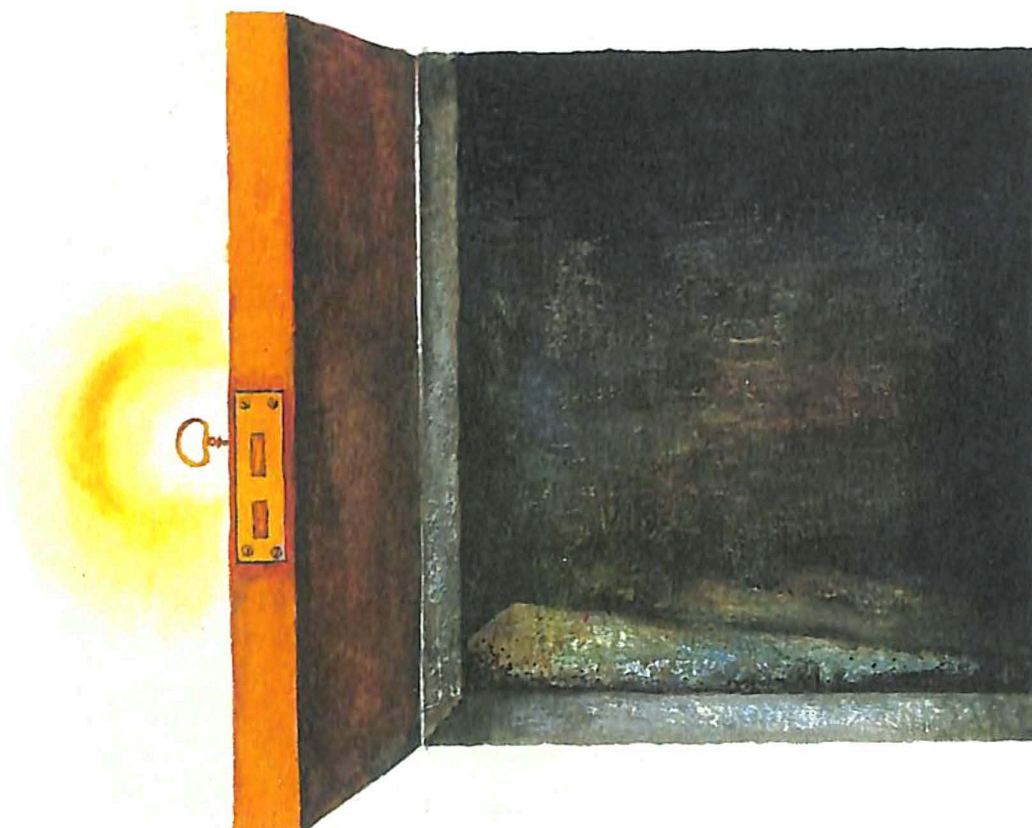
"यह दरवाज़ा और यह सोने की चाबी," कार्लो ने कहा, "बहुत पुराने ज़माने में किसी होशियार कारीगर के बनाये हुए हैं। आओ, देखते हैं दरवाज़े के पीछे छिपा क्या है।"

उसने ताले में चाबी लगायी और उसे घुमाया... वहां हल्का-हल्का मधुर संगीत गूंजने लगा। ठीक उसी तरह जैसे कोई जादू की डिबिया खोल रहा हो...

पापा कार्लो ने दरवाज़े को धकेला, वह चरमराता हुआ खुलने लगा।

ठीक इसी समय बाहर कुछ लोगों के दौड़ने की आहट लगी और कारावास बारावास की दहाड़ती हुई आवाज़ सुनायी दी:

"ताबड़तोड़ राजा के नाम पर—बदमाश कार्लो को गिरफ़्तार कर लो!"



कारावास बारावास द्वारा सीढ़ियों के नीचेवाली कोठरी में जबरन घुसने का प्रयास

कारावास बारावास, जैसा कि हम जानते हैं, कार्लो को गिरफ़्तार करने के लिए उनींदे पुलिसवाले को मना रहा था। पर उसकी चाल बेकार हो गयी। निराश होकर वह सड़क पर दौड़ने लगा।

उसकी फहरती दाढ़ी रह-रहकर राहगीरों के बटनों और छातों से उलझ जाती थी।

वह धक्का-मुक्की करता हुआ भागता जा रहा था। पीछे-पीछे नन्हे-मुन्ने बच्चों की फ़ौज सीटियां बजाती जा रही थी, बच्चे उस पर सड़े अण्डे फेंक रहे थे।

भागता हुआ कारावास बारावास शहर कोतवाल के पास जा पहुंचा। गर्मी से बेहाल कोतवाल अपने बंगले पर फ़ौव्वारे के पास निक्कर पहनकर बैठा लेमनेड पीता जा रहा था।

धम-धूसर कोतवाल इतना मोटा था कि उसकी आधा दर्जन ठुड्डियां निकल आयी थीं, फूले-फूले गालों के कारण नाक तो दिख ही नहीं रही थी। चार मनहूस पुलिसवाले उसकी खिदमत कर रहे थे। वे लेमनेड की बोतलें खोल-खोलकर दिये जा रहे थे। और कोतवाल उन्हें गटागट पीता जा रहा था।

कोतवाल के सामने कारावास बारावास घुटनों के बल गिर पड़ा, दाढ़ी से चेहरे पर बहते आंसू पोंछते हुए रोने लगा:

"हुजूर, मैं बेसहारा आदमी हूं, मुझपर अत्याचार हुआ है, मेरा सब कुछ लुट गया है, मुझे मारा भी गया है..."

"तुम्हें कौन सता रहा है?" कोतवाल ने पूछा।

"हुजूर, मेरा जानी दुश्मन बुड्ढा कार्लो है! उसने मेरे तीन सबसे अच्छे कठपुतले छीन लिये हैं, वह मेरे मशहूर कठपुतली थियेटर को जला देना चाहता है, अगर उसे गिरफ़्तार नहीं किया गया, तो पूरे शहर में उत्पात मचा देगा, उसे लूट लेगा।"

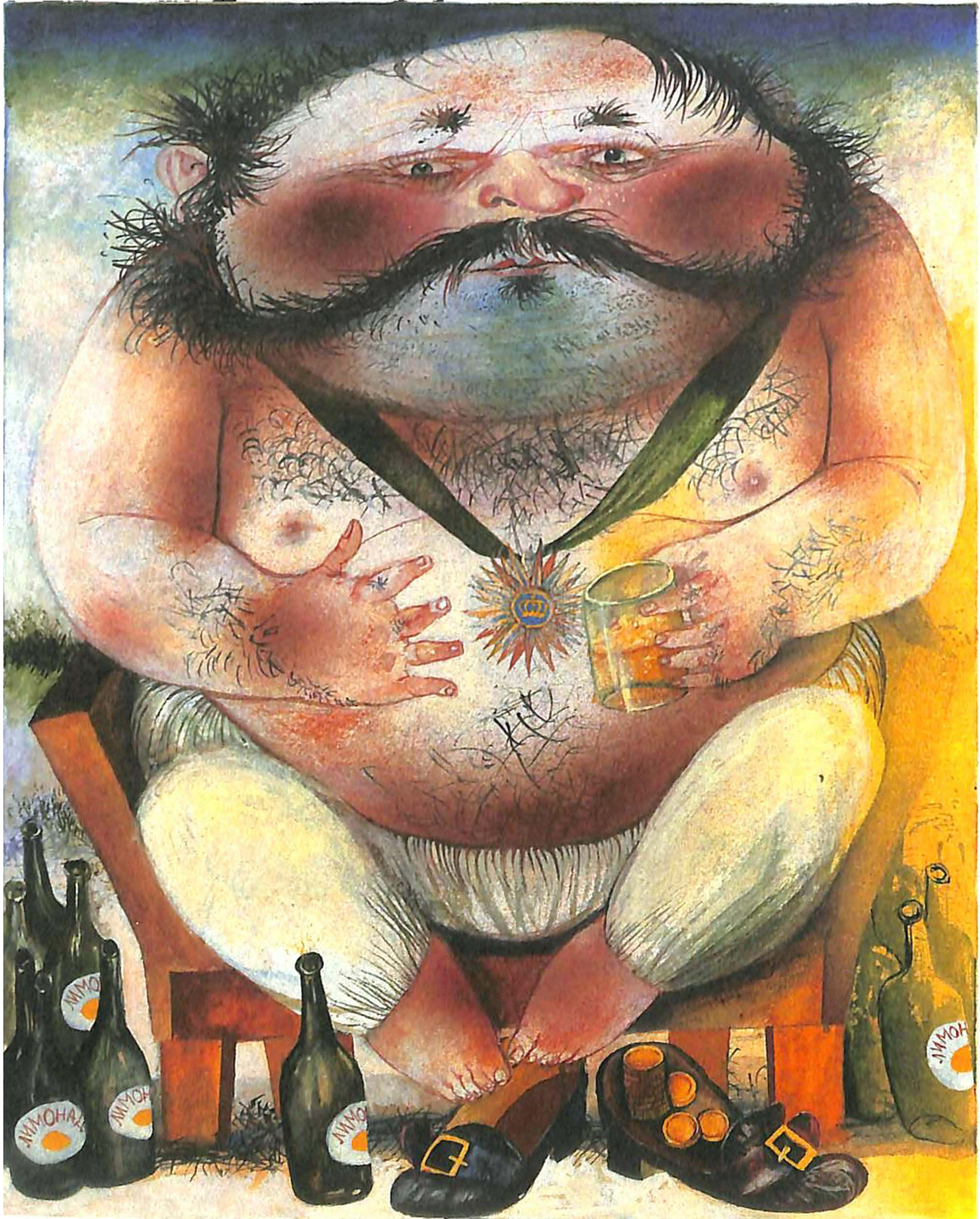
अपनी बात को सच साबित करने के लिये कारावास बारावास ने जेब से मुट्ठी भर खनखनाते सोने के सिक्के निकालकर शहर कोतवाल के जूते में घुसेड़ दिये।

बस, उसने ऐसा मायाजाल फैलाया कि कोतवाल डर गया। उसने वहां तैनात अपने चारों पुलिसवालों को तुरन्त आदेश दिया:

"इस बुजुर्ग बेसहारा आदमी के साथ जाओ और क़ानून के नाम पर जो कुछ ज़रूरी हो बेधड़क कर डालो।"

कारावास बारावास उन चारों पुलिसवालों को साथ लेकर भागता हुआ कार्लो की कोठरी पर पहुंचकर चिल्लाया:

"ताबड़तोड़ राजा के नाम पर इस चोर-उचक्के को गिरफ़्तार कर लो!"



ЛИМОНА
ЛИМОН
ЛИМОН

लेकिन दरवाज़ा बन्द था। कोठरी में से किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। काराबास बाराबास ने आदेश देते हुए कहा :

"ताबड़तोड़ राजा के नाम पर दरवाज़ा तोड़ डालो!"

पुलिसवालों ने ज़ोर लगाया, सड़ा हुआ दरवाज़ा कब्ज़ों समेत उखड़ गया और चारों पुलिसवाले शोर-शराबे के साथ सीढ़ियों के नीचेवाली कोठरी में लुढ़ककर गिर पड़े।

ठीक इसी क्षण कार्लो सिर झुकाकर दीवार में बने चोर दरवाज़े के अन्दर घुस रहा था।

उस चोर दरवाज़े से अन्दर जानेवाला वह आख़िरी आदमी था। दरवाज़ा फिर से उसी तरह खटका और बन्द हो गया। संगीत की धुन अब बन्द हो गयी थी। सीढ़ी के नीचेवाली कोठरी में सिर्फ़ गन्दी पट्टियां और अलाव के चित्रवाला फटा-पुराना कैनवस छितरा पड़ा हुआ था...

कारबास बाराबास तेज़ी से उछलकर चोर दरवाज़े तक पहुंचा और उस पर बेतहाशा मुक्के बरसाने लगा, ठोकरें मारने लगा :

"ठक-ठक-ठक-ठक!"

लेकिन यह दरवाज़ा मज़बूत था।

कारबास बाराबास ने थोड़ा पीछे हटकर फ़ुर्ती से एक ज़ोरदार धक्का मारा।

लेकिन दरवाज़े पर कोई असर न हुआ।

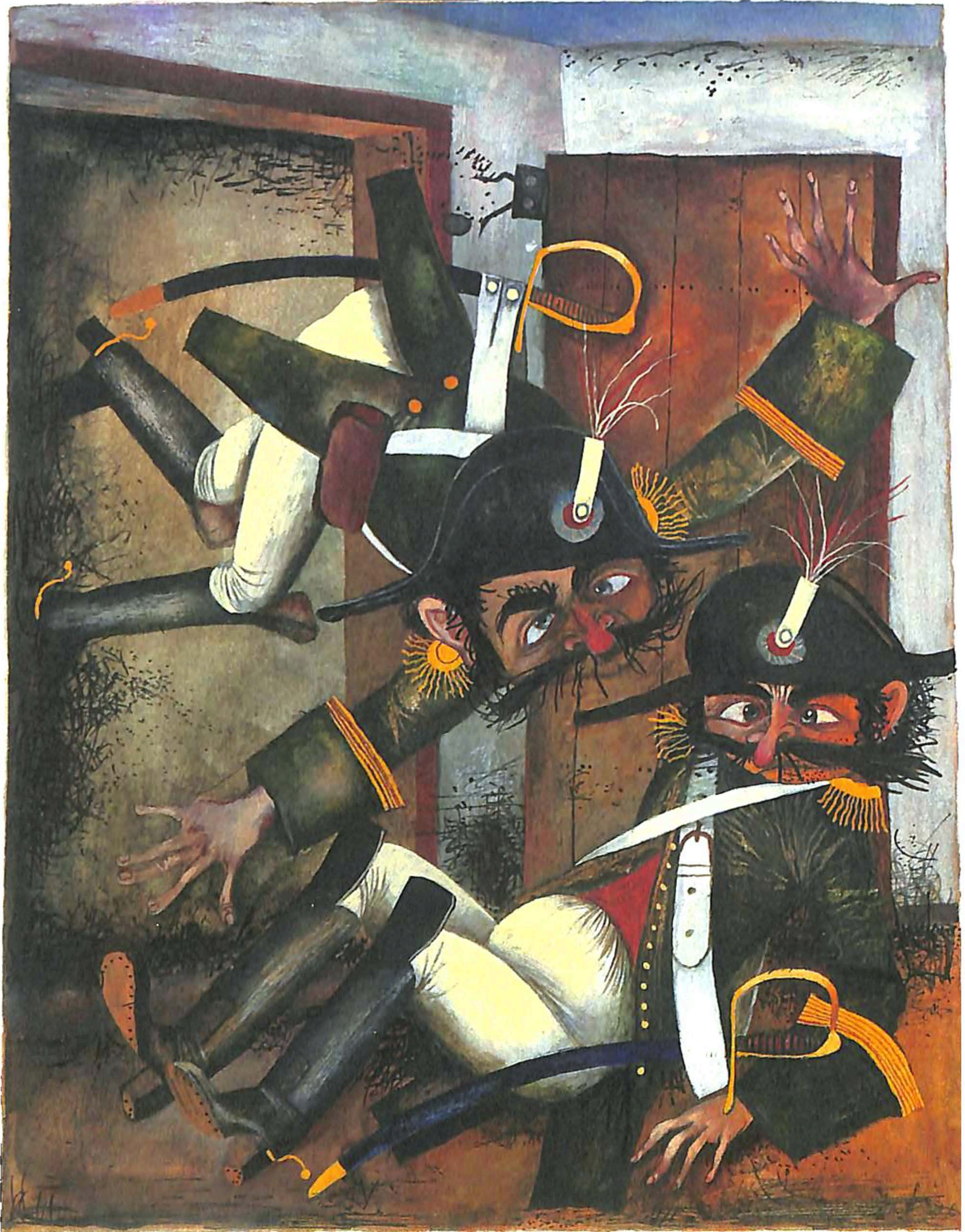
वह ग़ुस्से में पैर पटकता हुआ पुलिसवालों से कहने लगा :

"ताबड़तोड राजा के नाम पर – तोड़ दो इस मनहूस दरवाज़े को!"

पुलिसवालों में पहले ही किसी की नाक टूट गयी थी तो किसी के सिर पर गुमटा निकल आया था।

"नहीं, यह काम बहुत भारी है," उन्होंने कहा और कोतवाल के पास चल पड़े यह बताने के लिए कि क़ानून के नाम पर जो ज़रूरी था, वह सब उन्होंने किया, लेकिन बूढ़े कार्लो की मदद शायद ख़ुद शैतान ही कर रहा था, क्योंकि वह दीवार के उस पार ओझल हो गया था।

कारबास बाराबास खीझकर अपनी दाढ़ी नोचने लगा, कोठरी में ही लुढ़क-पुढ़ककर चीख़ने-चिल्लाने लगा।





रहस्यमय दरवाज़े के पीछे क्या मिला

इधर कारावास बाराबास पागलों की तरह लुढ़क-पुढ़क रहा था, अपनी दाढ़ी नोचे जा रहा था, उधर आगे-आगे बुरातीनो, उसके पीछे-पीछे मलवीना, पियेरो, आर्तेमोन और सबसे पीछे पापा कार्लो, तहख़ाने में पत्थर की ऊंची-ऊंची सीढ़ियों से उतर रहे थे।

पापा कार्लो के हाथ में एक अधजली मोमबत्ती थी। उसकी कंपकंपाती लौ का प्रकाश आर्तेमोन के झबरे बालोंवाले सिर या पियेरो के फैले हुए हाथ की बड़ी-बड़ी परछाइयां बना रहा था, लेकिन सीढ़ियां अन्धेरे में किधर ले जा रही थीं, यह नहीं दिख रहा था।

मलवीना डर के मारे रो न पड़े इसलिए बार-बार अपने कान में चिकोटी काटे जा रही थी।

पियेरो हमेशा की तरह बेवक़्त अपनी ऊलजलूल कविता बुदबुदाने लगा:

"दीवार पर थिरकते साये,
मुझे कभी न डरायें!
भले ही सीढ़ी टेढ़ी हो,
अन्धकार से भरी पड़ी हो,
तहख़ाने का यह रास्ता
लिये जा रहा अलबत्ता..."

बुरातीनो सबको पीछे छोड़ता हुआ बहुत आगे निकल चुका था, उसकी सफ़ेद टोपी नीचे मुश्किल से दिख रही थी।

अचानक वहां किसी की फुफकार सुनायी दी, कोई कूदा, फिर लुढ़कने लगा। चीख़-पुकार सुनायी दी:

"बचाओ, बचाओ!"

क्षण भर के लिए आर्तेमोन अपने ज़ख़्मों को भूलकर मलवीना और पियेरो को धकेलता हुआ काले बवण्डर की तरह नीचे सीढ़ियों पर दौड़ पड़ा।

उसके दांत किटकिटाये और कोई जीव ज़ोर से कराह उठा।

फिर पहले की तरह सन्नाटा छा गया। सिर्फ़ मलवीना का दिल अभी भी घड़ी की तरह तेज़ी से टिक-टिक करता हुआ धड़क रहा था।

अचानक रोशनी की एक चौड़ी सी धारी सीढ़ियों पर पड़ी। पापा कार्लो की मोमबत्ती का प्रकाश फीका पड़ गया।

"देखिये, देखिये, जल्दी!" बुरातीनो ने ज़ोर से पुकारा।

मलवीना उल्टे पैर एक-एक सीढ़ी जल्दी-जल्दी उतरती जा रही थी। उसके पीछे उछलता-



कूदता हुआ पियेरो उतरने लगा। अन्त में झुका हुआ कार्लो चल रहा था – जिसके लकड़ी के जूते पैरों से बार-बार निकल जाते थे।

नीचे घुमावदार सीढ़ी के मुहाने पर आर्तेमोन बैठा था। उसके पैरों के पास चूहा खुटरखुटर मरा पड़ा था।

बुरातीनो अपने दोनों हाथों से उस सड़े-गले नमदे के परदे को उठा रहा था जो दीवार में बने एक सूराख को ढंके हुए था। सूराख से नीला प्रकाश भीतर आ रहा था।

सूराख से गुज़रते वक़्त उन्होंने देखा कि यह चमकते सूर्य का प्रकाश है। यह रोशनी कमरे की मेहराबदार छत पर बने गोलाकार रोशनदान से आ रही थी।

थिरकते धूल कणोंवाले किरण-पुंज से पीले संगमरमर का गोलाकार कमरा जगमगा रहा था। उसके बीचोंबीच एक बहुत सुन्दर कठपुतली थियेटर बना हुआ था। रंगमंच के परदे पर बिजली कड़कने की आड़ी-तिरछी सुनहरी रेखाएं बनी हुई थीं।

परदे के अगल-बगल दो चौकोर मीनारें इस ख़ूबसूरती से सजायी गयी थीं, जैसे उन्हें छोटी-छोटी ईंटों से बनाया गया हो। उन मीनारों के हरी टीनवाले गुम्बद चमचमा रहे थे।

बायीं मीनार पर घड़ी लगी हुई थी जिसकी सुइयां कांसे की बनी हुई थीं। डायल पर हर अंक के सामने हंसते-खिलखिलाते बच्चों के चेहरे अंकित थे।

दायीं मीनार पर रंग-बिरंगे शीशेवाली गोल-गोल खिड़की बनी हुई थी।

इस खिड़की के ठीक ऊपर हरी चमकीली छत पर बोलनेवाला झींगुर बैठा आराम कर रहा था। जब वे सभी आश्चर्य से मुंह बाए इस अद्‌भुत थियेटर को देख रहे थे, तब झींगुर ने धीमे किन्तु स्पष्ट स्वर में कहा :

"देखो, बुरातीनो, मैंने पहले ही तुम्हें सचेत कर दिया था कि तुम्हारी ज़िन्दगी में बड़े-बड़े ख़तरनाक मोड़ और तरह-तरह की मुसीबतें आयेंगी। यह तो अच्छा हुआ कि तुमने उन मुसीबतों से छुटकारा पा लिया। लेकिन इसका अन्त बुरा भी हो सकता था..."

झींगुर बुढ़ापे के कारण धीरे-धीरे बोल रहा था और वह नाराज़ भी था, क्योंकि उसे सिर पर हथौड़ी की चोट अब भी याद थी। अपनी सौ साल की उम्र और दयालु स्वभाव के बावजूद वह उस अपमान को न भूल पाया था। इसलिए अधिक कुछ कहे-सुने बिना उसने अपनी मूंछें हिलायीं, जैसे कि उनसे धूल झाड़ी हो और धीरे से किसी सुनसान दरार की ओर बढ़ गया।

तब पापा कार्लो ने कहा :

"मैंने तो सोचा था यहां हमें सोने-चांदी का ढेर मिलेगा, पर यहां तो पुराने खिलौने ही हाथ लगे।"

वह मीनारवाली घड़ी के पास आया, फिर उसने डायल को अपने नाखून से ठकठकाया। और चूंकि घड़ी के बगल में खूंटी पर तांबे की चाबी टंगी हुई थी, उसने उसे उतारा और घड़ी में चाबी भर दी...

घड़ी ज़ोर से टिक-टिक करती हुई चल पड़ी, उसके डायल पर सूइयां घूमने लगीं। घड़ी की वड़ी सूई बारह पर जा पहुंची और छोटी छह पर। घड़ी के अन्दर कुछ घुरघुर, कुछ खड़खड़ हुई और उसने टनाकेदार आवाज़ के साथ छह बजाये...

स्वागतम, स्वागतम, स्वागतम,
स्वागतम, स्वागतम, स्वागतम!

तुरन्त ही दायीं मीनार पर रंग-बिरंगे शीशोंवाली खिड़की खुली, चाबी की चिड़िया फुदककर बाहर आयी और उसने अपने पंख फड़फड़ाये, फिर लगातार छह बार चहकी।

चिड़िया अपनी खिड़की में वापस लौट गयी। खिड़की बन्द होने की आवाज़ सुनायी दी और मोहक संगीत गूंजने लगा। परदा ऊपर उठा...

नन्हे-मुन्नों में से किसी ने भी ऐसी ख़ूबसूरत सजावट न देखी थी, यहां तक कि पापा कार्लो के लिए भी यह सब अजूबा था।

सामने स्टेज पर बगीचा था। छोटे-छोटे पेड़ों पर सुनहरी और रुपहली चमकीली पत्तियां झिलमिला रही थीं। वृक्षों पर नन्ही-नन्ही मैनाएं चहचहा रही थीं। एक पेड़ पर सेब दिख रहे थे, हर सेब मटर के दाने से बड़ा नहीं था। पेड़ों के नीचे मोर चहलक़दमी कर रहे थे और पंजों के बल उठकर चोंच मार-मारकर सेब का ज़ायका ले रहे थे। घास के मैदान में बकरी के दो बच्चे उछलते-कूदते सींग भिड़ाये लड़ रहे थे। यत्र-तत्र तितलियां उड़ रही थीं, जिन्हें मुश्किल से देखा जा सकता था।

इस तरह एक मिनट बीता। चिड़ियों का चहकना बन्द हो गया, मोर और बकरी के बच्चे परदे के पीछे कहीं गायब हो गये। पेड़ स्टेज के नीचे रहस्यमय ढंग से छिप गये।

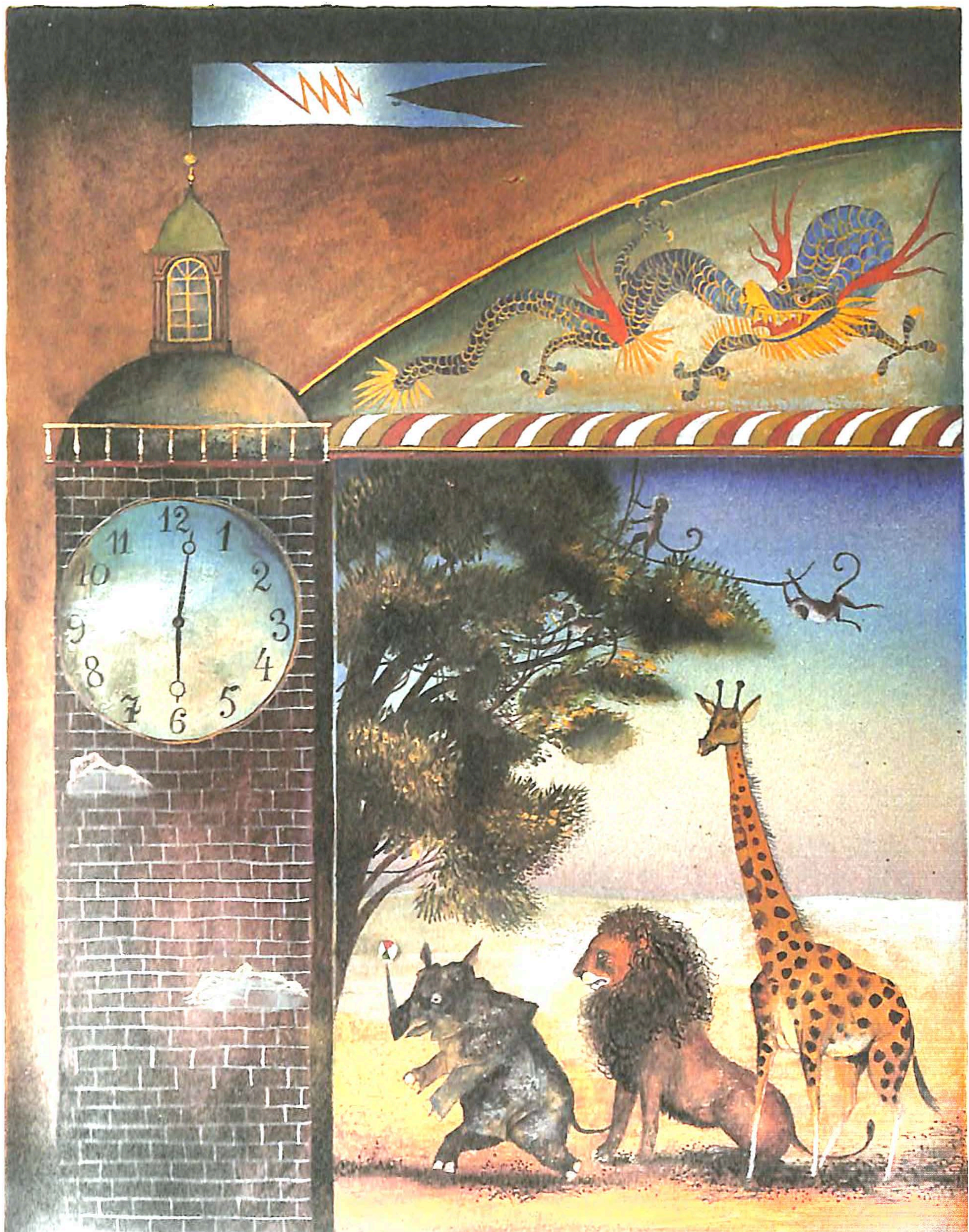
फिर दृश्य बदला। पृष्ठ भाग पर मलमल के बादल छंटने लगे। रेतीले मरुस्थल पर लाल-लाल सूरज दिखलाई पड़ रहा था। स्टेज के दाहिने और बायें किनारे से सर्पाकार लताएं दिखलायी दीं; एक पर तो सचमुच का अजगर लटका हुआ था। दूसरी पर बन्दरों का झुण्ड अपनी दुम पकड़कर इधर-उधर उछल-कूद रहा था। यह दृश्य अफ़्रीका का था।

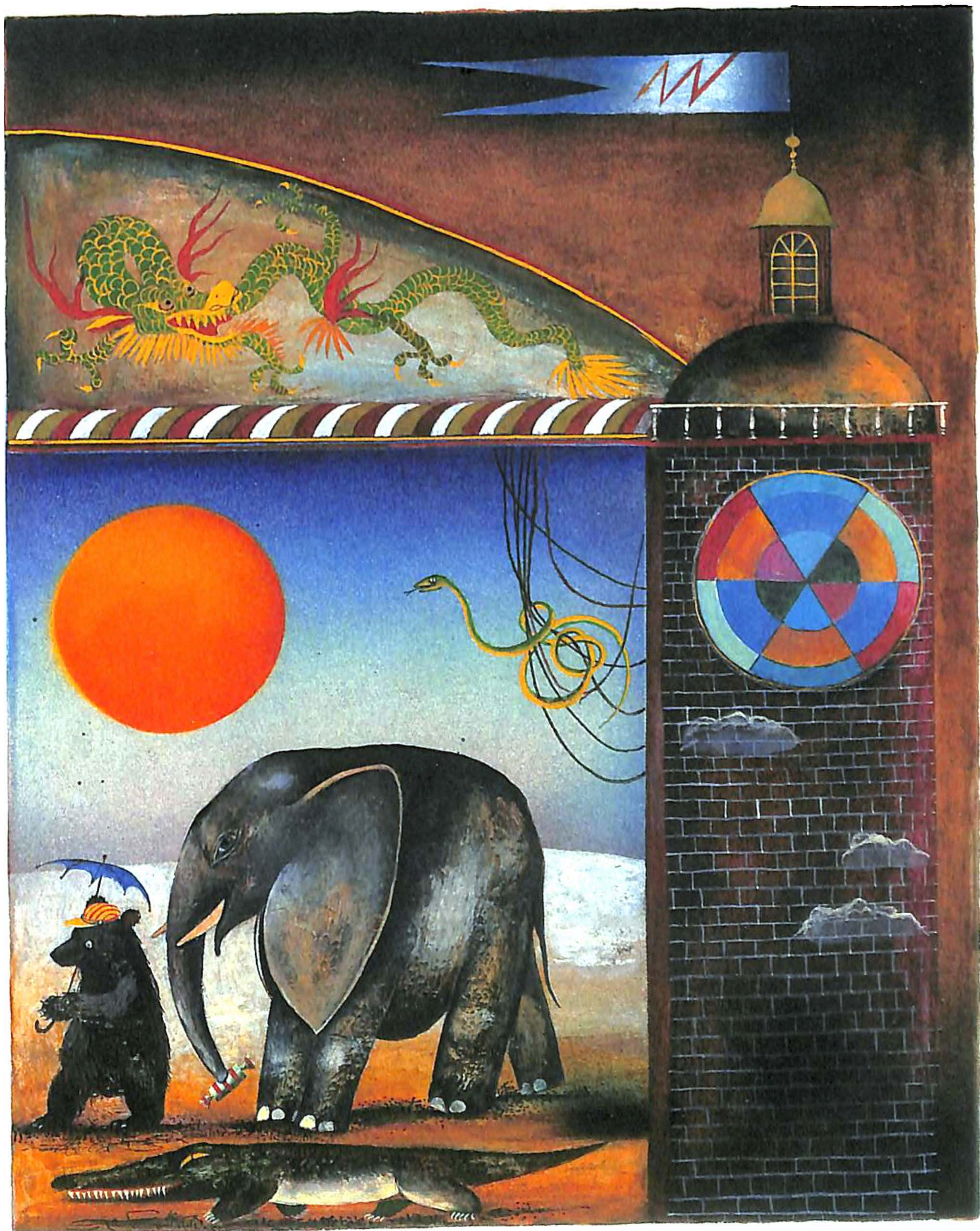
लाल सूरज की रोशनी से चमकती रेगिस्तानी रेत पर जंगली जानवर घूम रहे थे।

तीन छलांगें मारकर अयालवाला शेर तेज़ी से निकल गया। वैसे तो यह बिल्ली से बड़ा न था, लेकिन डरावना ज़रूर था। झूमता-झामता, पिछले पैरों पर डगमगाता मख़मली भालू छाता लगाये हुए सामने से निकल गया।

रेंगता हुआ घिनौना घड़ियाल भी आगे बढ़ गया, अपनी छोटी-छोटी निकम्मी आंखों से वह दयालु बनने का ढोंग रच रहा था। लेकिन आर्तेमोन ने उस पर विश्वास नहीं किया और तुरन्त गुर्राने लगा।

फिर सामने से उचकता, हिलता-डुलता गैण्डा निकल गया, उसके ख़ूब पैने सींग पर रबर की बड़ी सी गेंद पहना दी गयी थी, ताकि कहीं गलती से किसी को सींग न मार दे।





एक जिराफ़ सामने से दौड़ता हुआ गुज़रा। लगता था कि यह कोई सींगवाला धारीदार ऊंट है, जिसने गर्दन तान रखी है।

फिर बच्चों के दोस्त हाथी की बारी आयी – बुद्धिमान, कोमल स्वभाववाला हाथी झूमता-झामता अपनी सूंड़ हिला रहा था, सूंड़ में वह एक टाफ़ी पकड़े था।

सबसे पीछे बेहद गंदा जंगली कुत्ता यानी कि सियार भागता दिखलायी दिया। आर्तेमोन उस पर भूंकता हुआ झपटा, बड़ी मुश्किल से पापा कार्लो दुम पकड़कर उसे स्टेज से नीचे खींच पाये।

तमाशे के सारे जानवर एक-एक कर निकल चुके थे। सूर्य अस्त हो गया था। अन्धेरे में कोई चीज़ नीचे उतारी जा रही थी। कोई सामान अग़ल-बग़ल से मंच पर आ रहा था। फिर से संगीत लहरी गूंजने लगी।

सड़क की दूधिया बत्तियां जल उठीं। स्टेज पर शहरी चौराहे का दृश्य दिखाया जा रहा था। घरों के दरवाज़े खुले, लोग खिलौनेवाली ट्रामगाड़ी पर सवार हो गये। कंडक्टर ने सीटी बजायी, ड्राइवर ने ट्राम स्टार्ट करने के लिए हैण्डिल घुमाया। एक लड़का चलती ट्राम के पीछे लटक गया, पुलिसवाले ने सीटी बजायी, ट्रामगाड़ी ऊंची-ऊंची इमारतों के बीच बगल की सड़क पर मुड़कर ओझल हो गयी।

नन्हा-मुन्ना साइकिल सवार सामने से निकला। साइकिल के पहिये नन्ही-नन्ही तश्तरियों के बराबर थे। फिर अख़बारवाला भागता हुआ आया। अख़बार भी क्या था? एक ख़ास तरह का नन्हा-मुन्ना अख़बार, जैसे जेबी डायरी का चौहरा पन्ना।

आइसक्रीमवाला अपनी गाड़ी ठेलता हुआ चौराहा पार कर रहा था। बरामदों में बाहर निकलकर लड़कियों ने आइसक्रीमवाले को हाथ हिलाकर बुलाया, उसने आइसक्रीम का ठेला हाथ से ठेलते हुए कहा:

"आज तो एक भी नहीं बची है, अगली बार का इन्तज़ार करो," उसने कहा।

इसी वक़्त परदा गिरा और उस पर पहले की ही भांति बिजली की सुनहरी रेखाएं चमक उठीं।

पापा कार्लो, मलवीना, पियेरो इस अद्वितीय तमाशे को देखकर ठगे से रह गये। बुरातीनो ने मज़े से अपने दोनों हाथ जेब में डाले नाक ऊपर उठायी और शेखी बघारते हुए बोला:

"क्यों, देखा? तो मेरा कीचड़ में डुबकियां लगाना और बूढ़े कछुए से मिलना बेकार नहीं गया... इस थियेटर में अब हम हंसी-मज़ाकवाला एक नाटक पेश करेंगे – पता है कौन सा? उसका नाम होगा: 'सोने की चाबी यानी क़िस्सा बुरातीनो और उसके दोस्तों का'। काराबास बाराबास तो जल-भुनकर रह जायेगा।"

पियेरो ने अपनी मुट्ठी से माथा रगड़ते और दिमाग पर ज़ोर डालते हुए कहा:

"मैं अपनी दमदार कविताओं से भरपूर यह हास्य नाटक ख़ुद लिखूंगा।" मलवीना ने कहा: "मैं टिकट और आइसक्रीम बेचूंगी और अच्छी बच्चियों का अभिनय भी किया करूंगी..."

"ठहरो, लेकिन पढ़ाई कब करोगे?" पापा कार्लो ने पूछा।

सभी ने एकसाथ, एक स्वर में उत्तर दिया:

"हम लोग सुबह पढ़ेंगे ... और शाम को अपने थियेटर में काम करेंगे ..."

"ठीक है, मेरे नन्हे-मुन्नो," पापा कार्लो ने कहा, "और मैं बाजा बजाकर दर्शकों का मन वहलाऊंगा, उन्हें खुश करूंगा। अगर हम इटली में शहर-शहर घूम-घूमकर तमाशे दिखलायेंगे तो मैं घोड़ागाड़ी चलाया करूंगा और मसालेदार गोश्त भी पकाया करूंगा ..."

आर्तेमोन अपना एक कान खड़ा करके सिर घुमाता हुआ सब कुछ सुन रहा था और चमकती आंखों से दोस्तों की ओर देख रहा था, मानो उनसे पूछ रहा हो: "मैं क्या करूंगा?"

बुरातीनो बोला:

"आर्तेमोन के ज़िम्मे हमारे थियेटर का गोदाम रहेगा। कलाकारों के गहने-कपड़े और साज़-सामान की देखभाल करेगा, मैं गोदाम की चाबी उसे ही सौंप दूंगा। इसके अलावा वह चाहे तो परदे के पीछे से तरह-तरह की आवाज़ें निकाल सकता है, जैसे शेर की दहाड़, गैण्डे की पदचाप, घड़ियाल की आवाज़ या फिर ज़ोर-ज़ोर से अपनी दुम हिलाकर आंधी की सायं-सायं पैदा कर सकता है।"

"अरे, बुरातीनो, तुम क्या करोगे?" सबने पूछा। "थियेटर में तुम कौन सा काम संभालोगे?"

"लो, यह भी कोई पूछने की बात है! मैं खुद अपना, यानी बुरातीनो का पार्ट अदा करूंगा और सारी दुनिया में नाम कमाऊंगा!"



और लो, खुल गया नया कठपुतली थियेटर!
पहले दिन का पहला शो

कराबास बाराबास सुलगते अलाव के पास खीझा हुआ बैठा था। गीली लकड़ियां मुश्किल से जल रही थीं। बाहर सड़क पर पानी झमाझम बरस रहा था। उसके कठपुतली थियेटर की छत टपक रही थी। कठपुतलों और कठपुतलियों के हाथ-पांव भीगकर फूल गये थे। रिहर्सल कोई करना नहीं चाहता था, यहां तक कि कोड़े से उनकी खाल खींच लेने की धमकी भी बेअसर रही। नन्हे-मुन्नों ने तीन दिन से खाना नहीं खाया था। उनका भूख से दम निकला जा रहा था और गोदाम में खूंटियों पर टंगे-टंगे वे आपस में फुसफुसाकर बातें कर रहे थे।

सुबह से कराबास बाराबास के कठपुतली थियेटर का एक भी टिकट नहीं बिका था। वैसे भी कराबास के थियेटर में अब रखा ही क्या था? दर्शकों को बोर करनेवाले खेल-तमाशे और भूखे-नंगे कलाकार!

शहरी घण्टाघर की घड़ी ने छह बजाये। कराबास बाराबास उदास मन से धीरे-धीरे भारी क़दम रखता हुआ थियेटर के खाली हॉल में पहुंचा।

"जहन्नुम में जायें ये सारे के सारे दर्शक महानुभाव!" बड़बड़ाता हुआ वह बाहर निकला। बाहर निकलकर उसने एक नज़र सामने डाली, आंखें झपकायीं और उसका मुंह आप से आप ही खुल गया इतना चौड़ा कि उसमें आसानी से एक समूचा कौव्वा घुस जाये।

उसके थियेटर के सामने बड़े से नये तम्बू के क़रीब दर्शकों की लाइन लगी हुई थी। समुद्र की ओर से आती हुई ठण्डी हवा की भी लोग परवाह नहीं कर रहे थे।

प्रवेश द्वार के ऊपर बने मचान पर खूब लम्बी नाकवाला एक नन्हा-मुन्ना लड़का सिर पर फुन्दनेदार टोपी लगाये खड़ा था, वह मुंह में भोंपू लगाये चिल्ला-चिल्लाकर कुछ कहता जा रहा था।

दर्शकों की भीड़ हंसते हुए खुशी-खुशी तालियां बजा रही थी। बहुत से लोग तम्बू के अंदर जा रहे थे।

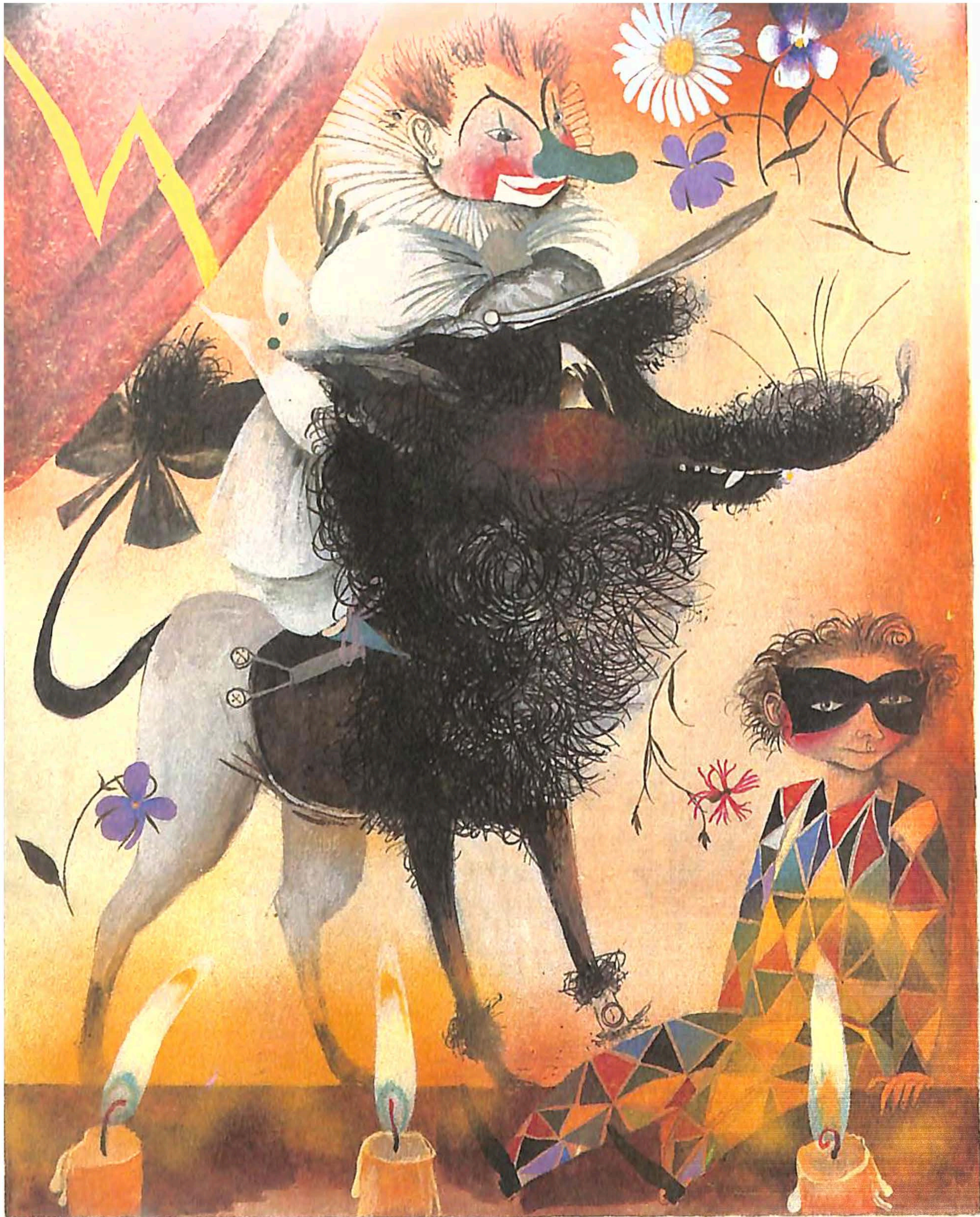
कराबास बाराबास के पास काई की बदबू मारता जोंकमार आ पहुंचा।

"ही-ही-ही," उसने खीसें निपोरीं और उसका सारा चेहरा झुर्रियों से भर गया, "जोंक के धन्धे में अब धरा ही क्या है? वहां जाकर उन लोगों से बात करना चाहता हूं," जोंकमार ने तिरपाल के नये तम्बू की ओर इशारा किया, "थियेटर में बत्ती जलाने या झाड़ू लगाने की नौकरी ही दे दें।"

"किसका है यह कमबख़्त थियेटर? कहां से आ टपका यह?" कराबास बाराबास ज़ोर से गरजा।

"खुद कठपुतलों और कठपुतलियों ने मिलकर 'बिजली' नाम का एक नया थियेटर खोला


कठपुतली थियेटर
बिजली
टिकट घर





है, वे खुद अपने थियेटर के लिए कविताओंवाले नाटक लिखते हैं और अभिनय भी खुद ही करते हैं।"

कारावास बारावास दांत पीसता हुआ अपनी दाढ़ी नोचने लगा और तिरपालवाले नये कठपुतली थियेटर की ओर बढ़ चला।

उसके प्रवेश द्वार पर मचान से बुरातीनो ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगाये जा रहा था:

"नये थियेटर का उद्घाटन, पहला दिन, पहला शो! काठ के नन्हे-मुन्नों की बहादुरी के सच्चे कारनामे। दुश्मनों को धूल चटानेवाले दिलेर कठपुतलों और कठपुतलियों की हिम्मत और हाज़िरजवाबी का एक बेहद मनोरंजक ड्रामा, ठहाकों और कहकहों से भरपूर!"

थियेटर के प्रवेश द्वार पर कांच के बूथ में नीले बालों पर खूबसूरत रिबन बांधे हुए मलवीना जल्दी-जल्दी टिकट बेचती जा रही थी।

पापा कार्लो नयी मखमली जैकेट पहने हुए फेरीवाले बाजे का हैंडिल घुमाते जा रहे थे और दर्शकों को आंखें मारते जा रहे थे।

आर्तेमोन लोमड़ी अलीसा की दुम पकड़कर उसे तम्बू के बाहर खींच रहा था। वह बिना टिकट अन्दर घुसी आ रही थी।

यूं तो बिल्ला बज़ीलिओ भी बेटिकट था, पर पकड़े जाने के डर से वह पहले ही निकल भागा और बरसते पानी में पेड़ पर जा बैठा। वह सिर झुकाये गुस्से से तमतमाया हुआ बैठा था।

बुरातीनो भोंपू में मुंह सटाकर, गाल फुलाकर भारी आवाज़ में बोला:

"अब हमारे थियेटर का पहला शो शुरू होने जा रहा है!"

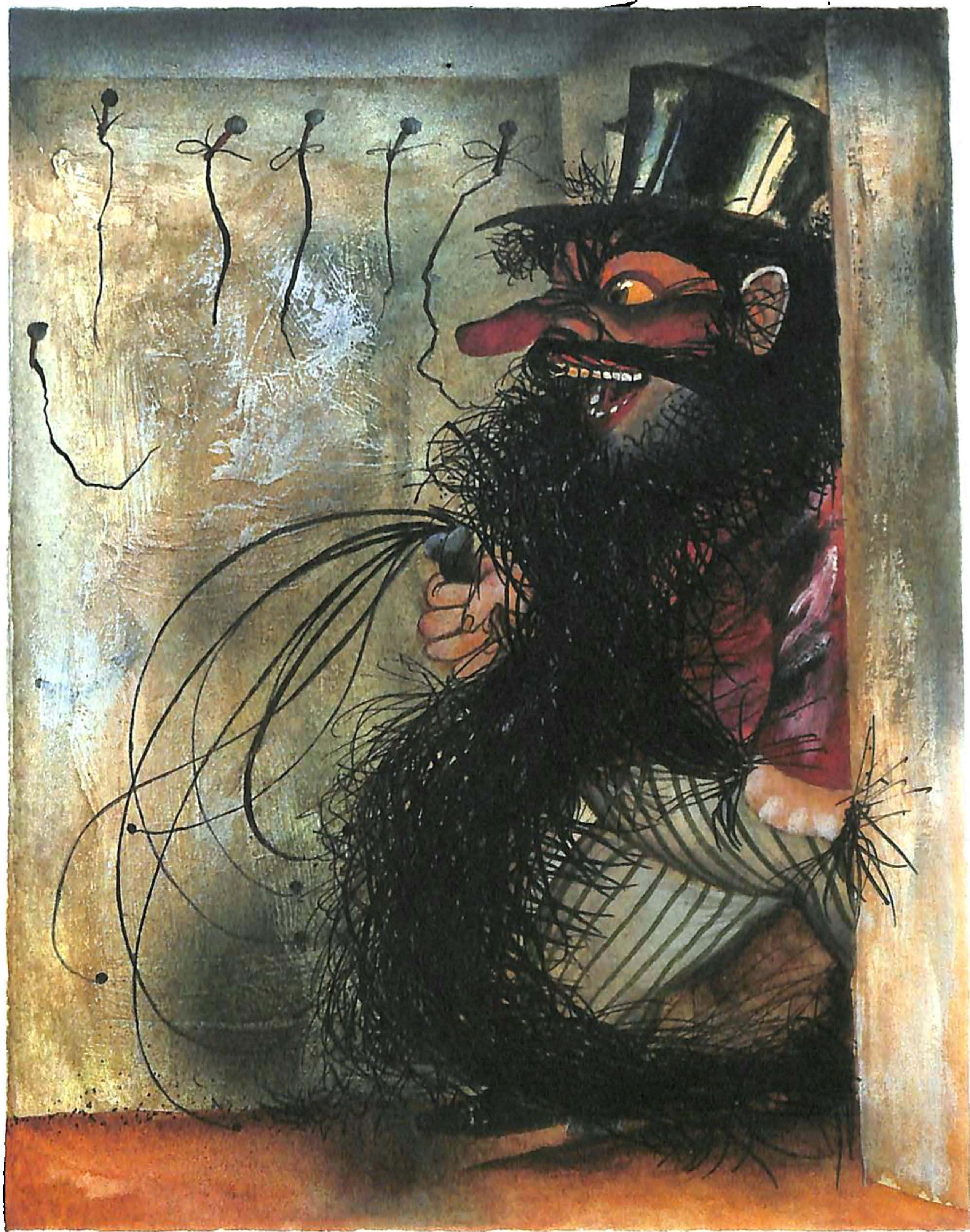
और वह सीढ़ी से उतरता, भागता हुआ नीचे जा पहुंचा, ताकि पहले दृश्य में वह अभिनय कर सके, जिसमें दिखलाया गया है कि किस प्रकार गरीब पापा कार्लो लकड़ी के कुन्दे को छीलकर एक कठपुतले को गढ़ता है। तब उसे क्या पता था कि यह कठपुतला उसकी क़िस्मत ही बदलकर रख देगा।

धीरे-धीरे रेंगता हुआ बूढ़ा कछुआ कूबर भी सबसे आखिर में थियेटर आ पहुंचा। वह अपने मुंह में विशेष अतिथियोंवाला चर्मपत्र का एक टिकट दबाये हुए था। टिकट के चारों कोनों पर सुनहरे बेल-बूटे चमचमा रहे थे।

नये थियेटर का पहला शो प्रारम्भ हो गया। कारावास बारावास मुंह लटकाये हुए अपने खाली थियेटर में वापस लौट आया। उसने अपना सतमुंहा हण्टर निकाला और फिर कोठरी का दरवाज़ा खोला:

"ठहरो बदमाशो, सारी मटरगश्ती झाड़े देता हूं!" वह गरजा। "अभी खाल उधेड़ी नहीं कि सब सीख जाओगे!"

फिर उसने सटाक से हण्टर फटकारा। लेकिन सब तरफ़ खामोशी छायी रही। कोठरी तो पहले ही खाली हो चुकी थी। खूंटियों पर सिर्फ़ रस्सी के टुकड़े लटक रहे थे।



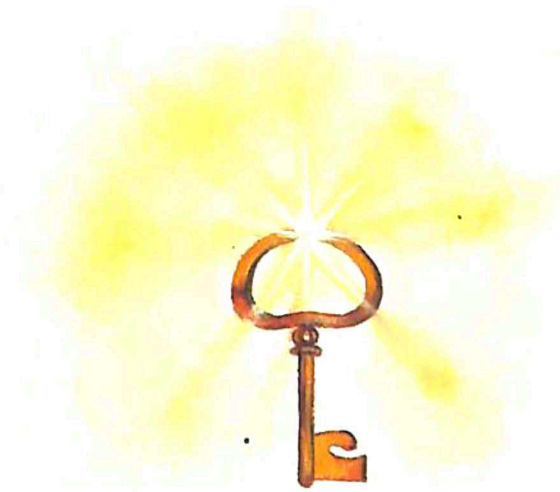


सभी कठपुतले और कठपुतलियां – आर्लेकिन, काले नकाबवाली लड़कियां, सितारेदार नुकीली टोपियोंवाले ठिठोलिये, खीरे जैसी मोटी नाकवाले कुवड़े और कुत्ते – सभी कारावास वारावास के थियेटर से निकल भागे थे।

वह एक भयानक दहाड़ के साथ थियेटर से वाहर निकला। देखता क्या है कि उसके उजड़े थियेटर के बचे-खुचे कलाकार भी उसे छोड़कर नये जगमगाते हुए थियेटर में जा रहे हैं, जहां से इस समय मधुर संगीत, दर्शकों के कहकहे, ठहाके और उनकी तालियों की गड़-गड़ाहट बार-बार गूंज रही थी।

काराबास बाराबास रूई के बने बटनदार आंखोंवाले एक कुत्ते को ही किसी तरह पकड़ पाया। लेकिन वह उसे अभी अपने चंगुल में जकड़ ही पाया था कि आर्तेमोन ने उस पर घातक हमला कर दिया, उस कुत्ते को छुड़ा लिया और तिरपालवाले तम्बू में जा पहुंचा, जहां इस वक्त भूख से बेहाल कठपुतली कलाकारों के लिए खाना बन रहा था, देगची में भेड़ का गरम-गरम मसालेदार गोश्त पक रहा था।

काराबास बाराबास बरसात में भीगता हुआ एक डबरे में बैठा रो रहा था।



अनुक्रम

नन्हे पाठकों से 5
वढ़ई जूज़ेपे को लकड़ी का एक कुन्दा मिला, जो आदमी की तरह मिनमिनाता था 7
जूज़ेपे ने बोलनेवाला कुन्दा अपने मित्र कार्लो को भेंट किया . 10
कार्लो ने कठपुतला तराशा और नाम रखा बुरातीनो 13
वोलनेवाले भींगुर ने बुरातीनो को बुद्धिमानी की एक सलाह दी . . . 18
बुरातीनो अपने मनचलेपन के कारण मरते-मरते वचा। पापा कार्लो ने उसे रंगीन कागज़ों की पोशाक पहनायी और उसके लिए ककहरा खरीदा 21
बुरातीनो ने ककहरा बेचकर कठपुतलियों के तमाशे का टिकट खरीदा . 28
तमाशे के दौरान कठपुतलियों ने बुरातीनो को पहचाना 32
सिनियोर कारावास वारावास ने बुरातीनो को आग में जलाने के वजाय उसे सोने के पांच सिक्के देकर घर भेजा 39
घर जाते समय बुरातीनो की भिखमंगे बिल्ले वज़ीलिओ और लोमड़ी अलीसा से मुलाक़ात . 43
"तीन मछली" ढावे में दावत . 47
बुरातीनो पर डाकुओं का हमला . . 51
डाकुओं ने बुरातीनो को पेड़ से लटकाया . 57
नीलकेशिनी ने बुरातीनो की जान बचायी . . 60
नीलकेशिनी ने बुरातीनो को शिष्टाचार सिखाना चाहा . 67
बुरातीनो मूरखनगरी में पहुंचा 75
पुलिस ने बुरातीनो को पकड़ा और अपनी सफ़ाई में कुछ वोलने न दिया . 82

बुरातीनो का तालाब के निवासियों से परिचय, सोने के सिक्कों की चोरी का रहस्य खुला, बूढ़े कछुए ने सोने की चाबी दी 86
बुरातीनो का मूर्खों के देश से निकल भागना और दुख के साथी से मिलना 92
पियेरो की दास्तान: कैसे वह ख़रगोश की पीठ पर सवार होकर मूरखनगरी आ पहुंचा 95
बुरातीनो और पियेरो मलवीना के पास आये, पर तीनों को आर्तेमोन समेत भागना पड़ा . . . 103
जंगल के किनारे घमासान लड़ाई . 108
सभी दोस्त एक गुफा में पहुंचे 118
बुरातीनो ने अपनी जान जोखिम में डालकर काराबास बाराबास से सोने की चाबी का रहस्य जान लेने का निश्चय किया . 125
सोने की चाबी का रहस्य खुला 129
बुरातीनो पहली बार हतोत्साह हुआ, लेकिन जल्द ही सब ठीक हो गया . 135
पापा कार्लो, मलवीना, पियेरो और आर्तेमोन को लेकर बुरातीनो घर लौटा 144
काराबास बाराबास द्वारा सीढ़ियों के नीचेवाली कोठरी में जबरन घुसने का प्रयास 151
रहस्यमय दरवाज़े के पीछे क्या मिला 156
और लो, खुल गया नया कठपुतली थियेटर! पहले दिन का पहला शो . 164

प्यारे बच्चो,

बुरातीनो की यह कहानी कैसी लगी तुम्हें? अच्छी है न? हमें अपनी राय लिखना। इसे जानकर हमें बड़ी खुशी होगी और हम तुम्हारी पसंद की नयी-नयी किताबें छापेंगे।

हमारा पता है:

रादुगा प्रकाशन

१७, जूबोव्स्की बुलवार, मास्को, सोवियत संघ।









ISBN 5-05-0021